Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरहद के पार

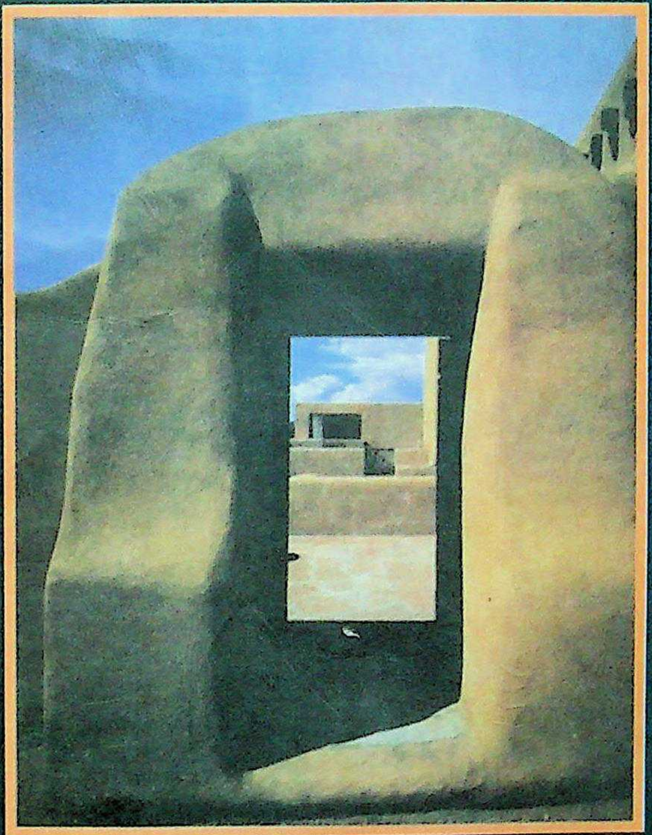

समकालीन पाकिस्तानी कहानी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक इतिहास, एक भूगोल और तहज़ीब की साझी पर हवाएं कुछ ऐसी चलीं कि एक सरहद ज़मीन पर ही नहीं खिंची, उसने इतिहास और दिलों को भी तक़सीम कर दिया. दरियाओं का पानी बंट गया और मिट्टी के नाम बदल गए. भारतीय उपमहाद्वीप का विभाजन मानव इतिहास की भयावह त्रासदियों में से एक था. दोनों मुल्कों के आसमानों पर उसकी छायाएं अब भी मंडराती हैं. सरहद के उस पार की आवाज़ें इन कहानियों में गूंज रही हैं- ऐसी आवाज़ें जिनमें आवाम के दर्द की दास्तान है.

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc 4896
Dated 26.12.2023

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"....चेहरे उसकी आँखों के सामने तैरने लगे. दोस्त और दुश्मन चेहरे. अजनबी और शनासा आवाज़ें. नरजिस को उन अजनबी आवाज़ों पर अचानक प्यार आया, जो उसका आख़िरी सफ़र आसान करने के लिए अपनी नींदें बर्बाद कर रहे थे. एक हफ़्ता पहले तक वो उन आवाज़ों के साथ थी. ये आवाज़ें उसे कुछ भी तो नहीं समझती थीं, उसके बारे में कुछ भी तो नहीं जानतीं..."

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरहद के पार

समकालीन पाकिस्तानी कथा-साहित्य से एक चयन

संपादन
अली अहमद फातमी
ज्ञानरंजन

संवाद प्रकाशन
मुंबई : मेरठ

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर्वाधिकार
लेखकों व अनुवादकों की ओर
से पहल के पास सुरक्षित

प्रकाशक : संवाद प्रकाशन
आई– 499, शास्त्रीनगर, मेरठ– 250 004 (उ. प्र.)
मुंबई कार्यालय : ए–4, ईडन रोज़, वृंदावन,
एवरशाइन सिटी, वसई रोड, (पूर्व), पिन– 401 208

मुद्रक :
राज ऑफसेट, मेरठ (पाठ्य भाग), न्यू हर्षा प्रोसेस, दिल्ली (आवरण)
आवरण चित्र : परिकल्पना प्रकाशन के सौजन्य से
आवरण डिजाइन : संवाद कला विभाग

•

पहला संस्करण : फरवरी, 2002
ISBN : 81-87524-19-7

Sarhad ke Par
(Urdu Stories by Pakistani Writers)
Published by *Samvad Prakashan*, I – 499, Shastrinagar, Meerut – 250 004, INDIA.
First Edition : 2002

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

1. तितलियां ढूंढ़ने वाली / ज़ाहिदा हिना / 7
2. नज़र का धोखा / मो. मंशा याद / 16
3. आदर्श की मौत / अज़रा असग़र / 23
4. झोली / सादिक हुसैन / 28
5. एक ख्वाब के तार / जमील जुबेरी / 34
6. शाह दूल्हा के चूहे / मंसूर कैसर / 41
7. गोधरा कैंप / नईम आरवी / 47
8. ग्रेटमैन / मिर्ज़ा अदीब / 55
9. समुंदर मुझे बुलाता है / रशीद अमजद / 65
10. जुलूस / रहमान मुज़निब / 68
11. अपरान्ह का पतझड़ / रशीद अमज़द / 79
12. अज़ान / नासिर बुगदादी / 83
13. चीस्तान / ए. खैयाम / 87
14. मुझे खाल खिंच जाने का डर है / अमर जलील / 92
15. रब न करे / फ़रीदा हफ़ीज / 97
16. गाय / अनवर सज़्ज़ाद / 101

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़ाहिदा हिना

तितलियां ढूंढ़ने वाली

नरजिस ने सफ़ेद सर वाली अम्मा को देखा, जो छड़दार दरवाज़े की दूसरी तरफ़ बैठी थी, और जिनकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी हुई थी. भैया सर झुकाए हुए था, उसका चेहरा नरजिस को नज़र नहीं आ रहा था.

महेदी ताली बजाकर ज़ोर से हंसा, फ़िर उसने छड़ों के बीच से अपने दोनों हाथ बाहर निकाल दिए. ''मम्मा! मेरी टॉफ़ी,'' वो चहका. तब भैया ने अपना झुका हुआ सर उठाया और महेदी के दोनों हाथ थाम लिए. नमकीन पानी की बूंदें महेदी के धूल भरे हाथों को धोने की नाकाम कोशिश करने लगीं.

नरजिस ने दूसरे अच्छे और बुरे मंज़रों की तरह इस मंज़र को भी अपने अंदर रख लिया. उसके दिल को तसल्ली ही हुई. अम्मा नहीं रहेंगी, तब भी महेदी के सर पर हाथ रखने वाला तो रहेगा. भैया उसे जी-जान से चाहता था. वो यक़ीनन महेदी को भी अज़ीज़ रखेगा. भैया ने रहम की अर्ज़ी पर दस्तख़त करवाने के लिए कैसी-कैसी विनती-मिन्नतें न की थी, लेकिन नरजिस के लिए यही मुमकिन न था. अपील का समय गुज़र गया और अब वो अकेली मौत के सामने थी.

अम्मा उसका हाथ यूं थामे हुए थीं, जैसे तैराक डूबने वाले का हाथ थामते हैं. इस स्पर्श में बेबसी थी, जुदाई थी, ढेर सारा ग़म था. ये स्पर्श बाहर की दुनिया से उसका आख़िरी ताल्लुक़ था. वो दुनिया, जो ख़ूबसूरती और बदसूरती से, अच्छे और बुरों से, प्यार और नफ़रत से भरी हुई है.

महेदी खिलखिलाता रहा. भैया से बातें करता रहा. कभी दो क्षणों के बीच से अपना नन्हा-सा चेहरा निकाल कर मम्मा का चेहरा चूमता रहा, और कभी हाथ बढ़ा कर नन्ना के सफ़ेद बालों से उलझता रहा.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अम्मा! इसी बात पर खुश हो लो, कि महेदी अब आज़ाद हो जाएगा. इसने छड़ों, ज़ंजीरों, हथकड़ियों और संगीनों के अलावा अभी देखा भी क्या है. वो यहीं पैदा हुआ और यही बैरकें उसकी कुल दुनिया हैं. अब वो स्कूल जाएगा, बाज़ार जाएगा, पार्क में खेलेगा. भैया इसे झूले पर ज़रूर बिठाना."

"आपा तुम्हें खुदा रसूल का वास्ता-- चुप रहो !" भैया बकने लगा, और वो ख़ामोश हो गई. वो अम्मा और भैया का दुख-दर्द समझती थी, लेकिन उन्हें ये नहीं समझा सकती थी कि कभी-कभी इंसान अपने लिए मौत इसलिए चुनता है कि दूसरे ज़िंदा रह सकें. मौत के प्याले में जब तक ज़िंदगी के सिक्के न डाले जाएं, आदर्श हाथ नहीं आते.

वो और हुसैन एक साथ ही गिरफ़्तार हुए थे, फ़िर मालूम हुआ कि तफ़्तीश के दौरान हुसैन ने खुदकुशी कर ली. वो जानती थी कि क़ातिल, क़त्ल को खुदकुशी ही कहते हैं. हुसैन पर से उसका यक़ीन एक पल के लिए भी नहीं हटा. वो भी, उसी की तरह ज़मीर का क़ैदी था. और ज़मीर के क़ैदी खुदकशी नहीं करते, रहम की भीख नहीं मांगते.

आख़िरी मुलाक़ात का समय ख़त्म हुआ तो, अम्मा बेहोश होकर गिर पड़ीं, भैया छड़ों से चिपट गया. वो उसका माथा चूम रहा था, उसके हाथों को प्यार कर रहा था, उसके बालों को छू रहा था.

फ़िर वे लोग चले गए. नहीं, वे लोग गए नहीं, ले जाए गए. नरजिस का कितना जी चाहा कि एक बार, आख़िरी बार भैया को सीने से लगा ले, लेकिन ये मुमकिन न था. जेल के क़ानून इंसानों के बनाए थे. उनसे इंसानी रिश्तों और जज़्बात का ख़्याल बेकार था.

मम्मा चला गया तो महेदी रोने लगा. वो वहां जाना चाहता था, जहां की कहानियां अम्मी ने सुनाई थीं. लेकिन अम्मी तो उसे कहीं भी नहीं जाने देती थीं.

"कल चले जाना--मम्मा कल तुम्हें ले जाएंगे." नरजिस महेदी के गाल चूमने लगी.

वार्डन मरियम ने मां और बेटे पर एक नज़र डाली और सर झुका लिया. ये कैसी औरत थी, जिसने सज़ा-ए-मौत के खिलाफ़ रहम की

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अर्ज़ी नहीं दी थी. जिसने 'फांसी घाट' पहुंच कर एक आंसू नहीं बहाया था. चीखें नहीं मारी थीं. ख़ुदा से लेकर जेलर तक किसी को गालियां नहीं दी थीं.

ये अजीब औरत थी कि जब उसे क़ुरान दिया गया तो उसने उसे आंखों से लगाकर एक तरफ़ रख दिया और अपने बेटे को चूमती रही, मौलवी साहब ने आकर उसे नमाज़ पढ़ने की, ख़ुदा की सरकार से माफ़ी मांगने की सलाह दी तो वो मुस्कराती रही. मौलवी साहब के जाने के बाद उसने 'जाए नमाज़' अपने तकिए ने नीचे रख दी, फ़िर तकिए पर सर रखकर लेट गई, और अपने बेटे को कहानी सुनाने लगी.

जनाना वार्ड कैसी-कैसी मुज़रिम और मुलज़िम महिलाओं से भरा हुआ था. लेकिन नरजिस उन सबको अपने आप में से नहीं लगती थीं. पिछले चार बरसों में उन बुरी औरतों ने उसे बहुत अच्छी तरह रखा था. वो उन सबकी समझ से परे थी, इसलिए वो उससे प्यार करती थी, उसका ऐहतराम करती थी, उससे डरी रहती थीं, उनकी समझ में नहीं आता था कि जब उसने किसी की नाकचुटियां नहीं काटी, किसी के जानवर नहीं चुराए, कच्ची शराब और चरस नहीं बेची, किसी का क़त्ल नहीं किया तो उसे किस जुर्म की इतनी बड़ी सज़ा मिली है.

''बीबी तुम्हें डर नहीं लगता?'' फांसी घाट मुंतक़िल होने के बाद वार्डन मरियम ने उससे पूछा था.

''किस बात से डर,'' नरजिस के लहज़े में ठहराव था.

''मौत से.''

''नहीं-मौत जब अपने कब्ज़े में हो तो उससे डर नहीं लगता. फ़िर मेहेंदी भी तो है. वो मेरे बाद भी रहेगा, और मैं इसमें रहूंगी, फ़िर जब वो चला जाएगा तो मैं उसके बच्चों में ज़िंदा रहूंगी.''

मरियम ने उसके बाद नरजिस से कोई सवाल नहीं किया था. हां, बैरकों में ये बात ज़रूर घूम गई कि फांसी घाट में जो बीबी बंद है, वो बहुत पहुंची हुई है. उसे बशारत हुई है कि वो अपने बाद भी रहेगी. हाथी के कलेजे वाली है. न होती तो दूसरी औरतों और मर्दों की तरह चीख़ चिल्ला रही होती, कपड़े फाड़ रही होती, मिन्नतें मांग रही होती.

नरजिस ने महसूस किया था कि उसके सामने पहुंच कर लेडी वार्डनों की निगाहें झुक जाती हैं. सुपरिटेंडेंट जेल को उसकी कोठरी से

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जाने की जल्दी रहती है. और सुबह-शाम जब वो अपनी कोठरी से बाहर निकाली जाती है, तो हर तरफ़ सन्नाटा छा जाता है. लड़ती हुई, शोर मचाती हुई औरतें अचानक ख़ामोश हो जाती हैं और छड़दार दरवाज़ों के पीछे से उसे यूं देखतीं हैं, जैसे वो उनमें से नहीं है, कहीं और से आई है.

वो खाना, वो आख़िरी खाना, किस शानदार ढंग से आया था. The last supper. उसे बड़े कलाकारों की तस्वीरें याद आईं, महेदी उस खाने को देखकर कितना खुश हुआ था. "आज बड़ा मज़ा आया," उसने मां के गले में बांहें डाल दी थीं.

"हां मेरी जान--सच कहते हो." नरजिस ने उसे कौर बनाकर देते हुए, आंखें झुका ली थीं. महेदी उन आंसुओं को न देख सका, जो पलकों पर ठहरे हुए थे.

फ़िर रात हो गई. महेदी ऊंघने लगा, लेकिन नरजिस उससे जी भरकर बातें करना चाहती थी, उसकी आवाज़ सुनना चाहती थी. वो उसे देर तक जगाए रखना चाहती थी, ताकि जो लोग पौ फटने से पहले जब उसे लेने आएं तो वो मीठी नींद ँगे रहा हो.

नरजिस ने उसकी चमकती आंखों को दखा, उसके सुंदर माथे को देखा, ये हुसैन की आंखें थी, ये हुसैन का माथा था. उसके शरीर से हुसैन की खुशबू निकलती थी, हुस्न की, उम्मीद की खुशबू. हुसैन, अब जबकि तुम कहीं नहीं हो, तो क्या अब भी तुम कहीं रहते हो? ज़मीन और आसमान के बीच? उसके ख़ून में ज़िंदगी के भंवर पड़ने लगे. उसने महेदी को अपने सीने में समेट लिया.

"बहुत ज़ोर नींद आ रही है- अम्मी," महेदी ने मिन्नत की.

"मेरी जान- बस अभी कुछ देर में सो जाना, मुझसे थोड़ी सी बातें कर लो."

नरजिस की आवाज़ डूबने लगी. "कल सुबह मम्मा तुम्हें अपने घर ले जाएंगे. वे तुम्हें कहानियां सुनाएंगे, बाज़ार ले जाएंगे. जाओगे न?"

"सच अम्मी? हमारे साथ आप भी बाज़ार चलेंगी ना?" महेदी नींद भूल कर उठ बैठा.

"मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगी."

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तो क्या आप इसी कोठरी में रहेंगी?"

"नहीं बेटे- मैं तुम्हारे लिए तितलियां ढूढंने जाऊंगी."

बाहर बरामदे में आहट हुई, नरजिस ने सर उठा कर देखा. वार्डन मरियम छड़ें थामे उन दोनों को देख रही थी.

"अम्मी कल तितलियां ढूंढ़ने जाएंगी," महेदी ने खुश होकर मरियम को बताया.

"हां राजा- अम्मी से ख़ूब प्यार कर लो, ख़ूब बातें कर लो," मरियम की आवाज़ डूबने लगी, और वो जल्दी से मुड़ गई.

"आप शाम तक तो आ जाएंगी ना?"

"नहीं- महेदी, तितलियां बहुत तेज़ उड़ती हैं. मैं उन्हें खोजने निकलूंगी तो बहुत दूर चली जाऊंगी."

"आप कौन-सी तितलियां ढूंढ़ने जाएंगी."

नरजिस एक पल के लिए ठहरी, "आजादी की तितली- मेरी जान," उसने बेटे के बाल चूम लिए.

"वो किस रंग की होती हैं?"

"उसमें इंद्रधनुष के सातों रंग होते हैं."

"इंद्रधनुष क्या होता है?"

"इस बार जब पानी बरसे तो मम्मा से कहना वो दिखा देंगे."

"फ़िर मैं भी धनुष-तितलियां ढूढूंगा."

"नहीं, मेरी जान, धनुष तितलियां आपसे आप तुम्हारे पास आ जाएंगी. हम इसीलिए तो उन्हें खोजने निकले हैं, ताकि तुम्हें हमारी तरह सफ़र न करना पड़े"

नरजिस का शरीर कांपने लगा, वो दीवानों की तरह उसकी गर्दन चूमने लगी. इस एक हफ़्ते में पहली मरतबा उसकी आंखों से आंसू गिरे थे.

महेदी सो गया तो नरजिस ने उसे उठाकर अपने सीने से लगा लिया. महेदी के वजूद में उम्मीदों का पौधा पनप रहा था और उन्हीं उम्मीदों ने उसके सीने में हाथी का कलेजा रख दिया था. उसे आने वाले समय में ज़िंदा रहने का यक़ीन नहीं दिलाया था.

उसके पास की बैरकों से क़ुरआन पढ़ने और कल्मा दुहराने की आवाज़ें आने लगीं. कोई औरत बड़े ख़ुलूस से 'सूरए रहमान' का पाठ

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कर रही थीं. सबको मालूम था कि आज बीबी रुख़सत होने वाली है और ये उसी की तैयारी है.

उसके सीने में किसी ने ख़ंजर मारा. भैया मेन गेट के सामने ज़मीन पर बैठा होगा. उसने जब स्टैटिस में एम.ए. किया था तो उसे क्या मालूम था कि वो आया की ज़िंदगी के पलों का हिसाब रखेगा और बिल्कुल तन्हा होगा.

चेहरे उसकी आंखों के सामने तैरने लगे. दोस्त और दुश्मन चेहरे. अजनबी और शनासा आवाज़ें. नरजिस को उन अजनबी आवाज़ों पर अचानक प्यार आया, जो उसका आख़िरी सफ़र आसान करने के लिए अपनी नींदें बर्बाद कर रहे थे. एक हफ़्ता पहले तक वो उन आवाज़ों के साथ थी. ये आवाज़ें उसे कुछ भी तो नहीं समझती थीं, उसके बारे में कुछ भी तो नहीं जानतीं.

जिस दिन दया की अर्ज़ी देने का समय समाप्त हो गया तो ख़बर आई कि सुपरिटेंडेंट और डिप्टी सुपरिटेंडेंट जेल उसे बैरक से 'फांसी घाट' स्थानांतरित करने के लिए आ रहे हैं, तो हर तरफ़ सन्नाटा छा गया. वो और महेदी जब बैरक से रुख़सत हुए तो उसने कई औरतों को चुपके-चुपके आंसू पोंछते और चेहरे झुकाए देखा. ये वो औरतें थीं, जो छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे को गालियां बकती थीं, कपड़े फाड़ती थीं और जिन्हें अलग-अलग करने के लिए वार्डनों को डंडों का सहारा लेना पड़ता था.

नरजिस को नींद का झोंका छूकर गुज़रा, उसका दिल बैठने लगा. महेदी और उसका दिल एक साथ धड़क रहा था. और नन्हें से दिल का धड़कता रहना ही, मौत के सामने उसकी सबसे बड़ी जीत थी. वो अपने बाद भी ज़िंदा रहेगी. लेकिन रूह क्या थी, और अगर थी भी तो जिस्म से निकल कर कहां जाती है. हुसैन कहां था. कहीं भी नहीं. सब कुछ ख़त्म हो गया था. मौत क्या होती है? लुग़वी मानी तो उसे मालूम था. लेकिन अस्ल मानी तो उसे अब मालूम होने वाला था.

"बीबी," मरियम ने छड़ों के पास आकर आवाज़ दी.

"क्या बात है मरियम?" उसने गर्दन उठाकर उसकी तरफ़ देखा.

"राजा को बिस्तर पर लिटा दो बीबी. वो लोग आ रहे हैं." मरियम की आवाज़ चटकने लगी.

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक क्षण के लिए नरजिस को ज़मीन हिलती हुई महसूस हुई. फ़िर संभल कर उसने करवट ली और सीने से चिपटे हुए महेदी को बिस्तर पर लिटा दिया. इसे भला मेरी सूरत क्या याद रहेगी, उसके लिए तो केवल एक नाम, एक साया रहूंगी.

"सारी ख़ताएं माफ़ कर देना बीबी. हम रोटी इसी की खाते हैं. पेट बड़ा बदकार है बीबी," मरियम छड़ों से सर टिका कर रोने लगी. नरजिस ने तख़्त से उतर कर दोनों हाथ छड़ों के बाहर निकाले और मरियम के कांधे पकड़ लिए. लफ़्ज़ बेकार थे, भारी क़दमों की आवाज़ क़रीब आई तो नरजिस ने मरियम का कांधा थपथपाया. उसने सर उठाकर भीगी आंखों से उसकी ओर देखा. सफ़ेद मलमल के दुपट्टे से अपनी आंखें साफ़ कीं और अटेंशन खड़ी हो गई.

मरियम ने ताले में चाभी घुमाई और जितनी ख़ामोशी मुमकिन थी, दरवाज़ा खोल दिया. लोहे के दरवाज़े को सुपरिटेंडेंट जेल ने धक्का दिया तो दीवार से टकरा कर आवाज़ हुई.

"साहब जी- बच्चा सो रहा है- जग न जाए." वार्डन मरियम ने डरते-डरते प्रतिरोध किया.

"अच्छा बक-बक मत करो," सुपरिटेंडेंट ने तेज़ आवाज़ में उसे झिड़का.

"Sir I Request You not to Talk Loudly," नवजवान मजिस्ट्रेट ने नज़र सोए हुए महेदी पर डाली, और माथे से पसीना पोंछते हुए कहा. सुपरिटेंडेंट के माथे पर बल पड़ गए, ये नए अपने आपको जाने क्या समझते हैं. उसका मुंह कड़वा हो गया. फ़िर उसने अपने आप पर क़ाबू पाते हुए कार्रवाई शुरु कर दी, उसने पहले नरजिस की शिनाख़्त की, फ़िर उस काग़ज़ को खोलकर दफ़्तरी अंदाज़ में तेज़-तेज़ पढ़ने लगा. ये काग़ज़ अल्लाह के नाम से शुरु होकर इस मफ़हूम पर ख़त्म हुआ कि मुज़रिमा के गले में फांसी का फंदा उस समय तक पड़ा रहे, जब तक उसका दम न निकल जाए.

मेडिकल अफ़सर ने आगे बढ़कर नरजिस की नब्ज़ देखी, दिल की धड़कन सुनी और धीरे से सर हिला दिया. डिप्टी सुपरिटेंडेंट ने उससे कुछ काग़ज़ों पर दस्तख़त कराए, नवजवान मजिस्ट्रेट ने उनको प्रमाणित किया और सुपरिटेंडेंट कोठरी से बाहर निकल गया.

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

डिप्टी सुपरिटेंडेंट ने वार्डन मरियम को इशारा किया, वो अंदर आई, उसका चेहरा भी उतर गया था. निगाहें झुकी हुई थीं, वो नरजिस के दोनों हाथ पकड़ कर पीठ पर ले गई और चमड़े के फ़ीते से उन्हें बांधने लगी. नरजिस ने उसकी उंगलियों में कंपकंपाहट और नर्मी को महसूस किया. वो अकेली नहीं थी. बाहर बहुत से लोग थे, अंदर भी बहुत से लोग थे. सभी बैरकों पर राइफ़ल धारियों का पहरा होगा, मेन गेट के बाहर बारह वार्डनों की एक पलटन तैनात हो चुकी होगी. उन सबकी राइफ़लों में दस-दस गोलियां होंगी और उन्हीं के सामने ज़मीन पर भैया बैठा होगा.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महेदी का चेहरा उसकी निगाहों के सामने था. वो एकटक देख रही थी. मैट्रन के इशारे पर मरियम ने उसका हाथ थामा, "चलो बीबी."

वो एक क़दम बढ़ी, फ़िर पलट कर महेदी को देखा. वो कुलबुला रहा था. सिसकियां ले रहा था. शायद कोई डरावना ख़्वाब देख रहा है. नरजिस का दिल किसी ने मुट्ठी में जकड़ लिया. आंखों की दहलीज़ तक आ गए आंसुओं को उसने बड़ी मुश्किल से पीछे ढकेला. वो उन लोगों के सामने थी, जिन्होंने उसके और उस जैसे दूसरों के ज़मीर को शिकस्त देने की बहुत-सी कोशिशें कीं, लेकिन वो उनसे हारी नहीं थी तो अब आख़िरी लम्हों में उन्हें फ़तह के ज़ायक़े से परिचित क्यों कराए. नवजवान मजिस्ट्रेट की निगाहों ने उनकी निगाहों का पीछा किया. "बच्चा कहां रहेगा?" उसने मैट्रेन से पूछा.

"बच्चे का मामू बाहर इंतज़ार कर रहा है जी."

नरजिस के सीने पर घूंसा लगा. भैया को उसने किस इम्तहान में डाल दिया था. मजिस्ट्रेट के माथे पर बल थे. उसने नरजिस पर एक गहरी नज़र डाली, फ़िर बाहर बरामदे में खड़ी हुई एक वार्डन को आवाज़ दी. "बच्चे को गोद में उठा लो, ज़रा संभाल कर."

"साहब जी मैं उठा लूं." मरियम की आवाज़ में विनती थी.

"चलो तुम ही सही इसे बीबी के साथ लेकर चलो."

"लेकिन यह तो जेल मैनुवल..." डिप्टी सुपरिटेंडेंट ने मदाख़लत करनी चाही. "To hell with the jail manual." नवजवान मजिस्ट्रेट ने कहा, और तेज़ क़दमों से बाहर निकल गया. मरियम ने आगे बढ़कर महेदी को उठाया, और सीने से लगा लिया. वो फ़ौरन ही

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चुप हो गया. डिप्टी सुपरिटेंडेंट की सरकरदगी में काफ़िला रवाना हुआ. दो सिपाही आगे चल रहे थे और दो पीछे, बीच में वह थी और उसके दोनों ओर मरियम और दूसरी वार्डनें चल रही थीं. चलते समय भी नरजिस की निगाहें महेदी पर जमी हुई थीं.

बारह मई के महीने की रात में पौ फटने से पहले की मीठी-मीठी ठंड थी. डूबते हुए चांद की रौशनी में उसने फांसी के तख़्ते को देखा. उसे सीढ़ियां नज़र आईं. मौत तो पाताल में उतरने का नाम है, इस पाताल में उतरने के लिए सीढ़ियां क्यों चढ़नी पड़ती हैं? उसे जल्लाद नज़र आया. आज उसके बच्चे कितने खुश होंगे. बाप को आज फांसी भत्ता मिलेगा, दस रुपए, दस रुपए तो बहुत होते हैं, इन रुपयों से कई चीज़ें ख़रीदी जा सकती हैं. नरजिस के ख़्यालात भटक रहे थे. उसके पैरों में कोई कंपकंपाहट न थी. हर आदमी की निगाहें उसके अडिग क़दमों पर जमी हुई थीं.

अचानक वो रुक गई, ''मरियम'' उसकी आवाज़ सन्नाटें में बिजली की तरह चमकी.

''हुक्म दो बीवी,'' वार्डन मरियम की आवाज़ आंसुओं से भीगी हुई थी. जाने कौन आज़ाद था, और कौन क़ैदी. उसने मरियम को क़रीब आने का इशारा किया, मरियम उसके सामने झुक गई. पीठ पर बंधे हुए नरजिस के दोनों हाथ महेदी को छूने के लिए फड़के, और फ़िर ख़ामोश हो गए. महेदी नींद में हंस रहा था, शायद परियों से खेल रहा था. नरजिस ने धुंधलाई हुई आंखों से ज़िंदगी को देखा, फ़िर धीरे से उसका माथा चूमा, गाल चूमे, ज़िंदगी-ज़िंदगी से रुख़सत हो रही थी.

वह सीढ़ियां चढ़ने लगी. तख़्ते पर पहुंची तो सरकारी जल्लाद उसके क़दमों में झुका और फीते से पैर बांधने लगा. नरजिस ने ओझल होते हुए दृश्य पर एक नज़र डाली और फ़िर उसे भी अपने अंदर समो लिया. उसकी आंखें बंद थीं और दृश्य उसके अंदर थे. वो जानती थी कि चांद डूब रहा है. सुबह का तारा निकल आया है, महेदी परियों से खेल रहा है, सूरज निकलने वाला है, और अल्लाह के नाम से शुरू होने वाले काग़ज़ पर अलदरामद करने का समय जा पहुंचा है.

अनुवाद : लईक रिज़वी

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

मो. मंशा याद

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नज़र का धोखा

लड़की घर की थी, कठिनाई तो लोमड़ी ढूंढ़ने में हो रही थी. ख़ैरदीन कोशिश में था कि किराए पर मिल जाए. मगर अब तक उसे कामयाबी न हुई थी. नाउम्मीद होकर उसने यह कह दिया, "अगर लोमड़ी न मिल सकी तो इस बार मेले नहीं जाएंगे."

"क्यों अब्बा?" फीके ने पूछा.

"बेटे बकरी में अब लोग दिलचस्पी नहीं लेते. फ़िर कमबख़्त मिमियाने लगती है."

"कोई सांप-संपनी, कोई नाग-नागिनी अब्बा." फीका मेले में जाने के लिए बेचैन हो रहा था.

"वह खेल पुराना हो चुका है," ख़ैरदीन ने जवाब दिया.

लोमड़ी न मिलने की ख़बर सुनकर वह खुश हो रही थी. दिल ही दिल में दुआएं मांगती, अल्लाह करे अब्बा को लोमड़ी न मिल सके. किंतु उसकी दुआ क़बूल न हुई. जब मेला शुरू होने में तीन-चार दिन रह गए तो अब्बा मुंह मांगी क़ीमत पर लोमड़ी ख़रीद लाया और इस प्रकार बोला मानो लाउडस्पीकर से ज़ोर से चिल्ला रहा हो.

"चलो, चलो तैयार हो जाओ, जल्दी करो."

अब्बा की ऊंची आवाज़ सुनकर उसका सर घूमने लगा. मेले का सारा शोर कानों में गूंजने लगा. वह मोटर साइकिल पर सवार मौत के कुएं में नीचे ही नीचे गिरती चली जा रही थी.

वह कई सालों से तमाशा बन रही थी. उसके चेहरे के साथ कई तरह के गढ़ लगते रहे थे. कभी नागिन का, कभी बकरी का और कभी लोमड़ी का. एक ही पोज़ में पहरों बैठे उसकी कमर दुखने लगती. टांगें शिथिल पड़ जातीं. अकसर उसे लगता कि जैसे उसका बदन बकरी, लोमड़ी में तो नहीं बल्कि पत्थर में ज़रूर तब्दील हो गया है. उसे अपने चेहरे से, जिस पर उसे बड़ा नाज़ था, नफ़रत सी होती जा रही थी.

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसी चेहरे की वजह से उसका बाकी धड़ बेकार हो गया था. उसका जी चाहता कि वह चेहरे समेत अपनी गर्दन उतार कर रख दे और खुद कहीं दूर भाग जाए.

तमाशाइयों में हर तरह के और हर उम्र के लोग शामिल होते मगर बच्चे ही सिर्फ़ हैरततजस्सुस और दिलचस्पी का इज़हार करते. बड़ी उम्र के लोग उसे भूखी और ललचाई नज़रों से देखते. लड़के फ़िक़रे क़सते, कोई आंख मारता, कोई सीटी बजाता, कोई फ़हश इशारे करता. सारा वक़्त नज़ारों और फ़िक़रों का क़हर उसे लहूलुहान करता रहता, फ़िर भी जैसा उसे सिखाया गया था, वह मुस्कराती रहती और खुश दिखाई देने की कोशिश करती. उसे बुत बने बेकार बैठना बिल्कुल अच्छा न लगता. उसे थिएटरों और सर्कसों की लड़कियों पर रश्क आता जो हर वक़्त कुछ-न-कुछ करती रहती थी, गातीं, नाचतीं, या करतब दिखातीं. हर मेले में हर जगह पर लोग कुछ न कुछ करते रहते. केवल वही पत्थर बनी बैठी रहती थी. और उकताई और थकी होने पर भी उसे खुश दिखाई देने का स्वांग रचना पड़ता. बेहूदा बातों को बड़ी खुशी से सहना पड़ता. भद्दे चेहरों की एक हल्की मुस्कान के साथ इस्तक़बाल करना पड़ता और यह सिलसिला रात देर तक चलता रहता और वह इतनी थक और उकता जाती कि कभी-कभी उसका जी चाहता कि ज़ोर-ज़ोर से रोने ओर चीखने लगे. ज़हनी तक़लीफ़ से बचने के लिए वह कभी-कभी अपने आस-पास से नाता तोड़ लेती और कहीं दूर पहुंच जाती. फ़िर आस-पास बजते फ़िल्मी गीतों में खो जाती. जागते-सोते मीठ-मीठे सपने देखती, लोगों की भीड़ से अलग जाकर अपनी पसंद का चेहरा खोजती. ऐसी हालत में उसे पता नहीं चलता कि कितना समय बीतता गया. कितने और कैसे लोग आए और क्या कुछ कहकर चले गए. यदि समय बिताने का यह अवसर उसके हाथ न आता तो वह अब तक ज़रूर घबरा कर कहीं भाग गई होती, पागल हो चुकी होती.

''शैदा अब नहीं जाएगी,'' उसकी मां ने अपना फ़ैसला सुनाया.

क्यों नहीं जाएगी? ख़ैरदीन ने बिगड़कर पूछा.

अब वह बड़ी हो गई है.

एक साल में?

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'हां, पिछले साल वह छोटी ही थी. लड़कियां खंबिया होती हैं, उन्हें बढ़ते कुछ देर नहीं लगती ."

"अच्छा ज़्यादा बातें न बना और उसकी तैयारी कर."

"अब उसका जाना ठीक नहीं, कुछ तो ख़्याल करो."

"कुछ नहीं होता, तू अपनी बक-बक बंद कर."

"मैं उसे अकेली न जाने दूंगी. साथ चलूंगी."

"तू वहां क्या करेगा?"

"उसका ख़्याल रखूंगी."

ख़ैरदीन को हंसी आ गई बोला-

"सुन रहे हो फीके, यह उसकी रखवाली करेगी. क्यों हम इसके कुछ नहीं लगते. बाप और भाई से ज़्यादा लड़की की देखभाल कौन कर सकता है, बेवकूफ़!"

"जवान बेटी का ख़्याल सिर्फ़ उसकी मां रख सकती है."

"क्यों पहले हम देखभाल नहीं करते रहे." फीका बोला, "किसी ने उसका कुछ उतार लिया है क्या?

"तू चुप रह फीके!" मां गुर्राई.

"ठीक ही तो कहता है. पहले क्या तुम साथ जाती थीं?"

"तब और बात थी. अब वह जवान हो गई है."

"तो क्या हम उससे...?"

"बस-बस" मां को गुस्सा आ गया. "जो मुंह में आता है, बक देते हो."

"अच्छा तू भी अपनी बकवास बंद कर."

"बेटी की कमाई खाते हो, कुछ तो शर्म करो."

"शर्म किस बात की, मेहनत करते हैं, तमाशा दिखाते हैं."

"इस धोखे में न रहना-- ख़ैरदीना कि लोग तुम्हारा तमाशा देखने आते हैं. वह तुम्हारी बकरी या लोमड़ी को देखने नहीं, तुम्हारी बेटी का चांद-सा मुखड़ा मैला करने आते हैं."

"अगर देखने से मैला होता है तो होने दो."

"हां अम्मां," फीका बोला, "लोग आते हैं देख कर चले जाते हैं. क्या लेते हैं?"

"शर्म कर फीके."

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तुम फ़िक्र न करो मां." ख़ैरदीन बोला. "जैसी भेजोगी वैसे ही वापस लाएंगे."

"हां अम्मा, बेशक तोल लेना," फीके ने मसख़री की.

"शर्म भी कोई चीज़ है, बेशर्म!"

"इसमें बेशर्मी की क्या बात है अम्मा. लड़की का चेहरा लोमड़ी का बदन, नज़र का धोखा. "

ख़ैरदीन बोला, "ग़रीब आदमी को पेट पालने के लिए सौ तरह के जतन करने पड़ते हैं."

"हां अम्मा, बहुत पापड़ बेलना पड़ता है."

"तुम लोग अब दूसरा धंधा क्यों नहीं शुरू कर देते?"

"अच्छा-अच्छा वह भी कर देंगे, चलो फीके तुम तैयारी करो." और तैयारी शुरू हो गई.

शैदा ने अपनी ज़रूरत की छोटी-मोटी चीज़ें, कपड़े और बर्तन सूटकेस में रखने शुरू कर दिए. गर्मी और उमस के दिन थे, उसे पहरों पर्दे के पीछे, जहां हवा नहीं पहुंच पाती, बैठना पड़ेगा, इस ख़्याल से मां ने सारे काम छोड़कर उसे कपड़ों का नया जोड़ा सी दिया. फीके ने कनात शामियाना, मेज़, स्टूल, पर्दे और दूसरा सामान बांध दिया. वह चारों ख़ैरदीन, फीका, लड़की और लोमड़ी भोर में मेले के लिए चल पड़े.

मेले का पहला दिन औरतों और बच्चों के लिए मख़सूस था हालांकि इसमें भी मर्दों की तादाद ज़्यादा थी, बातें करने वाली लोमड़ी में बच्चे ज़्यादा दिलचस्पी लेते थे. इसलिए ख़ूब बिक्री हुई. सारा दिन टिकट बिकते रहे. ख़ैरदीन बहुत ख़ुश था. उसने दोनों वक़्त बहुत अच्छा खाना मंगाया. उसे आइसक्रीम भी खिलाई और चूड़ियां और सुरमा के लिए भी पैसा दिए. लेकिन अगले दिन बारिश होने लगी. दिन भर थोड़े-थोड़े वक़्फ़े पर बूंदा-बांदी का ही सिलसिला जारी रहा, धंधा ठप रहा, किंतु उसे कुछ आराम का मौक़ा मिल गया. मेले का आज तीसरा दिन था.

अगरचे गर्मी बहुत थी और हवा बिल्कुल बंद थी. इसके बावजूद भोर ही से लोग छोटी-बड़ी टोलियों में मेले में उमड़ना शुरू हो गए थे, दोपहर तक मेला भर गया और काफ़ी चहल-पहल हो गई. कंधों से

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कंधा छिलने लगा. दुकानों और खाने-पीने के ढाबों पर भीड़ हो गई. मदारियों और सपेरों, जादू के खेल दिखाने, रीछों से कुश्ती लड़ने, जिंसी ताक़त की दवाईयां बेचने और उंगली से छूकर बिना दर्द के दांत निकालने वालों के आसपास तमाशाइयों ने परे बना लिए थे. थिएटर खचाखच भरे हुए थे. गीतों और मकालमों का शोर बाहर भी सुनाई दे रहा था. एक तरफ़ हीर सययाल भत्ता लेकर मेले की तरफ़ जा रही थी. रास्ते में किसी ने ट्विस्ट नाच की फ़रमाइश कर दी. दूसरी तरफ़ मियां मजनूं बन में लैला-लैला पुकारता हुआ एकाएक जागती गाने लगा. सर्कस में तमाशाइयों के लिए करतबों के अलावा भी दिलचस्पी की चीजें थीं. गोरी टांगें, कसे हुए बदन और गुलाबी चेहरे, टिकट न ख़रीद सकने अथवा ख़रीदने का फ़ैसला न कर सकने वाले लोगों के लिए थिएटरों और सर्कसों के बाहर भी दिलचस्पी का सामान मौजूद था. ऊंचे मचानों पर जाकर और औरतों के लिबास में हिजड़े फ़िल्मी गीतों की धुनों पर नाचते और कूल्हे मटकाते. मौत के कुएं में चलने वाली मोटर साइकिल का शोर दूर-दूर तक सुनने वालों में जोश पैदा करता. मर्दों से भरे मेले में बंजारिनों और भिखारिनों के अलावा औरतें सिर्फ़ सर्कसों और थिएटरों के अंदर थीं. इसलिए सभी लोगों का ध्यान उसी तरफ़ था. घरों और खेतों में काम करने वाली मामूली और मैली-कुचैली औरतों के मुक़ाबले में वह उन्हें किसी और ही दुनिया की वासी दिखाई देतीं. ख़ैरदीन ने सोचा, आज ख़ूब टिकट बिकेंगे लेकिन अब वह परेशान था, सिर्फ़ इक्का-दुक्का लोग ही इधर का रुख़ करते थे. लोमड़ी और औरत के बीच की थोड़ी सी जगह छोड़कर भीड़ के सारे बादल मेले पर बरस रहे थे. लाउडस्पीकर पर बोल-बोल कर और लोगों को पुकार-पुकार कर उसका गला बैठ चुका था.

"लोग इधर क्यों नहीं आते?" उसने फीके से सवाल किया.

"लगता है लोगों को लोमड़ी में कोई दिलचस्पी नहीं रही," फीके ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा.

"क्यों फीके!"

"अब हर आदमी अंदर से खुद लोमड़ी बन गया है अब्बा."

"वह कैसे फीके?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"वह बकरी और लोमड़ी की कहानी तुम्हें याद है अब्बा. लोग बड़े चालाक और खुदगर्ज़ हो गए हैं. दूसरों को गड्ढे में गिराकर और उनके कंधों पर सवार होकर खुद बाहर आ जाते हैं.

"मगर परसों तो बड़ी चहल-पहल थी फीके."

"परसों बच्चों और औरतों का दिन था अब्बा."

"फ़िर क्या करें?"

"अब कोई और धंधा सोच अब्बा."

"हां. तुम्हारी अम्मा भी यही कहती रहती हैं."

ख़ैरदीन को लोमड़ी पर ख़र्च होने वाली रक़म बर्बाद होते हुए दिखाई देने लगी. वह कोई दूसरा धंधा शुरू करने के लिए पहली बार सोच रहा था कि फ़िर एक अजीब बात हुई. दोपहर के बाद उमस बहुत बढ़ गई थी और सूरज अपने पूरे आबोताब से चमक रहा था. टिकट तेज़ी से बिकने लगे और उसमें बराबर इज़ाफ़ा होता गया. पहले तो वह खुश हुआ फ़िर यह देखकर चौंका कि अंदर जाने वाले बाहर आने का नाम नहीं लेते और जिनको भीड़ की वजह से फीका बाहर निकालने के लिए मजबूर कर देता है, वह नया टिकट ख़रीद कर दोबारा अंदर आ जाते हैं. उसने फीके से लोगों की इस एकाएक ग़ैर मामूली दिलचस्पी की वजह जाननी चाही तो उसने हंसकर जवाब दिया-- "बस भेड़ चाल है अब्बा, लोग जिस ओर ज़्यादा भीड़ देखते हैं, देखा-देखी उसी तरफ़ चल पड़ते हैं.

ऐसा कभी-कभी पहले भी हो जाता था. अचानक तमाशाइयों का रेला जाता और फ़िर मौत और ग्राहक का क्या पता कब आ जाए. इस ख़्याल से वह मुतमईन हुआ और खुशी से टिकट बेचने में लग गया.

तमाशाइयों का जोश-खरोश हर लम्हा बढ़ता गया. टिकट ख़रीदने वालों की पहली बार लंबी क़तार लग गई. उसका माथा ठनका, उसने फ़िर फीके को अपने पास बुलाया और धीमे से पूछा.

"ख़ैर तो है, आख़िर आज क्या बात हो गई ?"

"सब ठीक है अब्बा."

"कोई बात तो है?"

"बस अब्बा गर्मी बहुत है"... फीका हंसने लगा.

"यहां कौन-सी बर्फ़ पड़ रही है फीके."

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
'तुम टिकट बेचो अब्बा."

"मगर फीके यह अचानक!"

"कुछ नहीं अब्बा... बस नज़र का धोखा है," फीका हंसता हुआ चला गया. उसकी समझ में कुछ न आया, लेकिन उसे फीके की हंसी बड़ी ही अर्थपूर्ण लगी. उसने थोड़ी देर के लिए टिकट बेचने बंद कर दिए. खुद ऊंची मचान से उतर कर तमाशाइयों के क़रीब आया और यह देखकर ठिठक गया कि पर्दा खिसक जाने के कारण लोमड़ी के साथ लड़की का ऊपर का धड़ भी साफ दिखाई दे रहा है. पहले तो उसे शक हुआ कि वह तमाशाइयों के लिए ही कुर्ते की ओर से लापरवाह होकर बैठी है, लेकिन फिर अंदाज़ा हो गया कि कुर्ता भीगकर उसके बदन से चिपक गया है और खाल के रंग में तब्दील हो गया है. उसने सोचा शायद गर्मी की वजह से और यह सोचकर कि सिर्फ़ उसका चेहरा ही दिखाई देता है, उसने कुर्ते के नीचे कुछ भी पहनना ज़रूरी न समझा था. उसे फीके पर बड़ा गुस्सा आया. वह जल्दी से वापस खुद अपनी जगह पर लौट आया और इससे पहले कि वह फीके को डांटकर पर्दा ठीक करने को कहे और वह खुद शो ख़त्म करने का ऐलान करे, लेकिन उसकी नज़र तमाशाइयों की लंबी लाइन पर पड़ी और वह जल्दी-जल्दी टिकट बेचने लगा.

अनुवाद : फ़ख़रूल करीम सिद्धीकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अज़रा असग़र

आदर्श की मौत

हिंदुस्तान तक़सीम हो गया... पाकिस्तान बन गया.

और एक मुल्क का नाम बर्रेसग़ीर के नक़्शे पर नमूदार हो गया. बेहद आब-व-ताब के साथ शायद सारी दुनिया में शोर मच गया था--यह बहुत बड़ा मारका था-बहुत अज़ीम कारनामा.

फ़िर जाने क्या हुआ, हर चीज़ का काल पड़ गया, नमक तक सफ़हे-हस्ती से मिट गया. रोटियां भी गिन-गिन कर मिलने लगीं. गेहूं का ऐसा सफ़ाया हुआ कि ज़मींदारों के घरों में भी बाजरा, मकई पकने लगी. वह भी खाने को बस इतनी मिलती कि ज़िंदा रहा जा सके. हर ज़ीनफ़स ख़ौफ़ की एक तलवार की ज़द में रहना. हर इंसान भाग रहा था. ख़ानदान-के-ख़ानदान हिजरत के लिए कमर बांधे थे. अपने ही घरों में लोग मुसाफ़िर बन गए थे, पूरे के पूरे गांव खाली थे और घरों के बंद किवाड़ों में ताले झूल रहे थे. शहरों में अफ़रा-तफ़री मची थी. मरते, कटते, अग़वा होते, मर्द, औरतें और बच्चे भाग रहे थे. सबका रुख़ एक ही सिम्त था. पाकिस्तान ही सबके लिए पनाह की जगह थी. राशिदा बेगम का नन्हा सा ज़ेहन इस सूरते-हाल को समझ नहीं सकता था. फ़िर भी पाकिस्तान का ख़्याल उसके लिए बेहद ख़ूबसूरत था. उसके खानदान के बहुत से लोग पाकिस्तान जा चुके थे, और एक साल बाद ही उसने भी अपनी मां और बहन-भाइयों के साथ उस ख़्वाबों की हसीन सर-ज़मी पर क़दम रखा, जहां ढेरों-ढेर गेहूं था, नमक था, और पेट भर रोटी.

बड़े चचा के यहां जन्नत बीवी दिन भर छोटे-बड़े मुख़तलिफ़ काम करती रहती. सफ़ेद झुलसी हुई रंगत, भूरी-भूरी रंगीन कंचों जैसी ख़ूबसूरत आंखें, जिनमें हरदम उदासियां तैरती रहतीं. धसे हुए गाल और सूखा मरा, फाक़ा ज़दह जिस्म.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जन्नते बीबी कश्मीरी थीं और वहीं से हिजरत करके इस जन्नते-अरज़ी में आई थीं. वह अपने चार छोटे-छोटे बच्चों समेत दिर-भर बड़े चचा के घर का काम निबटाती रहती और उसके चारों बच्चे छज्जे के नीचे नंगे फ़र्श पर सोते-जागते पड़े रहते. राशिदा बेगम को गोल-मटोल-सी नासरा बहुत अच्छी लगती थी और हाजरा तो यूं लगता कि बस अब मरी कि तब मरी. बमुश्किल वह महीना भर की होगी. राशिदा को हर वक़्त उसकी मौत की फ़िक्र सताए रहती और वह उसे धीरे से उठाकर कमरे में पंखे के नीचे लाकर लिटा देती, जहां बड़ी चची और अम्मा बैठी हिंदुस्तान में रह जाने वाले अपने रिश्तेदारों के तज़करे में मसरूफ़ होतीं. जन्नत के बाक़ी तीनों बच्चे अब भी छज्जे तले, तपिश में बेख़बर सहमे-सहमे बैठे रहते. बड़ी चची कुछ मेहरबान होतीं तो उसके बच्चों को कुछ खाने-पीने को दे देतीं, और बच्चे सब्र-शुक्र से खा पी लेते, वरना बच्चों वाली कोई बात इनमें न थी-न बेसबरापन, न नदीदापन और न उछल-कूद और शोर-शराबा. जन्नत को बड़ी चची की कोई बात भी शायद नागवार नहीं लगती थी, वह उनके किसी भी रवैए को नाइंसाफी या ज़्यादती की नज़र से नहीं देखती थी... कश्मीरी महाजिर--बेचारी जन्नते बीबी जो अज़ल से मेहनत मज़दूरी करती आई थी और पसीना बहाकर रोज़ी कमाना अपना नसीब समझती थीं. उसने शायद कभी ज़्यादा के लिए सोचा ही न था. गुरबत की सोच भी उसके रिज़्क की तरह महदूद होती है.

कुछ अरसे के बाद हिंदुस्तान से जाने वालों का सिलसिला उस तेज़ रफ़्तारी के साथ तो जारी न रहा था, मगर फ़िर भी इक्का-दुक्का लोग आते रहते. पाकिस्तान में महाजरीन की अबादकारी का मुश्किलों से भरा काम जारी था. महाजरीन जो अच्छे खुशहाल ख़ानदानों से थे, अपनी खुद्दारी और सफ़ेदपोशी के भ्रम को थाम-थाम कर बेहाल हुए जा रहे थे. बाक़िया ने ख़ूब धांधली मचाई थी. बड़े-बड़े मकानों के एलाटमेंट और जायदादों की झूठी सनदें उनके पास थीं और इन सबको हासिल करना, उनकी ज़िंदगी का मक़सद. गोया इंसान क्या थे, मुख़्तलिफ़ पेड़ों गई जामुनें थी, जिन्हें एक मुंह बंद बर्तन में डालकर उछाल दिया गया था, न कोई हसब-नसब और न असल-नसल, हर आदमी मशकूक था और हर किसी पर झूठ का लेबल चिपका था.

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बड़े भैया को एक सरकारी दफ़्तर में नौकरी मिल गई थी और ख़ालिद भाई दफ़्तरों के चक्कर काटने में मशगूल थे. बड़े चचा ने करम यह किया कि ट्रांसफ़र पर जाते हुए अपना मकान बड़े भैया के नाम एलाट करा गए. यूं जिंदगी की गाड़ी बहुत खुशहाली से तो नहीं, मगर क़दरे इतमीनान से चालू हो गई, अम्मी ने जन्नत बीबी के दस साल बड़े बेटे को पांच रुपए पर अपने यहां नौकर रख लिया. ज़न्नत बीबी ने जोड़-तोड़ करके एक खड्डी लगा ली, और उसके छोटे-बेटे ज़फ़र को ला-वल्द बड़ी चची अपना बेटा बनाकर अपने साथ ले गई.

कश्मीरी बच्चे जैसे-जैसे बढ़ते रहे, रंग-रूप निकालते गए. सुर्ख़-सुर्ख़ गाल और भूरी-भूरी आंखों वाला फ़ज़ल मोहम्मद नौकर होते हुए भी नौकर न लगता और ज़फर तो चची के घर में सचमुच बेटों की तरह पल रहा था. साफ़-सुथरी यूनीफ़ार्म पहने, छोटा-सा बस्ता गले में लटकाए जब वह घर से निकलता तो कौन कह सकता था, वह वज़ारत अली सैय्यद का बेटा नहीं है. फ्जल था तो नौकर, लेकिन सिर्फ़ तनख़्वाह की हद तक, वरना उसे वह तमाम आसानियां हासिल थीं, जो एक घर में ख़ानदान के फ़र्द को होती हैं. वह राशिदा बेगम का हर मामले में हिस्सेदार था. साथ खेलता-कूदता, लड़ता-झगड़ता और उनके झगड़ों के फ़ैसले अम्मा क़तई इंसाफ़ के साथ चुकातीं--हिजरत करके आने वालों के दिमाग़ों से अपनी बड़ाई का ज़ोम किसी हद तक निकल चुका था और वह हर इंसान को बराबरी की सतह पर देखने लगे थे. जाने यह वक़्त का तक़ाजा था या हालात का झटका. अब अगर कोई बड़ा तबक़ा था तो वह या तो बाज़ मक़ामी लोग थे, जो इत्मीनान से अपने-अपने ठिकानों पर बैठे रहे थे और अफ़रातफ़री में भागने वालों के माल से किसी न किसी हद तक अपना घर भर चुके थे, या हिंदुस्तान से आने वाले कमतर दर्जे के वह लोग थे, जो बड़ी-बड़ी जायदादों के एलाटमेंट कराकर बड़े-बड़े मकानों में आबाद हो चुके थे. और यूं वक़्त की धारा बहते-बहते बहुत दूर निकल गई. जैसे एक ज़माना बीत गया.

बड़े होकर फ़जल ने मां-बाप के साथ कारोबार संभाल लिया. अब उसकी खड्डियां पावर लूम्ज में बदल गई थीं. जफ़र कॉलेज में पढ़ रहा था, और छोटी बाजी की बेटी पर नज़र लगाए बैठा था, और जफ़रुल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gr

हुदा सैय्यद कहलाता था. खतरे की बू संघकर छोटी बाजी ने ग्रेजुएशन
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
करते ही जेनू के हाथ पीले कर दिए. और जफ़रुल हुदा सैय्यद दिल बर्दाश्ता होकर पावर लूम्ज़ की जदीद टेक्नॉलोजी सीखने के लिए जर्मनी चले गए. हालात ने एक बार फिर हिजरत से हमकनार किया. ख़ानदान की लड़कियां ब्याह कर दूसरे शहरों को सिधार गई और लड़के मुलाज़मत के सिलसिले में इधर-उधर बिखर गए.

सैंतीस बरस बाद--मेरी-मुझ राशिदा बेगम की पहचान--मेरी शिनाख़्त, कोई क़बीला, कोई ख़ानदान, कोई शहर नहीं--सिर्फ़ पाकिस्तान है. पाकिस्तान मेरी आन है, और ईमान है. मैं तारीख़ का एक अहम बाब हूं. मुझसे एक कलचर जुड़ा हुआ है. मैं तारीख़ के उन फटे हुए अबवाब को कलेजे से लगाए ज़िंदा हूं और अपने पुर्खों की खायात को क़तरा-क़तरा नई नसल के हलक़ में उतार देना चाहती हूं. मग़र यह नसल इतनी तेज़ी से दौड़ रही है कि मैं--! जो रवायतों को बचाए हुए थी अब थक-सी गई हूं.

मेरे घर के बराबर वाला बंगला पचीस लाख में बिका है. और मेरा नौजवान बेटा मुझसे कह रहा है--

"मां ! जानती हो यह बंगला किसने ख़रीदा है?"

"किसने?" मैंने तवे पर फुलका डालते-डालते यूं ही पूछा. हालांकि मुझे बराबर के बंगले और उसके मकानों से क़तई कोई दिलचस्पी नहीं है.

"वह सादिया है न, मेरी क्लास-फ़ैलो, उसके वालिद अरसे से जर्मनी में आबाद थे. सादिया यहां यूनिवर्सिटी-हॉस्टल में रहती थी. उसके वालिद अब हमेशा के लिए पाकिस्तान आ गए हैं और उन्होंने यह बंगला ख़रीदा है. पचीस लाख--! बहुत बड़ी रक़म होती है मां. करोड़ का चौथाई--और मां उनका यहां कपड़े का एक क़ारख़ाना भी है. सादिया के पापा वग़ैरह ही उसकी निगरानी करते थे. सादिया के वालिद से मैं मिला हूं, बहुत नफ़ीस आदमी हैं. कश्मीरी नस्ल के सैय्यद है. वह आपसे और अब्बू से मिलने आएंगे."

"कश्मीरी नस्ल के सैय्यद?" मुझे कुछ याद आया है और मेरा हाथ तवे पर रुक-सा गया है, और मैंने अपने बेटे से कुछ पूछा है--शायद सादिया के वालिद का नाम--

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"ज़फरुल-हुदा सैयूयद--" शायद उसने बताया है, और मैं अपनी जगह सुन्न सी होकर रह गई हूं, मैं डर रही हूं, मैं अपने वजूद से ख़ौफ़ज़दा हूं. जाने अगले ही लम्हे मेरा नौजवान बेटा क्या कह देगा. मेरी पुतलियों की स्क्रीन पर कई तस्वीरें उभरी हैं, और मेरे सीने में यादों का अलबम फड़फड़ा रहा है. मेरी हथेलियों के बीच दबी रोटी बढ़ नहीं पा रही. मैं अपने बेटे के मुंह से सादिया के वालिद का नाम सुनकर बौखला रही हूं. मैं अपनी बौखलाहट को कोई नाम नहीं दे सकती, न ख़ुशी का, न ग़म का और न ख़ौफ़ का, मगर एक बौखलाहट मुझ पर छाई है और मैं सोचे जा रही हूं.

"मैं कल को जफ़र से कैसे मिलूंगी? किस हैसियत से मिलूंगी? मेरा रवैया क्या होगा?"

मैं अपने बुज़ुर्गों की रवायत की मुहाफ़िज़--सख़्त उलझन में फंसी हूं, ख़ुशक़िस्मत थे वह लोग जो गुज़र गए, और ख़ुशबख़्त है वह नसल जो परवान चढ़ रही है. मगर मैं तो अपनी नसल की बात कर रही हूं, जो दोहरे अज़ाब में फंसी है और मैं बौखला रही हूं. मैं जफ़र से कैसे मिलूंगी? और मेरे कानों ने सुना, मैं अपने बेटे से कह रही हूं--

"बेटा! जफ़र साहब से कहना अब्बू बाहर गए हुए हैं, वह आ जाएं तो फ़िर हम ख़ुद मिलने जाएंगे. मिलने-जुलने के यही आदाब है. पुराने रहने वाले नए आने वालों के घर जाया करते हैं."

और मेरे दिल में बजती तेज़-तेज़ घंटियां थोड़ी धीमी हो गई हैं. ठहरे-ठहरे गंभीर लहज़े में दी गई दलील से मुतमईन होकर मेरा बेटा बाहर चला गया है, और मेरी रुकी-सी सांस फ़िर से चलने लगी है.

अब मैं इत्मीनान से बैठकर सोचूंगी कि ज़फ़रुल-हुदा सैयूयद से कैसे मिलूंगी, मैं उस नाते के ताने-बाने को कैसै जोडूगी, जो मेरे पिछ्लों के तबक़ाती नज़रयात के धागों में उलझ कर बेहद गुंजलक हो गया है.

अनुवाद : अज़ीज़ा बानो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झोली

उस शहर में उस्ताद मोदी की बेकरी के केक बहुत ही प्रसिद्ध थे. साख बनाए रखने वाले कीमती केक बनाने और सजाने का सूक्ष्म कार्य उस्ताद मोदी एक ख़ास कमरे में अपने हाथों से करता. उस ख़ास कमरे की खिड़की एक बड़ी गली में खुलती थी. सामने एक होटल था. बैरे बचा-खुचा सालन, नान और रोटी के टुकड़े खिड़की के नीचे बेकरी की दीवार के पास फेंक देते. भिखारिनें, उनके बच्चे और कुत्ते जूठन के ढेर से हड्डियां उठाकर चचोड़ते तो किर्र...किर्र की आवाज़ें ऊधम मचा देतीं. बच्चे पत्थर पर नल्लियां मार-मार गूदा निकालने की नाकाम कोशिश करते. जब कोई हड्डी हाथ से निकल जाती तो कुत्ते भौंकना शुरू कर देते, एक दूसरे पर झपट पड़ते. अगर कोई भिखारिन गर्भ से होती तो दूसरी भिखारिनें अच्छी-अच्छी हड्डियां चुन-चुन उसकी झोली में डाल देतीं. अपाहिज भिखारी सूखी-सूखी रोटी के टुकड़े गले से उतार निश्चितता की सांस लेते.

मैदे को ख़ूबसूरत आकार देना मोदी का पेशा था. अंग्रेजों के राज़ में उसके बाप ने बड़े सुंदर केक बनाकर नाम पैदा किया और पैसा कमाया.

अपने हुनर के भेद उस्ताद मोदी सीने में सुरक्षित रखते थे. इन भेदों की जमानत उसके बाप ने उसे सौंपी थी और उसके दादा ने उसके बाप को. यह सिलसिला उस ज़माने को पहचानता था जिसमें लोगों ने पहली बार केक की सूरत देखी थी.

उस्ताद मोदी की दिली ख़्वाहिश थी कि वह अपने कला-कौशल को उसके उत्तराधिकारी तक पहुंचा दे. वह जानता था कि ज़िंदगी का कोई भरोसा नहीं. यह ज़रूरी नहीं, इंसान पहले बीमार पड़े और फ़िर मृत्यु को प्राप्त हो. उसने अपने दो जवान बेटों की अचानक मौत अपनी आंखों से देखी थी. इस कड़वाहट को दूर करने के लिए उसने सारा

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

ध्यान अपनी बेकरी में लगा दिया था. उस्ताद मोदी ने एक केक ऐसा
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तैयार किया, जिस पर इंसान का दिल रखा हुआ था. उस दिल में दो सूराख़ थे.

उस्ताद ने वह केक किसी को न दिया. वह केक ज्यों-का-त्यों शो-केश में पड़ा रहा. केक की जवानी ढ़लने लगी, तरो-ताज़गी झुर्रियों में बदलने लगी. वह बासी होकर एक-दिन मर गया. उस्ताद मोदी सोचने लगा कि अब उसकी अपनी जवानी भी ढल गई है, वह बासी हो गया है, अब वह मर जाएगा. दुनिया छोड़ने से पहले वह अपने धंधे के भेद फख़री के सीने में उतार देना चाहता था. उसके एक मात्र लड़के का नाम फख़रुद्दीन था, मगर अपने-पराए सब उसे प्यार से फख़री कहकर पुकारते. फख़री बी.ए. पास कर चुका था. वह नौकरी करने के विरोध में था. इसलिए उसने बेकरी में बाप का हाथ बंटाना शुरू कर दिया. फख़री बहुत कम बोलता था. मगर जब भी बात करता उस्ताद मोदी के स्वभाव को कड़वा कर देता. उस्ताद को फख़री की बातें विचित्र-सी लगतीं. फख़री अपनी बातें बेझिझक बाप के सामने रखता- "बेकरी में काम करने वालों के वेतन में बढ़ोत्तरी होनी चाहिए. मुनाफ़े का कुछ हिस्सा इन्हें भी मिलना चाहिए." इसके साथ ही कभी-कभी यहां तक कह देता कि अपने ही लिए जीना भी कोई जीना है. उस्ताद मोदी के दिल में यह धारणा-दृढ़ होती गई कि उसके बाद फख़री सारी संपत्ति बर्बाद कर देगा. उसने फख़री को समझाया कि दुनिया में रुपया बहुत बड़ी ताक़त है. अगर वह संपन्न न होता तो उसका नाम शहर की सभ्य और शिष्ट लोगों की सूची में न होता.

उस्ताद मोदी अपने कला-भेद की पहली क़िस्त फख़री को सौंप चुका था. अभी बहुत कुछ शेष था. वह स्थिति का निरीक्षण कर पूर्णतः आश्वस्त हो जाना चाहता था. उसे एक खुटका लगा रहता, अगर पेशे की बारीकियां फख़री ने किसी की बता दीं तो क़ारोबार का सत्यानाश हो जाएगा. उसने अपने बाप से सुना था कि व्यापार में साख रीढ़ की हड्डी है. थोड़े दिनों में उसने विश्वास कर लिया कि फख़री पेट में बात रख सकता है. इतना कच्चा नहीं. वह अपने बाप की तरह ख़ास कमरे में दरवाज़ा अंदर से बंद करके मन लगाकर काम करता. कारीगरों से

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

मतलब की बात करता. मगर दिन-त्योहार उन्हें अपनी जेब से ईनाम दे देता. यह बात उस्ताद मोदी को अखरती.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेकरी एक भरी और चौड़ी सड़क के किनारे दुकानों की लंबी लाइन में थी. उसके ऊपर कई कमरों का आलीशान मकान था, जिसमें उस्ताद मोदी और उसका छोटा सा परिवार रहता था. यह सारी संपत्ति उस्ताद मोदी की थी. ऊपर की मंज़िल को जाने के लिए दो अलग-अलग रास्ते थे. एक पक्की सीढ़ी जो बेकरी के बग़ल से शुरू होकर ड्राइंगरूम के दरवाज़े के सामने समाप्त होती थी. दूसरी, लकड़ी की सीढ़ी जो बेकरी के अंदर से बलखाती ऊपर निकल गई थी. काम करते कारीगरों की आवाज़ें बेकरी से उठकर ऊपर की मंज़िल तक पहुंच जाती थीं. आज बेकरी में पूर्णतः निस्तब्धता थी. कारीगर काम छोड़छाड़ बाहर निकल गए थे. कोई बराबर की दुकान के निकट बैठा सिगरेट पी रहा था, किसी ने चाय वाले के पास अड्डा जमा रक्खा था, कोई धूप सेंक रहा था.

उस्ताद मोदी ने ड्राइंगरूम की खिड़की में पड़ी चिक की ओट से बाहर झांका, लोग आपस में खुसर-पुसर कर रहे थे. एक लड़के ने चाक से दीवार पर लिख दिया, "हमारी तंख्वाहें बढ़ाओ." उस्ताद मोदी ने चिटखनी चढ़ा ली. आज उसका दबदबा डगमगा रहा था. इससे पहले तो बेकरी और घर में उसकी बात क़ानून की हैसियत रखती थी. उसके मन में पहली बार इच्छा जागी कि इन प्रतिकूल परिस्थितियों में किसी से राय लेनी चाहिए. फख़री बाहर गया हुआ था, मगर उसका मौजूद होना न होना बराबर था. कुछ इसलिए भी कि उस्ताद मोदी अपने बेटे से परामर्श लेना अपना अपमान समझता था. वह आईने के सामने जाकर खड़ा हो गया, अपना चेहरा देखा, सिर के बाल सफ़ेद, गालों पर झुर्रियां, ठोड़ी के नीचे लटकती खाल–अब तो उठते-बैठते समय उसके घुटनों में दर्द होता था, काम करते समय हाथों की अंगुलियां थरथराने लगती थीं. डॉक्टर ने तो कह दिया था कि यह लकवा होने के आसार हैं.

अचानक बेकरी में आवाज़ें सुनाई देने लगीं. उस्ताद मोदी दरवाज़ा खोलकर लकड़ी की बलखाती सीढ़ियों से नीचे उतर आया. फख़री कोट की जेब में हाथ डाले खड़ा था. कारीगर अपना-अपना काम कर रहे

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
थे, उमंग-उत्साह उनमें नए सिर से आ गया था, मैदे में मुक्कियां लगाई जा रहा थीं, अंडे फेंटे जा रहे थे, सांचों में लोशन चुपड़ा जा रहा था, तंदूर के अंदर आग के शोले उठ रहे थे. उस्ताद मोदी बेटे की बांह पकड़ कर कमरे में ले गया-

"फख़री बेटा! ये लोग काम पर वापस कैसे आए?"

"मेरे हुक्म से," बेटे ने धीरे से जवाब दिया.

उस्ताद मोदी कमरे से बाहर निकल गया. उसे दुःख हुआ, कल तक बेकरी में सिर्फ़ उसका हुक्म चलता था.

फख़री ने ख़ास कमरे का दरवाज़ा अंदर से बंद करके आस्तीनें चढ़ा लीं. वह साबुन से हाथ धोकर मेज़ के सामने खड़ा हो गया. उसके हाथों की अंगुलियां काम करने लगीं. कभी आहिस्ता, कभी जल्दी. जब उसके हाथ रुक जाते तो उसके भीतर का द्वंद्व उसकी आंखों में साफ दिखाई देने लगता. उसे अपने भीतर बेचैनी महसूस होने लगती. उसे लगता जैसे वह बूढ़ा हो गया है, कमर दोहरी हो गई है, सिर के बाल सफ़ेद हो गए हैं. सर्दियों की रात में वह एक दुकान के नीचे पड़ा थर-थर कांप रहा है, खांसते-खांसते उसका बुरा हाल हो गया है. पिछली सर्दियों में उसने एक बूढ़े भिखारी को इसी स्थिति में देखा था, एक हृदय-विदारक दृश्य देखकर वह दौड़ता हुआ अपने घर चला आया था. उसकी सांसें तेज़-तेज़ चल रही थीं.

"फख़री बेटा क्या बात है?" मां ने पूछा.

"मां! मुझे एक धुस्सा चाहिए."

"तुम परेशान नज़र आ रहे हो!"

"मां! नां! समय नष्ट न करो, मुझे एक धुस्सा तुरंत चाहिए."

मां ने बड़े संदूक से एक धुस्सा निकालकर बेटे को दे दिया. फख़री बाहर जाने लगा तो उस्ताद मोदी की आवाज़ आई-

"कहां जा रहे हो?"

"उस भिखारी के पास! वह जो सर्दी से कांप रहा है."

"और यह धुस्सा?"

"उसे देने जा रहा हूं."

"क्यों?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

"इसलिए कि इस धुस्से पर उस भिखारी का हक़ है." उस्ताद मोदी बेटे की बात सुन सोच में डूब गया.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज केक बनाते हुए अतीत की यह घटना उसकी आंखों के सामने घूम गई. वह अपने अंतर्द्वंद्व को केक के अंग-अंग में भरने लगा. दोपहर के खाने का समय हो गया था. दो-चार बार ऊपर से बुलावा आया. मगर वह अपने काम में उसी तरह डूबा रहा. अचानक किसी ने दरवाज़ा खटखटाया. फख़री ने दरवाज़ा खोला. सामने उस्ताद मोदी खड़ा था.

"शाबाश मेरे बेटे, मैं खुश हूं कि तुम जी लगाकर काम करते हो."

"शुक्रिया!"

"ठांय! ठांय!" एकाएक उस्ताद मोदी को यों अनुभव हुआ जैसे किसी ने उसके सीने पर गोलियों की बौछार कर दी. वह वितृष्णा भरी दृष्टि से मेज़ पर रखे केक की तरफ़ देख रहा था. केक पर बूढ़े भिखारी की आकृति बनी थी. हड्डियों का ढांचा, जिस्म पर चीथड़े, नंगे पांव, धूल में अटे सिर के बाल, गले में...उस्ताद मोदी को लगा, वह आकृति अपनी आंखों में ढेर से सवालों को लिए बढ़ी चली आ रही है.

"कौन ख़रीदेगा यह केक?" उस्ताद मोदी ने आर्त स्वर में कहा.

"हर चीज़ बेची नहीं जाती."

उस्ताद मोदी ने आव देखा न ताव, केक उठाकर बाहर फेंक दिया. "साहबजादे! लोग हमारी दुकान पर दुःख-दर्द की तस्वीरें ख़रीदने नहीं आते." उस्ताद मोदी यह कहकर ऊपर चला गया. फख़री ने बढ़कर खिड़की से बाहर झांका. जूठन के ढेर के पास भिखारिनें, भिखारी एक नंग-धड़ंग बच्चे के शरीर और सिर पर चिपके केक के लोंदे और फुटकियां हाथों से समेट-समेट, चपड़-चपड़ खा रहे थे. एक भिखारिन बच्चे का सिर ज़बान से चाटने लगी. दूसरी भिखारिन फख़री को आशा भरी दृष्टि से देखते हुए बोली-

"खुदा तुम्हारा भला करे, थोड़ा-सा और फेंक दो!"

जब कभी आवश्यकता पड़ती उस्ताद मोदी फख़री को अपने पास बुला लेता. एक दिन वह खुद चलकर बेटे के पास आया.

"फख़री बेटा!"

"जी, अब्बा जी!"

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

"यह देखो!" उस्ताद मोदी ने अपने दोनों हाथ हवा में फैला दिए. अंगुलियां कांप रही थीं. पतझर में गिरने से पहले सूखी-पीली पत्तियों की तरह. उस कंपकंपाहट से किसी बूढ़े पेड़ के टूटने की सी आवाज़ सुनकर फख़री को दुख हुआ.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"बेटा! यह मेरी प्रतिष्ठा का प्रश्न है."

"कहिए, क्या आदेश है?"

"मैंने अपने घनिष्ठ अंतरंग मित्र से वायदा किया था कि उसके बेटे के पहले जन्म-दिन पर ऐसा केक बनाऊंगा, जिसे देखकर लोग हतप्रभ रह जाएंगे. मेरे हाथ काम की बारीकियों का साथ नहीं दे रहे हैं."

"जन्म-दिन कब है?"

"परसों."

"आप निश्चिंत रहें."

उस्ताद मोदी ने निश्चिंतता की सांस छोड़ी और आश्वस्त हो गया. उसने केक की रूपरेखा अपने मस्तिष्क से निकालकर फख़री को सौंप दी. फख़री ने कड़े परिश्रम से जन्म-दिन का केक तैयार किया. जब उस्ताद मोदी ने ख़ास कमरे में प्रवेश किया तो उसके मुंह से विस्मय के साथ निकला, "सुब्हान अल्लाह!" केक के नीचे से लेकर ऊपर तक हर चीज़ फख़री के कलात्मक कौशल को प्रमाणित कर रही थी.

उस्ताद मोदी की अनुभवी आंखें जो बाहर और भीतर का निरीक्षण कर रही थीं, भावावेश में गीली हो गई.

जब उस्ताद मोदी ने केक से दृष्टि फेरी तो फख़री खिड़की से बाहर देख रहा था. "फख़री," उस्ताद मोदी बोला. उसके स्वर में संतुष्टि, विश्वास और आशीर्वाद के मिले-जुले भाव थे.

फख़री ने पलट कर देखा. उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे.

"क्या बात है बेटा?"

फख़री ने अंगुली से बाहर की तरफ़ इशारा किया.

उस्ताद मोदी ने बढ़कर खिड़की में से बाहर देखा-

भिखारिनें, झोलियां फैलाए जूठन के ढेर के पास खड़ी थीं. एक भिखारिन नंग-धड़ंग बच्चे के सिर पर हाथ रखकर बोली-

"खुदा तुम्हारा भला करे, इस बार झोली में फेंकना!"

अनुवाद : प्रमोद पांडेय

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

जमील जुबेरी

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक रबाब के तार

उस दिन सुबह से ही लोगों ने मैदान के चारों तरफ़ जमा होना शुरू कर दिया था. मौला दाद को कोड़े लगाए जाने वाले थे. उसे तीस कोड़ों और दो साल की कड़ी सज़ा मिली थी. उसने जुर्म भी ऐसा ही किया था. वह स्मगल किया हुआ माल अपनी दुकान में रखे हुए था और उसे चोरी छिपे बेच रहा था.

मौसम में कुछ ठंडक थी, इसलिए रियाज़ ने अपने मुंह और सर पर मफ़लर लपेट दिया था. चूंकि वह मैदान में समय से पहले पहुंच गया था, इसलिए उसे बहुत आगे जगह मिल गई थी, जहां वह ज़मीन पर अपना रूमाल बिछा कर आलथी-पालथी मार कर बैठ गया था. तमाशा देखने वाले बराबर आ रहे थे और अब उसके पीछे लाइनों में खड़े हो गए थे. सब लोग धीरे-धीरे बोल रहे थे. हर व्यक्ति पर कुछ ऐसा भय छाया हुआ था, जैसे यदि उसने ऊंची आवाज़ निकाली तो सामने खड़े हुए फौजी उसे भी पकड़ ले जाएंगे और फ़िर पता नहीं क्या हो? यद्यपि हर आदमी यह जानता था कि ऊंची आवाज़ में बोलने पर कोई पाबंदी नहीं, इसके खिलाफ़ अभी तक न क़ानून है और न ही कोई मार्शल-ला... फ़िर भी एहतियात तो ज़रूरी था.

फ़िर मैदान के बीचों-बीच में टिकटिकी ला कर रखी गई. रियाज़ की निगाहें घबरा-घबरा कर मुज़रिम को खोजने लगीं. टिकटिकी अजीब नाम रखा है इसका... वह सोचने लगा. उसने यह नाम कुछ दिनों पहले ही किसी अख़बार में एक तस्वीर के नीचे लिखी हुई लाइनों में पढ़ा था.... पहले तो उसने सिर्फ़ टिकटिकी बांधकर देखना ही सुना था. मगर अब तो एक मुज़रिम को टिकटिकी से बांधा जाने वाला था. उसने एक ठंडी सांस ली... अब तो सब कुछ बदल गया है. शब्द के अर्थ मुहावरे... इंसान ही बदल गया है तो और चीज़ों की बात ही क्या.

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसने टिकटिकी के पिछले हिस्से की तरफ़ देखा, जिधर मुजरिम का मुंह होता है... माइक लगाया जा रहा है जिससे हर कोड़े पर निकलने वाली चीख़ की आवाज़ अच्छी तरह सुन सकें. माइक फिट हो गया... फ़िर उसने देखा, दो सिपाही मौला दाद को पकड़कर ला रहे हैं... जैसे ही मौला दाद नज़र आया लोगों ने एक नारा लगाया और ज़ोर-ज़ोर से तालियां बजाने लगे... उनके लिए ख़ुशी का मौक़ा तो था ही. रियाज़ ने न तालियां बजाई और न ही नारा लगाया. वह सिर्फ़ यह सोचता रहा कि स्मगल किया हुआ माल आख़िर मौला दादा के पास आया कैसे होगा. समुद्र के रास्ते... हवाई जहाज़ों के द्वारा मगर... मगर कोस्ट कार्ड.. और कस्टम ऑफ़ीसर... इक्साइज़ वाले.

अभी वह सोच ही रहा था कि सिपाहियों ने मौला दाद के हाथ-पैर टिकटिकी से बांध दिए और किसी समय एक फ़ौजी देवहैकल (विशालकाय) काला भुजंगा आदमी, जिसने सिर्फ़ एक बनियान और नेकर पहन रखी थी हाथ में कोड़ा लिए आया.. उसके सामने आते ही फ़िर एक नारा बुलंद हुआ... लोगों ने फ़िर तालियां बजाईं.

कोड़े लगाने वाले को देख कर रियाज़ के जिस्म में एक कंपकंपी सी पैदा हुई और उसके रोंगटे खड़े हो गए... वह कुछ देर तक टिकटिकी बांधे उसे देखता ही रहा. कोड़े वाले की बड़ी-बड़ी काली मूंछें थीं और वह उसकी बाहर को निकली हुई बड़ी-बड़ी लाल आंखें दूर से देख सकता था. मौला दाद की कमर पर एक गद्दा बांधा गया ताकि कोड़ा उसके गुर्दों पर न लगे क्योंकि कोड़े लगाते वक़्त आदमी के गुर्दों का बहुत ख़्याल रखा जाता है.

फ़िर डाक्टर ने बढ़कर मौला दाद का मुआइना किया और उसे कोड़े लगाए जाने के फिट क़रार दिया. वहां मौजूद अफ़सर ने इशारा किया... रियाज़ ने कोड़े को हवा में लहराया हुआ देखा. फ़िर लाउड स्पीकर से उसे एक चीख़ सुनाई दी... मैं बेगुनाह हूं, मैं बेगुनाह हूं. .. . मुझे न मारो... मैं बिल्कुल बेगुनाह हूं... मैं बेक़सूर हूं..."

इसके बाद कुछ गड़बड़ हो गई. दूसरा कोड़ा अभी उठाया ही गया था कि हाथ के इशारे से, उसे रोक दिया गया. फ़िर कुछ मिलीजुली आवाज़ें आईं जिससे रियाज़ को पता चला कि पहला कोड़ा ही ग़लत हो गया. इसलिए इसे कैंसिल कर दिया गया. गिनती फ़िर से शुरू हो गई.

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

गिनती फ़िर से शुरू की गई... एक...दो... तीन, रियाज़ की आंखों में आंसू तैर रहे थे... वह इन आंसुओं में से दो बड़ी-बड़ी लाल-लाल आंखें और बड़ी-बड़ी काली मूंछें धुंधली-धुंधली सी देख रहा था... वही आंखें और वहीं मूंछें जिनसे वह ज़िंदगी भर ख़ौफ़ज़दा रहा था. उस दिन से जब उसके बाप का जनाज़ा घर में रखा हुआ था और वह पलंग की पट्टी पकड़े हुए ज़मीन पर बैठा रो रहा था और कह रहा था अब्बू...अब्बू. फ़िर उसके चचा ने उसे गोद में उठाने की कोशिश की. उसने पलंग की पट्टी को ज़ोर से पकड़ लिया और ज़्यादा चीख़-चीख़ कर रोने लगा. उस वक़्त उसके चचा ने उसके हाथ को एक ज़ोरदार झटका देकर, उसे ज़बरदस्ती गोद में उठा लिया और उसकी बड़ी-बड़ी काली मूंछें रियाज़ की आंखों और गालों में चुभ गईं. उसने ख़ौफ़ज़दा होकर चचा के चेहरे की ओर देखा, उसे दो उबली हुई लाल-लाल आंखें दिखाई दीं और वह और भी ज़्यादा ख़ौफ़ज़दा होकर उसकी गर्दन से लिपट गया. चचा इलियास ने उसे कमरे में ले जाकर एक पलंग पर डाल दिया और गरज़दार आवाज़ में कहा, "यहां ख़ामोश लेटे रहो."

इसके बाद लोग उसके अब्बू को उठा ले गए और उस जगह छोड़ आए, जहां से वह फ़िर कभी लौटकर नहीं आए.

एक दिन वह चचा इलियास के साथ उनके पीछे डरा-डरा आ रहा था. तभी एक ख़रबूजे वाला दिखाई पड़ा. उसकी मूंछें भी ज़रा बड़ी-बड़ी हैं. चचा ने उसे पुकार कर कहा, "मेरे घर आ जाना. ख़रबूज़े लेना है."

"अच्छा सरकार"... उसने जवाब दिया.

वह लोग फ़िर अपने घर की तरफ़ चल पड़े. वह घर में दाख़िल होने ही वाले थे कि ख़रबूज़े वाला अपनी टोकरी सर पर उठाए लगभग दौड़ता हुआ पहुंच गया. चचा वहीं रुक गए. उसने ख़रबूज़ों का टोकरा सर से उतार कर नीचे रखा. चचा ने पूछा, "इसमें इतने कम ख़रबूज़े क्यों हैं.

"जी वह रास्ते में मुझे मुंशी सरदार ने रोक कर कुछ ख़रबूज़े ख़रीद लिए." चचा दहाड़े, एक थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा और एक

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चीख़ सुनाई दी, "अबे हमसे पहले अच्छे-अच्छे दाने मुंशी सरदार को दे दिए." वह हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया.

"नहीं हुज़ूर... उन्होंने खुद ही..." चचा इलियास ने किचकिचा कर उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाया और एक ही झटके में उस ग़रीब की मूंछें उखाड़ लीं. उसके होंठों से ख़ून बहने लगा. फ़िर चचा ने उसके टोकरे में इस ज़ोर से लात मारी कि सारे ख़रबूज़े सड़क पर दूर-दूर तक फैल गए.... रियाज़ डरकर रोने लगा. "तुम क्यों रोते हो जी. चुप रहो जी." चचा की गरज़दार आवाज़ सुनाई दी. इसके बाद उन्होंने जेब से दो रुपए निकाल कर उसे दिए, "चलो उठाओ अपने ख़रबूज़े... और आइंदा से सबसे पहले मेरे पास आया करो."

ख़ून रोकने के लिए जो कपड़ा उसने अपने सर से उतार कर मुंह पर रख लिया था, वह अब पूरा ख़ून में भीग चुका था. उसे इसी हालत में छोड़ कर चचा इलियास घर के अंदर चले गए. उनके पीछे-पीछे रियाज़ डरा-डरा अंदर जाकर अपनी मां से लिपट गया.

चचा इलियास कुछ दिनों के लिए बाहर जा रहे थे. उन्होंने नौकर से कहा कि स्टेशन जाने के लिए तांगा ले आए. वह बहुत देर तक इंतज़ार करते रहे और तांगा नहीं आया, यहां तक कि ट्रेन जाने का वक़्त भी बिल्कुल क़रीब आ गया. वह बेचैनी से अपनी मूंछों को मरोड़ते हुए बार-बार बाहरी दरवाज़े तक जाते और लौट आते थे. आख़िर दरवाज़ा खटखटाया गया और वह दौड़कर बाहर निकले. रियाज़ जो उन्हें बड़ी देर से इस गुस्से की हालत में देख रहा था, चुपके-चुपके उनके पीछे बाहर आ गया. चचा ने कुछ नहीं कहा और लपक कर तांगे के अगले हिस्से पर चढ़ गए और उस तांगे वाले को इतना मारा कि वह बेहाल होकर नीचे गिर पड़ा, उसके मुंह से ख़ून जारी हो गया. इसके बाद चचा इलियास तांगे से उतरे और घर में वापस आकर यह ऐलान कर दिया कि उन्होंने अपना सफ़र मुल्तवी कर दिया है. उनका नौकर तांगे वाले को पिटता देखकर भाग गया और फ़िर कभी उन लोगों ने उसकी सूरत नहीं देखी.

रियाज़ की चची को अंडा बुरा लगता था. अंडे से उन्हें कुछ ऐसी एलर्जी थी कि उसकी महक से उन्हें मतली होती थी, मगर चचा इलियास सिर्फ़ अंडों का ही नाश्ता करते थे और उस पर ज़िद यह थी

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by JKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कि जब तक चची अपने हाथों से अंडा न तलेंगी, वह नहीं खाएंगे. रियाज़ अकसर देखता था कि चची सवेरे अपनी नाक पर ढांटा बांधकर बावर्ची खाने में जाती थीं और चचा के लिए अंडे तलकर मेज़ पर रख देती थीं. रियाज़ ने चची को अंडे मेज़ पर रखने के बाद अकसर गुसलख़ाने में जाते देखा था, जहां से उबकाने की आवाज़ें साफ़-साफ सुनाई देती थीं.

"मैं बेगुनाह हूं... मैं बेक़सूर हूं... मुझे मत मारो," रियाज़ के कानों में आवाज़ें आ रही थीं. ग्यारह...बारह.. तेरह... गिनती जारी थी, लोग नारे लगा रहे थे. "नारा-ए-तकबीर, अल्लाह हु अकबर." रियाज़ की आंखों से आंसू निकल कर गालों पर लुढ़क आए. चचा इलियास की ख़ौफ़नाक आंखें उसे साफ़ दिखाई दे रही थीं. गुस्से से उनकी भौहें थरथरा रही थीं. वह मामूजान से किसी बात पर झगड़ रहे थे, मामूंजान के हाथ में कोई काग़ज़ था, जो वह उनसे छीनना चाहते थे. कुछ ज़मीनों का झगड़ा मालूम होता था... रियाज़ एक कोने में दुबका खड़ा था. उसकी अम्मी एक कमरे में जाकर छुप गई थीं, फ़िर चचा इलियास ने मामूजान को ज़मीन पर गिरा दिया और उनके सीने पर चढ़कर बैठ गए और काग़ज़ छीनने की कोशिश करने लगे और उन्हें मारना शुरू कर दिया. मामूजान ने घबरा कर वह काग़ज़ मुंह में रख लिया. चचा इलियास ज़बरदस्ती उनका मुंह खोलने की कोशिश करते रहे मगर उनको नाकामी हुई. मामूजान ने वह काग़ज़ निगल लिया.... चचा उनके हलक़ में उंगलियां डालकर उसे निकालने की कोशिश करते रहे जिससे मामूजान को उल्टी हो गई... चचा ने उसी वक़्त उनके मुंह पर घूंसा मारा कि उनके मुंह से ख़ून भी बहने लगा...

"मुझे न मारो...मुझे न मारो.... मैं बेक़सूर हूं" रियाज़ के कानों में बराबर आवाज़ आ रही थी... मगर गिनती जारी रही. कोड़े लगाने वाला कुछ क़दम पीछे हटता, कोड़ा हवा में लहराता, वातावरण में एक कंपकंपाहट पैदा होती और लाउडस्पीकर से चीख़ सुनाई देती... फ़िर सिसकियों की आवाज़ आने लगती.

फ़िर एक दिन रियाज़ की चची ने भी ज़ुल्मों की ताब न लाकर दम तोड़ दिया.... रियाज़ भी उनके जनाज़े के साथ-साथ क़ब्रिस्तान गया
Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
और उसने अपनी मज़लूम चची को क़ब्र में उतारते देखा और चचा को यह कहते भी सुना, "हां, बेचारी बड़ी ही नेक औरत थी और बस"... फ़िर घर में बहन, उसकी मां और चचा इलियास रह गए.

और जिस दिन उनके चचा ने उसकी मां से शादी की, उस दिन शायद पहली बार उसने चचा इलियास को हंसते देखा और उसे कुछ ऐसा लगा कि जैसे अनहोनी हो गई हो. मगर उनकी यह हंसी भी बस कुछ ही देर की थी. कुछ दिनों में चचा ने रियाज़ की मां के साथ भी वही सुलूक करना शुरू कर दिया, जो वह चची के साथ करते थे. वह बेचारी दिन-रात घर का कामकाज किया करती, खाना पकाती, बर्तन धोती, लेकिन जब खाना चचा के सामने रखा जाता तो आए दिन वह गुस्से में बर्तन उठाकर फेंक देते. उन्हें रियाज़ की मां के हाथों पकाई हुई कोई चीज़ पसंद ही न आती थी... रियाज़ रातों को कमरे में लेटा मां के रोने की आवाज़ें सुना करता. उसे तनहा डर भी लगता था, जाड़ों की रातों में वह जब भी लिहाफ़ से मुंह निकालता तो उसे चचा की लाल-लाल आंखें अंधेरे में चमकती दिखाई देतीं और वह डरकर मुंह ढक लेता.

सड़ाक...सड़ाक... अट्ठारह-उन्नीस...बीस, कोड़े बराबर लग रहे थे, अब मौला दाद की आवाज़ भी आनी बंद हो गई थी, सिर्फ़ कराहने की आवाज़ सुनाई दे रही थी.

चचा इलियास रियाज़ को बेल्ट से मार रहे हैं... "तू आवारा हो गया है, स्कूल से भागा, और आज गोश्त लेने भी नहीं गया." रियाज़ उन्हें बताना चाह रहा था कि वह गया था...मगर दुकान बंद थी... मगर चचा उसे मारे जा रहे थे... और वह बराबर कह रहा था "दुकान बंद थी... मुझे मत मारो... मुझे मत मारो...." फ़िर वह बेहोश होकर गिर पड़ा और उसके बाद क्या हुआ, उसे कुछ याद नहीं.

और फ़िर एक दिन इलियास ने रियाज़ की मौजूदगी में गुस्से में आकर उसकी मां को छत से धक्का दे दिया. वह नीचे गिरी और फ़ौरन मर गई... उस वक़्त इलियास की लाल आंखें रियाज़ को इतनी लाल दिखाईं देती थीं कि शायद उनमें ख़ून उतर आया हो. उसकी मां के मरते ही पड़ोसी इकट्ठा हो गए, घर में एक कोहराम-सा मच गया और ज़रा-सी देर में पुलिस उनके दरवाज़े पर पहुंच गई. इलियास के

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पड़ोसी ने, जो बराबर वाली छत पर उस वक़्त मौजूद था, इलियास को धक्का देते हुए देख लिया था और उसने जाकर पुलिस को इत्तला दे दी थी.... और आज चचा इलियास की चौधराहट ख़त्म हो गई और उनकी लंबी-लंबी काली मूंछों की चढ़ी हुई नोंकें नीचे लटक गई थीं.

जिस समय पुलिस वाले इलियास को हथकड़ी पहनाकर ले जा रहे थे, रियाज़ को पता नहीं क्या हुआ, वह दौड़कर उनसे लिपट गया और चीखने लगा. "इन्हें मत पकड़ो... इन्हें मत पकड़ो. अम्मा तो छत से गिर गई हैं. इन्हें मत ले जाओ. इनको पकड़ रहे हो. इन्हें मत ले जाओ, मैं अकेला रह जाऊंगा."

यह लड़कपन की बातें थीं... उसने ज़िंदगी का बहुत-सा सफ़र तय कर लिया था, मगर वह आज भी अकेला है, इस वक़्त भी अकेला है; वह सोच रहा है, इतनी बड़ी भीड़ है, मगर मैं फिर भी अकेला हूं.

गिनती जारी है. इक्कीस, बाइस, तेइस और जब कराहने की आवाज़ भी बंद हो गई तो पता नहीं रियाज़ को क्या हुआ, वह अपनी जगह से उठा और दौड़कर उसने कोड़े लगाने वाले को पकड़ लिया और चीख़ने लगा... इसे मत मारो... इसे मत मारो... मैदान में बहुत-से लोग दौड़ पड़े और उसकी आवाज़ चीख़ों में दब गई.

अनुवाद : डॉ. मुहम्मद इशतियाक़

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मंसूर कैसर

शाह दूल्हा के चूहे

[पाकिस्तान के शहर गुजरात में एक मज़ार हज़रत शाह दूल्हे की है, जिस पर जाकर अनपढ़ देहाती लोग बच्चों की मन्नत मानते हैं और फिर मन्नत पूरी करने के लिए अपना पहलौटी का बच्चा चढ़ावे के तौर पर दे आते हैं. बाद में मज़ार के मुजाविर बच्चे को लोहे की टोपी पहनाकर उसके सर की बाढ़ को रोक देते हैं. इस तरह के बच्चे शाह दूल्हा के चूहे कहलाते हैं और उनसे आमतौर पर भीख मंगवाई जाती है.]

उस रोज़ हकीम सनाई के दवाख़ाने में जो पहला मरीज़ गया, वह अपना नाम भूल चुका था. बार-बार नाम पूछने पर उसने अपनी जेब से पहचान का कार्ड निकालकर हकीम सनाई के सामने रख दिया और कहा-- "इस कार्ड पर जो नाम लिखा है, यही मेरा नाम है." हकीम साहब ने ताज्जुब से कहा-- "हैरत है तुम अपना नाम भी भूल गए हो."

मरीज़ कुछ जवाब देना चाहता था. उसने सहमे हुए होंठों को हिलाया भी था, वीरान होंठों पर सूखी ज़बान भी फेरी, लफ़्ज़ रेत की तरह बिखर गए. हकीम साहब ने उसे तसल्ली दी और नब्ज़ देखने से पहले उसे सुर्ख़ शर्बत का एक गिलास पिलाया ताकि उसकी तबीयत में सुकून आए और वह अपने मर्ज़ की निशानियां बता सके । शर्बत पीने के बाद आंखों में फैली हुई दहशत धीरे-धीरे एक चमक में बदलने लगी, हलक़ में उगे हुए कांटे मुलायम होने लगे तो वह बोला--"हकीम साहब! यही मेरी बीमारी है कि मैं अपने आपको भी याद करने की कोशिश करता हूं तो याद नहीं कर पाता, वैसे मुझे और कोई तक़लीफ़ नहीं, भूख बहुत लगती है, ख़ुराक ख़ूब खाता हूं, वह हज़्म भी हो जाती है, लेकिन यही खदबद परेशान किए रहती है कि ये याद नहीं आता कि मैं कौन हूं, मेरा नाम क्या है, मेरी अपनी अलग धरती भी थी, लेकिन

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gr

अब वह कहां है? मालूम नहीं, क्या इन्हीं परेशानियों ने अपने जबड़ों में
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मुझे जकड़ रखा है.

हकीम सनाई ने उसे तसल्ली दी और एक पुड़िया अपने सामने खिलाते हुए पूछा-- "ये निसयान की बीमारी कब से है?" मरीज़ बोला-- "ये याद भी नहीं, शायद हमेशा से हो." हकीम ने टोका--"नहीं ये पुराना मर्ज़ नहीं है, कुछ साल पुराना लगता है वरना नार्मल आदमी तो दुनिया में आने के फ़ौरन बाद अपनी पहचान के अमल से गुज़रने लगता है. कहीं ये बात तो नहीं कि तुम अपने माज़ी को याद नहीं करना चाहते--"

"मुझे तो ये नहीं मालूम कि मेरा कोई माज़ी भी था कि नहीं--" मरीज़ ने कहा.

हकीम साहब ने पूछा--'तो आजकल तुम्हारे दिन-रात कैसे गुज़रते हैं?"

मरीज़ ने जवाब दिया--"सुबह से शाम मैं और मेरी बीवी सारे घर में अगरबत्तियां जलाते हैं और क्योड़े से नहाते हैं, नहाने से पहले सर को कमर के पीछे करके क्योड़े से कुल्ला करते हैं, ताकि दिमाग़ तमाम गंदगियों से पाक हो जाए!"

"यह दिमाग़ साफ़ करने का तरीक़ा किसने बताया था"-- हकीम सनाई ने हैरत से पूछा--"इस बारे में हमने रेडियो पर शहर के मौलवी की तक़रीर सुनी थी. मौलवी साहब बड़े सच्चे इंसान हैं. इन्हें ऐसी ही ख़िदमत के सिले में सत्रह ग्रेड से उन्नीस ग्रेड में तरक़्क़ी दी गई है!" ये बात सुनकर हकीम साहब के होठों पर मुस्कराहट बिखर गई और वह आंखों में शरारत समेट कर बोले-- "तुम दोनों मियां-बीवी सुबह-शाम नहाते हो तो इसका ताल्लुक़ तुम दोनों का जिस्मानी भी होता है--" मरीज़ यह बात सुनकर घबरा-सा गया, डर से उसका रंग पीला पड़ गया, ज़बान लड़खड़ाने लगी! हकीम साहब ने जब अपना सवाल दोहराया तो मरीज़ सिर्फ़ इतना कह पाया--"जी नहीं हमें कोड़ों से डर लगता है-"

इतनी देर में दवाखाने में एक आदमी ऐसा पंघोड़ा लेकर दाख़िल हुआ, जिसमें एक मोटा ताज़ा जवान लड़का अंगूठा चूस रहा था. लड़के ने माथे पर दोनों हाथ रखकर हकीम सनाई को लंबा-चौड़ा सलाम
Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
किया. हकीम साहब ने नए आने वालों की ओर ध्यान देने से पहले दवाख़ाने में मौजूद पहले मरीज़ को छः पुड़ियां, एक लाल शर्बत की बोलत और एक जवारिश ज़ालीनूस की डिबिया देते हुए कहा--" एक हफ़्ते के बाद आकर अपनी हालत बताओ, परहेज़ सिर्फ़ इतना है कि अपनी बीबी को अपने पर हराम करो--" मरीज़ के चले जाने के बाद हकीम सनाई नए आने वाले की ओर मुड़ा. उसने पूछा-- "इस नौजवान को पंघाड़े में क्यों रखा हुआ है?" नया आने वाला बोला--"ये मेरा बेहद लाडला बच्चा है. ये हम घर वालों का इतना चहेता है कि हम एक लम्हे के लिए भी इसे अपने से जुदा नहीं कर पाते. पैदाइश के बाद हमने इसे पालने में ही रक्खा और ये वहीं पड़े-पड़े जवान हो गया." इस पर हकीम साहब ने पूछा--

"फ़िर इस नौजवान की दिलचस्पियां क्या हैं, ये अपने आप को कैसे मसरूफ़ रखता है-?"

"सिर्फ़ टेलीविज़न देखता है."

"इसकी तालीम का क्या करते हो?"

"इसकी ज़िम्मेदारी भी हमने टेलीविज़न को दे रक्खी है."

"इसका कोई दोस्त नहीं?"

"जी नहीं! सिर्फ़ टेलीविज़न के प्रोग्राम हैं."

"कभी इस नौजवान को शहर से बाहर या मुल्क से बाहर सैर करवाई है?"

"जी नहीं! हकीम साहब!" पिता बोला-- "मैं पहले ही कह चुका हूं कि ये बच्चा हमारा बहुत ही चहेता है, हम इसे अपने से दूर नहीं रख सकते, असल में हम खुद भी इधर-उधर घूमने से अपने आप को बचाते हैं कि इस तरह हमारे कान गंदी बातों से बचते हैं, हम अपने बच्चों को एक अच्छा इंसान बनाना चाहते हैं! हम नहीं चाहते कि इसे बुरे माहौल की हवा भी लगे"-- हकीम सनाई ने नौजवान बच्चे की नब्ज़ देखते हुए कहा-- "ये बिल्कुल सेहतमंद है इसे कोई तक़लीफ़ नहीं--"

बाप ने कहा--"वैसे तो इसे कोई तक़लीफ़ नहीं सिर्फ़ इसमें बोलने की ताक़त नहीं है, वैसे ये गूंगा नहीं है, सलाम करता है, मैं सिर्फ़ इसलिए हाज़िर हुआ हूं कि इसे ऐसी दवाई दें जिससे इसमें बोलने की

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हिम्मत हो जाए." हकीम सनाई ने लाल शर्बत की बोतल और कुछ गोलियां देते हुए हिदायत दी कि एक हफ़्ते बाद आकर बच्चे की हालत बताएं, उसे चलने फ़िरने की आदत डालें, गोश्त खिलाने से परहेज़ करें, सिर्फ़ एक मशवरा है कि घर का सौदा नौकर की जगह इस बच्चे से मंगवाएं, खुदा चाहेगा तो इसकी बोलने की ताक़त आ जाएगी."

इतनी देर में एक और मरीज़ लाठी टेकते हुए मतब में दाख़िल हुआ. उसने रंगदार चश्मा पहन रक्खा था. हकीम सनाई ने हालत पूछी तो वह बोला--"हरे रंग का शर्बत पीने से बीनाई कुछ बहाल हो गई है. आज मैं खुद ही आ गया हूं, किसी मददगार को साथ नहीं लाया." हकीम ने उसे टोकते हुए कहा-- "लेकिन शर्बत तो लाल रंग का था ?"

"अच्छा." मरीज़ हैरत से बोला मगर मुझे तो सब चीज़ें हरी ही नज़र आती हैं, पिछले हफ़्ते सीढ़ियों से गिरकर मुझे जो चोट आई थी, उससे भी हरा ख़ून निकला था--"

हकीम सनाई ने मशवरा दिया, "शर्बत का इस्तेमाल जारी रखो! आंखों में शहद डालो, रंगदार चश्मा पहनने से परहेज़ करो, एक हफ़्ते बाद अपनी हालत बयान करना--"

मरीज़ के जाने के बाद हकीम के सर में भारीपन महसूस होने लगा, उसे कुछ दिनों से सर के बोझिलपन के दौरे पड़ रहे थे, लेकिन उसकी वजह समझ में नहीं आ रही थी, सुबह नाश्ते के समय उसने लाल शर्बत भी पिया था. उसका ख़्याल था कि सर के बोझ की एक वजह शायद ये भी हो कि उसका जिस्म मोटा हो रहा हो, इसी ख़्याल से उसने फ़ैसला किया कि वह दोपहर और शाम का खाना नहीं खाएगा, सिर्फ़ लेमू में नमक मिलाकर पिएगा.

हकीम सनाई ने अभी एक पुड़िया खाई ही थी कि दवा और मरीज़ इकट्ठे ही मतब में दाख़िल हो गए. एक मरीज़ यूं डरा हुआ नज़र आ रहा था जैसे कोई उसका पीछा कर रहा हो, हकीम साहब ने उसे आराम कुर्सी पर बिठाते हुए कुछ देर सुस्ताने के लिए कहा और दूसरे मरीज़ की तरफ़ ध्यान दिया. --मरीज़ ने कहा-- "हकीम साहब, मुझे तो और कोई तक़लीफ़ नहीं कुछ दिनों से मेरे कान बंद हो गए हैं, कुछ सुनाई नहीं देता, इस बहरेपन ने मेरी ज़िंदगी अजीरन कर रक्खी है--"

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हकीम साहब ने एक पर्ची उसके सामने कर दी जिस पर लिखा था-- "इस मौसम में बहरापन बहुत मुफ़ीद है यानी बातें सुनने से जिस क़दर बचोगे भले में रहोगे--" इस पर मरीज़ ने उदास होकर कहा-- "जनाब, ये बहरापन तो अज़ाब है. मुझसे जो भी लिखकर बात करता है, वह किसी न किसी शक्ल में मुझ पर हुक्म चलाता है, मेरे पास इसके सिवा कोई चारा नहीं होता है कि मैं इस हुक्म को बजा लाऊं, बोलना तो सुनने का मोहताज होता है--" हकीम साहब ने बताया कि वह दवाई लेकर एक हफ़्ते बाद आकर हालत बताएं. अब उन्होंने सुस्ताने वाले मरीज़ की तरफ़ ध्यान दिया. वह उसी तरह डर से कांप रहा था-- उसने पूछा-- "पहला मरीज़ कहां गया?" हकीम साहब ने बताया कि वह दवाई लेकर चला गया है. मरीज़ बोला--"वह मरीज़ नहीं था जी, वह तो मेरा पीछा कर रहा था. वह बाज़ार के नुक्कड़ से ही मेरा हमक़दम हो गया था, मैं जो भी बात करता, वह कोई जवाब नहीं देता था--"

हकीम साहब ने इसे तसल्ली देते हुए कहा--"नहीं शक-शुबहे की ऐसी कोई बात नहीं. वह तो बहरेपन का शिकर है--" फ़िर हकीम साहब ने पूछा-- "तुम डरे हुए क्यों हो?" मरीज़ ने इधर-उधर देखते हुए सरगोशी में जवाब दिया-- "क्या अर्ज़ करुं, मेरा तो जीना अज़ाब हो गया है. मुख़बिर लोग हर वक़्त मेरे पीछे लगे रहते हैं, मेरी हर हरकत नोट करते रहते हैं, दफ़्तर में मेरे साथ जो लोग काम करते हैं, वह भी मेरी मुख़बिरी पर तैनात हैं, साए की तरह मेरे साथ रहते हैं."

"घबराने की कोई बात नहीं. मुमकिन है कि तुम्हें वहम हो गया हो, तुम्हारे साथी तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते--" हकीम सनाई बोले.

"क्यों नहीं बिगाड़ सकते?" मरीज़ की आवाज़ की दहशत के पत्थरों तले कुचली हुई थी-- "पहले वह जो कुछ करते थे, दफ़्तर में करते थे, फ़िर उन्होंने मेरी बीवी को भी अपने गिरोह में शामिल कर लिया. वह घर में मेरी मुख़बिरी करने लगी, मेरे सोने के कमरे में भी प्राइवेसी न रही, जब ये सूरत बर्दाश्त के बाहर हो गई तो मैंने अपनी बीवी और जवान बेटी को घर से निकाल दिया--"

"अब वह कहां है?" हकीम साहब ने पूछा.

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

बीवी तो मैके चली गई, लेकिन अच्छा हुआ कि उसे कैंसर हो गया है, कुछ दिनों के बाद जब वह मर जाएगी तो फिर वह मुख़बिरी नहीं कर सकेगी. मेरी जवान बेटी दूसरे शहर में अपनी ख़ाला के यहां चली गई है. उसे वी.सी.आर. देखने का शौक़ है, जो उसकी ख़ाला के घर में है. मुझे किसी ने बताया है कि मेरी बेटी भी मुख़बिरी करती थी--''

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''आपकी बीवी और बेटी आपकी मुख़ालिफ़ कैसे हो गईं?''

''इसलिए कि जो आराम वह मुझसे मांगती थीं, वह मेरे दुश्मनों ने इकट्ठा कर दिया--'' हकीम साहब ने इसे भी सुर्ख़ शर्बत की बोतल, जवारिश की एक डिबिया और कुछ टिकिया देकर कहा-- ''दूसरों की तरफ़ देखने के बजाए अपने गिरेबान में देखते रहा करो, अगले हफ़्ते आकर फ़िर नब्ज़ दिखाना.'' हकीम साहब के सर का दर्द बढ़ रहा था. उन्होंने एक नींद वाली गोली खाई और दवाख़ाना बंद करके चले गए.

कुछ ही दिनों बाद शहर में एक अजीब हवा फैल गई. जिसे देखो वह यही शिकायत कर रहा था कि उसका सर सिकुड़ता जा रहा है और कूल्हे के नीचे का जिस्म फैलता जा रहा है और ये मर्ज़ वैसे तो कोई तक़लीफ़ नहीं देता सिवाय इसके कि सोचने की हिस ख़त्म हो जाती और भूख बढ़ जाती! प्रभावित लोग इलाज के लिए हकीम सनाई के पास जाना शुरू हो गए, इनमें कुछ पुराने मरीज़ भी शामिल थे.

एक रोज़ यूं हुआ हकीम सनाई का दवाख़ाना ख़राब और बेतुके जिस्मों वाले मरीज़ों से अटा पड़ा था, लेकिन हकीम साहब खुद ग़ायब थे. कई घंटे तक इंतज़ार करने के बाद मरीज़ परेशान हो गए. उन्हें डर था कि अगर हकीम साहब वापस न आए तो उनका इलाज कौन करेगा! अगर इलाज न हुआ तो सर हमेशा के लिए सिकुड़ के रह जाएंगे. अभी शाम नहीं हुई थी कि एक आदमी ने मरीज़ों के सामने आकर बताया कि हकीम साहब ने हुजरे के दरवाज़े को अंदर से बंद कर रखा है क्योंकि उनका सर भी सिकुड़ गया है और कूल्हे के नीचे जिस्म फैल गया है और सबसे बढ़कर ये कि उन्हें अपना नाम भी याद नहीं आ रहा.

अनुवाद : अली अहमद फ़ातमी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

नईम आरवी
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गोधरा कैंप

उसके बाल हवा से उड़ रहे थे. चेहरे पर वहशत बरस रही थी और उसने दोनों हाथों से मज़बूती से कंटीले तारों को पकड़ रखा था. बंद मुट्ठियों से ख़ून की बूंदें इधर-उधर से रास्ता पाकर कलाइयों पर फिसल रही थीं. वह अपने चारों तरफ़ से बेपरवाह चीख रही थी, चिल्ला रही थी: "शम्शु...उद्दीन...शम्शु...द्दीन..."

कंटीले तारों के बाहर रेत के एक टीले के क़रीब काफ़ी लोग जमा थे. अंदर हाते में, चार-पांच बंगाली औरतें उसे वहां से ले जाने की कोशिश में थीं. औरतें उसे बंगाली में कुछ समझाने की कोशिश करतीं मगर वह तो जैसे पत्थर का बुत बनकर रह गई थी. किसी चीज़ का असर उस पर नहीं हो रहा था. वह जब चिल्लाने के लिए अपना मुंह खोलती तो उसकी बड़ी-बड़ी सियाह आंखों में भय व पीड़ा की चिंगारियां सी उड़ने लगतीं और उसकी आवाज़ स्याह रात के सन्नाटे में किसी भटकती हुई बेचैन आत्मा की आवाज़ सी प्रतीत होती, "शम्शु... शम्शु...उद्दीन..."

टीले के क़रीब उधर से गुज़रने वाले इक्का-दुक्का राहगीर वस्तुस्थिति जानने के लिए कुछ देर के लिए रुक जाते. इस तरह वहां अच्छी ख़ासी भीड़ लग जाती. आपस में कानाफूसी और टीका-टिप्पणी होने लगती.

एक नौजवान लड़का जो सूरत-शक्ल से मोटर मेकेनिक मालूम होता था, बड़ी देर से लोगों की हवाईयां सुन-सुनकर उकता गया था, ने ख़ास शरणार्थियों वाले लहज़े में बताया कि मैं यहां से क़रीब रहता हूं, यह औरत पागल है. हर रोज़ तमाशा करती है. पहले दिन हमें भी बड़ी जिज्ञासा रही. दरअसल बात यह है कि उसका शौहर भी फ़ौज में था, एटाबाद में पोस्टिंग थी. एक दिन मौका पाकर चंद बंगालियों के साथ जो उसके साथ फ़ौज में थे, फ़रार होकर ढाका पहुंच गया और वहां मुक्तवाहिनी के साथ लड़ता हुआ किसी मोर्चे पर मारा गया. उसकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

मौत की ख़बर जब उसकी बीवी को मिली तो वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठी. अक्सर जब उस पर दौरे पड़ते हैं तो वह कांटेदार तारों को पकड़कर इसी तरह चीखती-चिल्लाती है. शम्शुद्दीन उसके शौहर का नाम है. नौजवान लड़के ने कहानी ख़त्म करके विजयी अंदाज़ में उन लोगों की तरफ़ देखा जो एक दायरे में खड़े बड़ी दिलचस्पी से कहानी सुन रहे थे.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अच्छा तो यह पागल औरत गद्दार बंगाली की बीवी है."

"जी हां."

"पागल है?"

"जी हां."

"ठीक...ठीक"

तमाशाइयों की भीड़ छंट गई. थोड़ी देर में वहां सन्नाटा छा गया और रेत का टीला तेज़ धूप की गर्मी से सनसनाने लगा. वहां से पागल औरत भी जा चुकी थी. कांटेदार तारों में उसकी साड़ी का फटा हुआ पल्लू मुर्दा जिस्म की तरह झूल रहा था. मगर उसकी दिल छील देने वाली चीखों की प्रतिध्वनि लंबे-चौड़े मैदान में अब भी मंडरा रही थी. "शम्शु..शम्शुद्दीन.."

गोधरा कैंप के क़रीब काफ़ी अरसे से फ्लैट बन रहे थे. रेंग-रेंग कर, आहिस्ता-आहिस्ता. शुरू में थोड़ी सी दिलचस्पी रही फ़िर निगाहें उकता गईं. गाड़ी उधर से गुज़र जाती मगर ख़्याल तक न आता कि इस लंबे-चौड़े रेत के मैदान में बन रहे फ्लैटों में थोड़े दिनों के बाद ज़िंदगी की गर्मी दौड़ जाएगी. और सुनसान क्षेत्र जहां आदम न आदमजाद, आबादी में तब्दील होकर कुछ मुद्दत के लिए इंसानी निगाहों का मरकज़ बन जाएगा और जब हम उसे देख-देखकर थक जाएंगे तो फ़िर उसकी तरफ़ से मुंह मोड़कर शान से गुज़र जाएंगे, कभी कहीं ज़िक्र आ जाएगा तो बड़ी उकताहट से कह देंगे, "हां गोधरा कैंप हमारे रास्ते में पड़ता है."

मगर यह बात भी तय है कि हर काम हमारी सोच के मुताबिक़ नहीं होता, अकसर हम जो सोचते हैं, जो मंसूबे बनाते हैं, उसके बिल्कुल उल्टी बातें सामने आती हैं और हमारी कल्पना के खाके पुर्जे-पुर्जे होकर बिखर जाते हैं. गोधरा कैंप के सामने से गुज़रना मेरा

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोज़ का मामूल था और अब उसकी तामीर में मेरी कोई दिलचस्पी न थी लेकिन उस दिन मेरी हैरत की सीमा न रही, जब मैंने देखा, दो बुलडोज़र बड़ी तेज़ी से अहाते की ज़मीन को बराबर कर रहे थे और उसके चारों तरफ़ कांटेदार तारों की बाड़ लगाई जा रही थी. दूसरे महायुद्ध की फ़िल्मों की तरह हू-ब-हू जंगी क़ैदियों का कैंप दिखाई दे रहा था. अहाते के दरवाज़े पर चौकी क़ायम हो चुकी थी और रात के वक़्त भारी-भारी सर्चलाइटों की रोशनी से पूरा इलाक़ा, जो हर वक़्त तारीकी में डूबा रहता था, इस वक़्त दिन का समां पेश कर रहा था, वेशुमार मज़दूर ज़ोर-शोर से काम में मसरूफ़ थे.

मैंने अपना चश्मा साफ़ करके उस तब्दीली को एक बार फ़िर बड़ी हैरत से देखा तो मेरी सीट के क़रीब बैठे एक अधेड़ उम्र के देशभक्त शहरी ने ख़शख़शी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा, "अलहम्दो लिल्लाह कि गद्दार बंगालियों को ग्राउंड कर दिया गया." "मैं समझा नहीं," मेरे लहज़े की हैरत व मासूमियत का लुत्फ़ लेते हुए वह बोला, "मैं डिफेंस सोसाइटी के जिस बंगले में काम करता हूं, उसका मालिक एक रिटायर्ड कर्नल है. उसने मुझे बताया कि गोधरा कैंप में जो फ्लैट्स तामीर हो रहे हैं, उनको फ़िलहाल कैंप में तब्दील कर दिया गया है. उसमें ग्राउंड किए जाने वाले एयरफोर्स के बंगाली अफ़सरों की फेमिली रहेगी. उन्हें एक तरह से ज़ेरे हिरासत रखा जाएगा." बड़े मियां ने निहायत सावधानी से दाढ़ी में अंगुलियों से कंघी करते हुए कहा, "अजी, ये लोग तो संपौलिए निकले, मुसलमान होते हुए कमबख़्त हिंदुओं से मिल गए. पाकिस्तान को तबाह कर दिया. चार साढ़े चार फुट के इन काले-कलूटों ने हमें बड़ा तंग किया. अच्छा हुआ जो इनसे छुटकारा मिल गया. आख़िर पाकिस्तान इनका बोझ कब तक बरदाश्त करता."

गोधरा कैंप या नज़रबंदी कैंप बंगाली ख़ानदानों से आबाद हो चुका था. उधर से गुज़रते हुए निगाहें ज़रूर उठ जातीं. छह मंज़िला फ्लैटों की पांच इमारतें एक दूसरे के पहलू में स्वप्निल-स्वप्निल सी नज़र आतीं. सीढ़ियों के क़रीब ही दीवार के साथ सुबह व शाम के वक़्त चंद वैंचें डाल दी जातीं. उन पर अकसर अधेड़ उम्र के बंगाली जिनकी ठोड़ियों पर चुनगी दाढ़ी उगी होती और जिनकी छोटी-छोटी आंखों के नीचे मकड़ी की जालियां तनी होतीं, बड़े ध्यान से डान और पाकिस्तान

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

टाइम्स पढ़ते नज़र आते. लुंगी और बनियान में वे दूर से पहचान में आ जाते. उनके करीब ही सांवले-सलोने बच्चे दौड़ते-भागते, चीखते-चिल्लाते, गेंद बल्ला खेलते रहते. कभी कोई बड़े मियां बच्चों के शोर से तंग आ जाते तो रुककर दाढ़ी खुजाते और नाक की फुंगी पर अटके हुए चश्मे के ऊपरी हिस्से से घूरते हुए बड़ी ज़ोर से घुड़कते, "ऐ छैले, गुंडो, गोल करो ना." कभी-कभी फ्लैट की खिड़की खुलती और कोई औरत अपना सारा बोझ खिड़की पर डालकर चिल्लाती, "ताड़ा-ताड़ी इश्शू."

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह रोज़ का मामूल था. कांटेदार तारों पर भीगे हुए कपड़े, साड़ी, लुंगी, लिहाफ़, बनियान बच्चों के निकर हवा और चमकदार धूप में गोली खाए जिस्मों की तरह झूलते रहते. गोधरा कैंप में पहरे का बड़ा सख़्त इंतज़ाम था. मेनगेट पर एक चौकी बनी हुई थी, जिस पर बैठा हुआ सशस्त्र पहरेदार इजाज़तनामे के बग़ैर किसी बाहरी आदमी को अंदर व अंदर से बाहर न जाने देता. चौकी के साथ ही कैंप था, जिसमें ड्यूटी देने वाले संतरी अपनी बारी से आराम और छुट्टी के वक़्त गुज़ारते. पागल औरत चीखती-चिल्लाती जब कभी कांटेदार तारों को झिंझोड़ती हुई अपने हाथों को लहूलुहान कर लेती तो कोई पहरेदार आख़िर इंसानी जज़्बात से मजबूर होकर पहुंच जाता और उसे वहां से ले जाने में मदद देता.

काफ़ी दिन गुज़र गए. उस मंज़र में कोई तब्दीली न हुई. इलाक़े वाले भी मायूस हो गए. अलबत्ता जब कभी सफ़र के दौरान बसों व मिनी बसों में सियासत की बात छिड़ जाती तो उसमें बैठे लोग बंगालियों की "ग़द्दारी" पर दुःख से हाथ ज़रूर मलते. "बंगाली न किसी के होते हैं और न होंगे, एक दिन देखना भारत की भी ऐसी-तैसी कर देंगे."... "मुजीब ग़द्दार है, शुरू से अलग होने की साज़िश कर रहा था."... "अजी ये सब कहने की बातें हैं, बंगालियों से ज़्यादा वतन से प्यार करने वाला कौन है. पूर्वी बंगाल ने सबसे पहले पाकिस्तान के हक़ में राय दी थी. शेरे बंगाल फ़ज़लुलहक़ ने क़रारदारे पाकिस्तान की पेशकश थी."

"बकवास है, कायदे आज़म की किसने मुख़ालफ़त की थी, जब उन्होंने ढाका में कहा था कि पाकिस्तान की सिर्फ़ एक क़ौमी ज़बान उर्दू

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है. किन लोगों ने उनके खिलाफ़ नारे लगाए. कौन कहता है मशरिक़ी पाकिस्तान को मग़रिबी पाकिस्तान ने लूटा. यह नफ़रत तास्सुब और इलाक़ा परस्ती के बीज कौन बोता है, सबको मालूम है."

"न मुजीब गद्दार है और न बंगाली साज़िशी, न मशरिक़ी पाकिस्तान को मग़रिबी पाकिस्तान के आवाम ने लूटा. दोनों जगहों के आवाम ग़रीब और एक ही जैसे हालात का शिकार हैं, लूटने वाले वहां भी चैन से हैं और यहां भी आराम से. पाकिस्तान सियासतदानों की काली करतूतों से टूटा, नाइंसाफ़ी और ग़रीबी की वजह से अलग हुआ." यह पढ़े-लिखे एक तीसरे साहब का तबसिरा था. कुछ लोग सहमति में ज़ोर-ज़ोर से गर्दन हिलाने लगे और जो लोग सहमत न थे, वे बदमज़गी से मुंह चलाते हुए खिड़की से बाहर देखने लगते, "कम्युनिस्ट है स्साले. ..कम्यूनिस्ट!"

"भाई मियां, मैं तो कहूं कि सारी ज़िम्मेदारी याहिया पर आती है, साले रंगीले ताज़दार ने मुल्क का बेड़ा ग़र्क़ कर दिया."

"याहिया क्यो, भुट्टों को क्यों नहीं इल्ज़ाम देते. उसी ने तो कहा था कि ख़ुदा ने पाकिस्तान को बचा लिया. कहां बचा पाकिस्तान? टंटा हो गया, मरवा दिया स्साले ने."

"भुट्टो ने क्या किया?"

"याहिया को ग़लत मशविरा दिया. हुकूमत को अंधेरे में रखा. फ़ौज को ज़लीलोख़्वार किया. क्या महज़ इक़्तदार हासिल करने के लिए."

"अगर भुट्टो ने ग़लत मशविरा दिया तो याहिया खां और उसके सलाहकारों की अक़्ल पर क्या पत्थर पड़ गया था. भई यह क्यों नहीं कहते कि यह सब मार्शल ला का किया धरा है. जहां मार्शल ला, वहां सब कुछ मुमकिन. कुसूर तो उन लोगों का है, जो इक़्तदार की कुर्सी पर बैठे हुए थे. भुट्टो को नहीं याहिया को पकड़ो, जो स्याह-सफ़ेद के मालिक हैं."

"और वह लोग क्या तुम्हारे बाबा लगते है, जो धानमंडी जाते हुए अपनी कारों पर बंगलादेश का परचम लगाते थे."

कभी-कभी जब बातचीत इस 'बिंदु' पर आ जाती तो झगड़े की नौबत आ जाती. तू-तड़ाक के बाद गाली-गलौज़ और हाथापाई शुरू हो जाती. लेकिन ज़्यादातर तो होता यह कि बहस-मुबाहिसा और

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

कठहुज्जती किसी बड़े हंगामें में तब्दील न होती. चंद लम्हों के बाद जज़्बात में उबाल कम होता तो सब ठंडे पड़ जाते. वैसे भी दिन भर की जी तोड़ मेहनत के बाद जिस्म के पुर्ज़े-पुर्ज़े ढीले हो जाते हैं. लड़ने-भिड़ने की ताक़त कहां रह जाती है. इस क़िस्म के बहस-मुबाहिसे और झगड़े के दौरान एक दिलचस्प बात अमूमन नज़र आती. कोई ऊंघता हुआ मुसाफ़िर शोर सुनकर हड़बड़ाकर आखें खोलता, कुछ देर हालात का जायज़ा लेता और फ़िर किसी न किसी लहज़े में समझदारी के फूल बिखेरता, "भाईयों, आपस में क्यों लड़ते हो, लड़नेवालों को क्यों नहीं पकड़ते. क्या हमारे नसीब में ऊपर वालों के इशारों पर नाचना और लड़ना ही रह गया है चा...चा."

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गोधरा कैंप के क़रीब मिनी बस एक धचके के साथ रुक गई. काफ़ी देर से मुसाफ़िर खड़े थे. मेरी निगाहें ग़ैरइरादी तौर पर कैंप की जानिब उठ गईं. एक बार फ़िर मुझ पर हैरतों के पहाड़ टूट पड़े. पूरा कैंप खाली पड़ा भांय-भांय कर रहा था. मुख्य द्वार पर म्यान वाले और झेलम के लंबे तड़ंगे, बड़ी मूंछों और सुर्ख आंखों वाले पहरेदार भी मौजूद नहीं थे. मेनगेट का एक बड़ा दरवाज़ा तिरछा होकर खुला हुआ था. मैदान में अख़बारात के फटे हुए सफ़ात, चिपके हुए टीन के डिब्बे, पुरानी चादरें, गंदे लिहाफ़ के टुकड़े और फटे-पुराने तकियों की रुई हवा के तेज़ झक्कड़ से उड़ती फ़िर रही थी. बेंचें ग़ायब थीं. चुग्गी दाढ़ी वाले अधेड़ उम्र के बंगाली जो बड़े ध्यान से डान और पाकिस्तान टाइम्स पढ़ा करते थे और बच्चों को उनकी शरारतों पर डांटते थे और वह बंगाली औरतें जो सारा-सारा दिन बावर्चीखाने में काम करतीं और कभी-कभी खिड़की से सर निकालकर अपने बच्चों को पुकारती थीं और वे सारे सांवले-सलोने छोटे-छोटे बच्चे और बच्चियां, जो मैदान में खेलते और लड़ते-झगड़ते थे, कहीं चले गए थे. पांचों फ्लैटों की इमारतों के कमरे और खिड़कियां मुर्दे की आंख की तरह तारीक, गहरी और भयानक दिखाई दे रही थीं. ज़िंदगी के सारे आसार ग़ायब थे.

मैंने न चाहते हुए भी क़रीबी सीट पर बैठे हुए जुकामशुदा शख़्स से सवाल किया तो उसने सबसे पहले मेरा जायज़ा लिया. सुड़-सुड़ करती नाक को उसने कई बार अपनी मोटी-भद्दी और निशानज़दा अंगुलियों से पोंछा. बाद इसके उसने भर्राई हुई आवाज़ में जबाब दिया, "बंगाली थे,

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बंगलादेश चले गए. भुट्टो ने मुजीब और बंगालियों को छोड़कर बहुत बुरा किया. पहले बिहारियों का मसला तय करना चाहिए था. जिन पर वहां क़यामतें टूट रहीं हैं. बेचारे बिहारी....''

काफ़ी दिनों तक कैंप वीरान पड़ा रहा है. मैं सोचता, अब यह फ्लैट दूसरों को एलाट किए जाएंगे. मेरी ख़्वाहिश थी कि मैं इन फ्लैटों को अंदर से देखता. बंगाली जिस मानसिक दबाव से गुज़र गए थे, यक़ीनन मुख़्तलिफ़ शक्लों में उसकी निशानियां छोड़ गए होंगे. उनका अध्ययन एक दिलचस्प तजुर्बा होता. नए आने वाले तो दीवारों, फ़र्श और छतों पर रंग रोगन करके उन तमाम निशानियों को हर्फ़ेगतल की तरह मिटा देंगे. भला उन्हें इस बात से क्या दिलचस्पी हो सकती है.

मामूल की आम्दोरफ़्त में मज़ीद एक हफ़्ता गुज़र गया. गोधरा कैंप में कोई ख़ास तब्दीली नज़र न आई. मेरी दिलचस्पी धीरे-धीरे कम हो रही थी कि एक दिन फ़िर बड़ा हैरत अंगेज़ मंज़र फ़िल्मों की तरह निगाहों के सामने घूम गया. बिल्कुल बंगालियों से मिलते-जुलते लोग मैदान में घूम रहे थे. उसी तरह सांवले-सलोने बच्चे मैदान में खेल रहे थे, गंदे, नंग-धड़ंग. मर्दों के चेहरों पर ख़ाक उड़ रही थी और औरतें थकी-थकी, निढाल, बेज़ान क़दमों के सहारे कामकाज में मसरूफ़ थीं. उनकी आंखों में मायूसी और चेहरे पर दहशत की परछाईयां डरावने ख़्वाब का किस्सा सुना रहीं थीं. मैं मिनीबस से उतरकर बड़े क़रीब से मुहब्बे वतन (देशभक्त) बिहारियों के पहले लुटे-पुटे काफ़िले का जायज़ा ले रहा था. पुलिस और फ़ौज का पहरा न था. बस इतना ही यहां से जाने वाले बंगालियों और वहां से आने वाले बिहारियों में फ़र्क़ था. बाक़ी सब कुछ एक जैसा था. इंसान के हाथों इंसान के क़त्ल होने का हौलनाक मंज़र.

कांटेदार तारों के क़रीब एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी हुई ज़मीन पर लकीरें खींच रही थी. बिहारी औरत चाहे कुछ हो जाए सर पर आंचल ज़रूर डालती है. मगर उसका सर नंगा था, साड़ी मैली और उस पर जगह-जगह पैबंद लगे थे. मुझे क़रीब देखकर सर उठाया. क्या बताऊं उसकी सादी आंखों में क्या था. वह कई लम्हें खाली-खाली निगाहों से घूरती रही. फ़िर अचानक उठ खड़ी हुई और मेरे क़रीब

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आकर सवाल किया, "निहाल मिला था... निहाल, बबुआ निहाल मिल जाए तो कहियो तुम्हारी मां इंतज़ार करत है."

शाम को जब वापस हुआ तो मिनी बस मुसाफ़िरों से खचाखच भरी हुई थी. गोधरे पर गाड़ी पहुंची तो एक नौजवान ने जो सूरत-शक्ल और लिबास से सब्ज़ी फ़रोश मालूम हो रहा था, खिड़की के शीशे जल्दी में खोलकर कैंप की जानिब देखा. उसके होंठों पर बड़ी मानीखेज (अर्थपूर्ण) मुस्कराहट थी. उसने अपने दूसरे साथियों से, जो पूरी सीट पर कब्ज़ा जमाए बैठे थे, कहा, "रशीदे, कल चलेंगे, सुना है बहुत सी बेआसरा लौंडियां आई हुईं हैं."

अनुवाद : बादशाह हुसैन रिज़वी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्रेटमैन

आधी रात से कुछ ज़्यादा वक़्त गुज़रा होगा कि नूरां उठकर बिस्तर पर बैठ गई और अंधेरे में इधर-उधर देखने लगी. शायद वह इस तारीक़ी में किसी ऐसी किरन की तलाश में थी जो उसकी आंखों के रास्ते दिल में उतर जाए.

यह पहली रात न थी जब वह इस क़दर बेताब हो गई थी कि आधी रात से ज़्यादा लेट ही न सकी. ऐसी कई रातें आईं, और इन रातों में या तो वह सारे वक़्त करवटें बदलती रही, या उठकर एक तरफ़ बैठ गई थी. और फ़िर एक लम्हे के लिए भी सो नहीं सकी थी.

वह एक ग़रीब बेवा थी. दुनिया में उसका कोई भी सहारा नहीं था. घर का ख़र्च चलाने की ख़ातिर वह मुहल्ले के घरों में काम करने पर मजबूर थी. इसका उसे अफ़सोस ज़रूर था, मगर यह कोई ऐसा ग़म नहीं था कि वह पूरी की पूरी रात आंखों में गुज़ार दे. उसके ग़म की असली वजह उसका बेटा था. छब्वीस साल का 'नवाब' जो अंदर कमरे में सो रहा था.

'नवाब' से उसे यह शिकायत नहीं थी कि वह कुछ पढ़-लिख नहीं सका था, कोई कामकाज नहीं करता था, घर की ज़िम्मेदारियों में कोई हिस्सा नहीं लेता था. ऐसी बातों का गिला तो उसे उस वक़्त होता जब 'नवाब' एक नार्मल इंसान होता और वह नार्मल इंसान था ही नहीं.

मां ने जब उसका नाम 'नवाब' रखा था तो वह चाहती थी कि उसका बेटा बड़ा होकर दौलतमंद बने, आप खाए और मां को खिलाए. वह नवाब था तो मगर ख़्याली दुनिया का. उसके दिल में यह यक़ीन पैदा हो गया था कि वह एक बहुत बड़ा आदमी है और सबके सब उसकी इज़्ज़त करते हैं, एहतेराम करते हैं. और उसकी अज़्मत का एतराफ़ भी करते हैं. वह ख़ुद को ग्रेटमैन समझता था और वह इस बिना पर कि चिराग़दीन ठेकेदार का बड़ा लड़का जो किसी कालेज में

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पढ़ता था. उसने नवाब को बताया था कि तुम ग्रेटमैन हो. यह लफ़्ज़ सुनकर नवाब हवन्नकों की तरह उसे देखने लगा था.

"अरे मियां, तुम ग्रेटमैन हो. ग्रेटमैन का मतलब है बड़ा आदमी. तुम बड़े आदमी हो यानी ग्रेटमैन हो. समझे?" नवाब ने ये लफ़्ज़ याद कर लिए थे, और उन्हें समय-समय पर बिना ज़रूरत अपने होंटों पर ले आता था. मुहल्ले में अकसर लोग मज़ाक़न उसे ग्रेटमैन कहकर ही पुकारते थे और इस तरह पुकारे जाने पर वह फूला न समाता था. पहले-पहल मां ने सोचा था, अभी छोटा है. यह नहीं सोच सकता कि लोग ग्रेटमैन कहकर उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं. जब बड़ा हो जाएगा तो असल हक़ीक़त समझ लेगा. मगर उसकी यह उम्मीद ख़ाक में मिल गई. क्योंकि नवाब दूसरों के मज़ाक़ को मज़ाक़ समझ ही न सका. वह ख़्याल करता था कि मुहल्ले के छोटे-बड़े जो मुस्करा-मुस्कराकर, झुक-झुककर उसको सलाम करते हैं, और ग्रेटमैन कहकर मुख़ातिब करते हैं तो यह सब-के-सब वाक़ई उसका एहतेराम करते हैं और हक़ीक़त में उसे ग्रेटमैन ही समझते हैं. और यूं वह ज़्यादा से ज़्यादा एब्नार्मल होता चला गया.

नूरां सिर्फ़ यह चाहती थी कि उसका बेटा बेशक एक फूटी कौड़ी भी कमा कर घर में न लाए, दिन भर बेकार बैठा रहे. मगर वह यह बर्दाश्त नहीं कर सकती थी कि वह काम करने के लिए जिस घर में जाए, घर के लोग हंस-हंसकर उससे पूछें.

"नूरां! क्या हाल है तेरे नवाब का, यह तेरा ग्रेटमैन क्या कर रहा है?"

वह इस व्यंग्य को ख़ूब समझती थी और यही एहसास उसके लिए इस क़दर अज़ीयत नाक हो गया था कि उसका जी चाहता था, काश उसका बदबख़्त बेटा मर जाए ताकि हर रोज़ ज़हर के घूंट तो न पीने पड़ें.

मुहल्ले के लड़के आए दिन उसके साथ कोई न कोई वारदात कर बैठते थे. उसे किसी महफ़िल में सदर बनाया जाता था और जब वह बैठने लगता था तो कुर्सी खिसका कर उसे गिरा दिया जाता था और फिर माफ़ी मांग ली जाती थी. उसे ऐसी मिठाई खिलाई जाती थी जिसमें नमक भरा होता था. उसकी शान में ऐसे क़सीदे पढ़े जाते थे, जिनमें

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उसका जी भरकर मज़ाक़ उड़ाया जाता था. लेकिन वह था कि इस सारे मज़ाक़ को अपनी शान में इज़हारे अक़ीदत समझता था.

अगले दिन उसके गले में एक बड़ा-सा हार डाला गया था जिसमें फूलों के साथ कपड़े में लिपटी हुई कोई चीज़ भी थी. नवाब यह हार पहनकर बड़ी शान से घर की तरफ़ जा रहा था और मुहल्ले के बच्चे उसके पीछे तालियां बजा रहे थे. अब वह घर की दहलीज़ पर पहुंचा तो मां ने उसका हार नोंच लिया और कपड़े में लिपटा पुराना जूता निकालकर तालियां बजाने वाले बच्चों पर दे मारा और कम से कम आधे घंटे तक उन्हें बद्दुआएं देती रही.

उसका बेटा इतना अहमक़ हो गया है कि यह भी नहीं समझ सकता कि लोग उसे ज़लील कर रहे हैं, यह बात उसके लिए तक़लीफ़देह दे बन गई थी, और वह अपनी ज़िल्लत के एहसास से अपनी मौत आप मांग रही थी. मगर उसका बेहया बेटा था कि मां से लड़ रहा था.

"मां तू पागल हो गई है, ये मेरी इज़्ज़त करते हैं."

"इज़्ज़त करते हैं. इज़्ज़त करने के लिए गले में जूते के हार डाले जाते हैं?" और उसने बेटे को इस ज़ोर से दोहत्तड़ मारा कि वह बिलबिला उठा.

नूरां के घर में जब भी ऐसा हंगामा बरपा होता तो आमतौर पर अम्मां 'बसाई' भागती हुई आ जाती थी और वह वही फ़िक़रा कसती थी जो वह कई बार कह चुकी थी.

"नूरां वह तो पागल है, तू भी पागल हो गई है?"

और नूरा इसके जवाब में अपने कुर्ते का दामन फैलाकर ऊपर देखते हुए भर्राई हुई आवाज़ में कहती--

"अल्लाह! इसे किसी की आई आ जाए या मुझे उठा ले."

उस दिन भी उसने यही दुआ मांगी थी और नवाब यह कहकर दरवाज़े में से निकल गया था, ये कहकर- "अब मैं इस घर में कभी नहीं आऊंगा."

मगर आदत के मुताबिक़ वह शाम को घर आ गया था और इस वक़्त अंदर कमरे में सो रहा था.

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नूरां के ज़ेहन में तल्ख़ी भर गई. उसने चारपाई से नीचे उतर कर घड़े में से ठंडे पानी से मिट्टी का वह प्याला भरा जिससे घड़े को ढ़ांपा गया था. ठंडा पानी जब उसके हलक़ के नीचे उतरा तो उसे ज़रा सुकून मिल गया. मगर वह सुकून आरज़ी था, क्योंकि उसे फ़िर एक बात याद आ गई थी जिसने उसे तड़पा कर रख दिया था.

मियां नूर मोहम्मद के यहां जो औरत बर्तन मांजा करती थी, वह बीमार होकर गांव चली गई थी, और मियां साहब की बीवी ने नूरां को कहलवा भेजा था कि वह उसके यहां काम करे. नूरां को तो काम करना था, कहीं भी हो. वह मियां साहब के यहां चली गई.

जिस वक़्त वह दालान में से गुज़र कर कमरे में पहुंची, मियां साहब अपनी खिचड़ी दाढ़ी में कंघी फेर रहे थे.

नूरां ने सलाम किया.

'वालेकुम अस्सलाम, नूरां बहन, क्या हालचाल हैं?'' मियां साहब ने कंघी मेज़ पर रखकर सुरमेदानी उठाई और आंखों में सुरमा डालते हुए यह सवाल किया.

''अल्लाह का शुक्र है मियां जी--''

''हां शुक्र ही अदा करना चाहिए-- पर बंदा बड़ा नाशुक्रा है.''

''जी मियां जी.''

''क्या काम है नूरां बीवी?''

''वह जी आपकी बेगम ने बुलाया है. फ़ातमा बीमार होकर चली गई है ना.''

मियां साहब ने नूरां को ज़रा ग़ौर से देखा.

''तो तुम फ़ातमा की जगह काम करोगी.''

नूरां ने हां में सिर हिला दिया.

''पर नूरां बहन! तेरा बेटा तो ग्रेटमैन है, ग्रेटमैन की मां दूसरों के बर्तन नहीं मांजा करती.''

नूरां के दिमाग़ में जैसे शोला-सा भड़क उठा और इस शोले की गर्मी उसके सारे बदन में सरायत कर गई.

मियां साहब मुस्कराकर उसे देख रहे थे. यह मुस्कराहट उसे ज़हर लगी, और वह एक लम्हे भी वहां न ठहर सकी. उस वक़्त वह ख़ामोश

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रही थी. मगर अब जो उसे यह बात याद आ गई तो वह मियां साहब को बद्दुआएं देने लगी.

"मियां तेरा जनाज़ा उठे, तुझे सांप डस जाए."

वह बद्दुआएं दे रही थी और उसके अपने अल्फ़ाज़ उसके कानों में इस तरह उतर रहे थे जैसे उनमें गर्म-गर्म तेल डाला जा रहा है. एक बार फ़िर उसने भरा हुआ प्याला होंठों से लगाया और तीन-चार लंबे घूंट भरे. आधा पानी ठुड्ढी पर से गुज़र कर गर्दन को छूता हुआ गरेबान तक जा पहुंचा और वह प्याला हाथ में लिए यूं ही सामने की दीवार को घूरती रही.

आसमान में सितारे फीकी-फीकी रोशनी दे रहे थे और हर तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था. ऐसे में, जब मियां नूर मोहम्मद के कोठे से मुर्ग़े की कुकड़ू कूं कहती हुई आवाज़ बुलंद हुई, तो उसे एहसास हुआ कि वह कहां है, और क्या कर रही है.

मुर्गा बांग पर बांग दे रहा था, और नूरां का जी चाहता था कि वह अगर उसके क़रीब होती तो उसकी गर्दन ही मरोड़ डालती. उसने मियां साहब की बीवी को दिल ही दिल में गालियां दीं जिसने उसे पाल-पोसकर इतना ताक़तवर बना दिया था कि उसकी आवाज़ मुहल्ले में दूर-दूर तक गूंज उठती थी.

नूरां को मालूम था कि मुर्ग़ा बांग देता था तो उससे थोड़ी देर बाद मस्जिद से अज़ान की आवाज़ भी आने लगती है. मगर इस सुबह सिर्फ़ मुर्ग़ा ही सारी फ़ज़ा पर छाया हुआ था. अज़ान की आवाज़ नहीं आई. शायद मुअज़्ज़िन सो गया था या मुर्ग़े ने वक़्त से पहले ही लोगों को जगाना शुरू कर दिया था.

नूरां घड़े के पास खड़ी रही. प्याला अभी तक उसके हाथ में था.

उसने प्याला औंधा करके घड़े के मुंह पर रख दिया और फ़िर बरामदे का दरवाज़ा खोलकर दूसरे कमरे में चली गई. यह कमरा नवाब का ड्राइंगरूम भी था, कामन रूम भी और ख़्वाबगाह भी. दीवारों पर भी पुराने कैलेंडर, अंग्रेज़ी और देशी एक्टरों की तस्वीरें और वे हार लटके हुए थे जो नवाब के साथियों ओर अक़ीदतमंदों ने ख़ास-ख़ास मौकों पर उसके गले में डाले थे. उनके फूल मुरझाकर छोटे-छोटे टुकड़ों की सूरत में नीचे गिरे हुए थे.

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नूरां ने अंदर क़दम रखा तो सबसे पहले उसकी नज़र चारपाई के नीचे फ़ौजी बूट पर पड़ी.

भारी-भरकम बूट गुलाम अहमद कुरैशी सर्राफ़ के बेटे ने 'नवाब' को दिए थे और यह कहकर दिए थे कि ग्रेटमैन ऐसे ही बूट पहना करते थे.

नवाब को भला ऐसे बूट पहनने पर क्या ऐतराज़ हो सकता था. उसने बड़ी शान से बूट लिए. शदीद गर्मी की वजह से उसको महसूस हुआ जैसे उसके पैरों को गर्म-गर्म शिकंजों में कस दिया गया है. लेकिन ग्रेटमैन को तो सब कुछ करना ही पड़ता है.

उसके पास ये खौफ़नाक बूट देखकर नूरां के अंदर बेज़ारी की लहर दौड़ गई.

"तौबा मेरे अल्लाह" उसके मुंह से बेअख़्तियार निकला और उस वक़्त उसकी नज़र बेटे के चेहरे पर पड़ी. उसका चेहरा पीला-पीला दिखाई दे रहा था और उस पर पसीने के क़तरे चमक रहे थे.

नूरां को ऐसा महसूस हुआ कि उसके होंठ हरकत कर रहे हैं. पर वह क्या कह रहा था, नूरां को सुनाई नहीं दे रहा था. मगर वह जानती थी कि वह सोते में भी कोई ढंग की बात नहीं करता. एक-दो बार जब वह दालान में सोया हुआ था उसने बेटे को बड़बड़ाते हुए पाया, और जब अपने कान उसके होठों के क़रीब ले गई थी तो उसने सुना, वह कह रहा था, अम्मां मैं ग्रेटमैन हूं, मां तुम नहीं समझती मैं क्या हूं, ग्रेटमैन, ग्रेटमैन. उसने मुंह दूसरी तरफ़ फेर लिया. लेकिन दूसरे ही लम्हे वह फ़िर से टकटकी बांधकर देख रही थी.

'नवाब' का माथा सूजा हुआ था और मच्छर उसके चेहरे पर उड़ रहे थे.

नूरां बेक़रार हो गई और उसके हाथ बेअख़्तियारी के आलम में बेटे की तरफ़ बढ़ने लगे. उसने ज़ोर-ज़ोर से उसके कंधों को हिलाया. नवाब ने परेशान होकर आंखें खोल दी.

"क्या है अम्मां?"

"मुरदार, मुंह पर मक्खियां उड़ रही हैं."

नवाब ने ज़हरीली नज़रों से मां को देखा.

"अम्मा! तुझे हज़ार बार कहा है, ज़रा अदब से बात किया करो."

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

"क्यों रे, अदब से बात क्यूं करूं? तू मेरा जना है या तूने मुझे जना है?"

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अम्मा" नवाब ने हाथ से मच्छरों को हटाते हुए कहा, "तू जानती नहीं, मैं ग्रेटमैन हूं."

नूरां ने ज़ोर से ज़मीन पर थूका.

"लाख लानत तेरी ग्रेटमैनी पर. सब तेरा मखौल उड़ाते हैं. तूने मेरे घर की ख़ाक उड़ा दी है."

'नवाब' अब उठ कर बैठ गया था और अपनी अंगुलियां माथे पर फेर रहा था, "अम्मा तू नहीं जानती, मैं ग्रेट मैन हूं. ग्रेटमैन! बड़ा आदमी. लोग मेरी इज़्ज़त करते हैं. मुझे देखते हैं तो फ़ौरन खड़े हो जाते हैं, सुना तूने, लोग मुझे आते हुए देखते हैं उसी वक़्त उठ खड़े हो जाते हैं, क्योंकि मैं ग्रेट मैन हूं. ऐसी इज़्ज़त ग्रेट मैन की ही की जाती है."

नवाब का चेहरा जोशे-बयान से सुर्ख़ हो गया था. उसके नथुने फड़क रहे थे और वह उस व़क्त बड़ा मज़हका ख़ेज़ दिखाई दे रहा था. फ़िर न जाने क्यों मां की ममता जाग उठी. उसे अपने बेटे का वह चेहरा दिखाई दे रहा था जो बरसों पहले उसकी छाती से दूध पीते-पीते छाती पर दांत मार देता था और वह दर्द से बेक़रार हो जाती थी. छाती उसके मुंह से निकाल लेती थी. लेकिन जब वह रोने लगता था तो उसे सीने से चिपटा कर फ़िर छाती उसके मुंह में डाल देती थी.

उसने हाथ बढ़ा कर उसके सर के सख़्त बालों पर फेरा और यह एहसास करके कि इन बालों में तेल नहीं पड़ा हैं उसका दिल और दुखी हो गया.

"न, न, न बेटे न"

नवाब कुछ समझे बग़ैर उसे देखे जा रहा था.

"तू समझता क्यों नहीं. अल्लाह, उनको सांप काटे उनके जनाज़े निकलें."

नवाब जानता था कि उसकी मां किन लोगों को बददुआएं दे रही है.

"नहीं अम्मां, वे मेरी इज़्ज़त करते हैं," वह बोला.

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

“इज़्ज़त नहीं करते, तेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं.” नूरां ने अपना हाथ
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बेटे के सिर से उठा लिया था.

“अम्मां. वे आज मेरा जुलूस निकालेंगे! मेरे गले में--” “जूतियों के हार डालेंगे. मुंह पर थूकेंगे. ज़ोर-ज़ोर से हंसेंगे, क़हक़हे लाएंगे, बेशर्म बेहया-” नूरां ने बात पूरी की.

दोहत्तड़ मारने के लिए उसके हाथ ऊपर उठे और फ़िर वापस आ गए.

“अम्मां तू पागल हो गई है.”

नूरां के होंठ थरथराने लगे, “अरे मैं पागल हो गई हूं कि तू ही पागल है ? तेरा दिमाग़ फिर गया है. इज़्ज़त और बेइज़्ज़ती में फ़र्क ही नहीं करता. अल्लाह, तुझे किसी की आई आए, तुझे हैज़ा हो जाए” बेटे से बहस के ख़त्म होने पर वह इसी क़िस्म के फ़िकरे कहती थी और बार-बार माथे पर हाथ मार कर क़िस्मत को कोसती थी.

वह दरवाज़े की तरफ़ मुड़ी, मगर फ़ौरन ही पलट गई. “मैं कहती हूं आज तू घर से नहीं निकलेगा,” उसने हुक्म दनदनाया.

नवाब सर हिलाने लगा, गोया कह रहा हो जो दिल में आए कह ले, होगा वही जो मैं कहता हूं.

“मैं कहती हूं तू घर से नहीं निकलेगा, वरना...”

“मेरा जनाज़ा निकलेगा, यही न! निकलने दो अम्मां, जनाज़ा ही निकलने दो.”

वह बर्दाश्त न कर सकी. नवाब पर पिल पड़ी. उसे धक्का देकर चारपाई पर गिरा दिया और उसके हाथ नवाब के चेहरे, सीने और पेट पर बरसते रहे. थक-हार कर वह दरवाज़े से बाहर निकली, कुंडी लगाई और लस्सी लाने के लिए मियां नूर मोहम्मद के घर जाने लगी.

उस रोज़ वह दोपहर तक घरों में काम करती रही और यह भूल ही गई कि वह नवाब को कमरे में बंद कर आई है. दो बजे क़रीब वह लौटी. शेख़ अल्लाह दत्ता के घर से वह तंख़्वाह नहीं लेती थी. बल्कि उसके एवज़ में अपना और अपने बेटे का खाना लेती थी, और उस रोज़ वह चार रोटियां और एक बर्तन में साग लिए घर में आई. रोटियां और साग का बर्तन उसने चूल्हे के पास रख दिया. बंद दरवाज़ा देखकर “हाय मेरे रब्बा” उसके मुंह से निकला और जल्दी से उसने

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

दरवाज़ा खोला और देखा कि नवाब चारपाई पर आंखें बंद किए पड़ा है.
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"नवाब, बेटे नवाब," उसने बेटे को पुकारा.

नवाब ने कोई हरकत न की.

"क्या मज़े से सो रहा है."

नवाब पर फ़िक़रे का कोई असर न हुआ. नूरां ने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया. यकलख़्त उसे ऐसा लगा कि उसने अपने बेटे का हाथ नहीं चूल्हे पर रखा हुआ तवा पकड़ लिया है. वह डर गई.

"नवाब, बेटे नवाब"- नवाब ने आंखें खोल दीं,"जुलूस वाले आ गए हैं." वह उठ खड़ा हुआ और दूसरे ही लम्हे लड़खड़ा कर गिर पड़ा.

तीन दिन गुज़र गए और उसका बुखार न उतरा. चौथे रोज़ वह बेहोश हो गया और उसके ठीक सातवें दिन वह चारपाई के ऊपर बेहिसच-हरकत पड़ा था.

नवाब मर गया! नवाब मर गया!

हर आदमी दूसरे से कहता था. दरअसल वह एक-दूसरे को यह ख़बर सुना रहे थे कि मुहल्ले की तफ़रीह का एक बहुत बड़ा ज़रिया ख़त्म हो गया है.

नूरां ख़ामोश थी. उसके सामने उसके बेटे को नहलाया गया, दफ़नाया गया. उसने न तो जुबान से एक लफ़्ज़ कहा और न आंख से आंसू तक बहाया.

मुहल्ले की औरतें मुंह जोड़-जोड़ कर कहती थीं, "हाय! कैसी ज़ालिम मां है, न रोती है, न बैन करती है."

नूरां बिल्कुल भी न रोई. मुहल्ले की औरतें अपने मरे हुए अज़ीज़ों को याद करके रोती रहीं.

चार मर्दों ने जनाज़ा कंधों पर उठाया और कब्रिस्तान की तरफ़ चलने लगे. जनाज़े के हमराह सिर्फ़ सात आदमी थे और उनमें चार जनाज़ा उठाने वाले भी शामिल थे. आंठवीं नूरां थी जो इस तरह चल रही थी जैसे ख़्वाब में क़दम उठा रही है.

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

जनाज़े के साथ जाने से उसे किसी ने भी नहीं रोका. दरअसल, उसकी तरफ़ किसी ने तवज्जोह ही नहीं दी थी. जनाज़ा गली से बाहर निकल आया.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अमजद अली ठेकेदार की हवेली में कोई तक़रीब थी. हवेली के बाहर दस-बारह आदमी कुर्सियों पर बैठे थे.

उन्होंने जो जनाज़े को आते देखा तो सबके सब एहतरामन खड़े हो गए. नूरां ने उन्हें खड़े होते हुए देखा और यकलख़्त उसके क़दम रुक गए.

उसने ज़ोर-ज़ोर से अपने सीने पर दोहत्तड़ मारा. और "हाय रे लोगों, मेरा ग्रेटमैन मर गया. हाय रे ग्रेटमैन मर गया--"

और यह अल्फ़ाज़ कहते हुए त्योरा कर ज़मीन पर गिर पड़ी.

अनुवाद : अज़ीज़ा बानो

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

रशीद अमजद
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समुंदर मुझे बुलाता है

पीर ने दुआ के लिए हाथ उठाए और बोला-- "ऐ ख़ुदा, मेरी वापसी के सफ़र को सांस लेते मंज़रों से क़रीब कर--"

उसने पूछा--"लौटकर कब आओगे ?"

पीर मुस्कराया--"तुम ज़िंदा रहने का हुनर जान गए हो. अब आने की क्या ज़रूरत है?"

उसने सर हिलाया-- "ये तो है, लेकिन फ़िर भी कभी-कभी याद तो आओगे ना?" पीर हंसा--"क्या मालूम मैं आऊं भी कि नहीं, दुनिया में बड़े रंग हैं, रंगीनियां है, और कान एक बार बंद हो जाएं तो आवाज़ें क़ैद हो जाती है." उसने कहा-- "छोड़ो इस बहस को आओ आख़िरी बार कैसिनो में चलते हैं--"

"आजकल तुम काफ़ी मालदार हो गए हो--" पीर ने सर हिलाया.

"नहीं मेरे पास कुछ भी नहीं है, बस ज़िंदा रहने की कोशिश कर रहा हूं--"

"थोड़ी-सी कोशिश और करें तो हम ये मकान ख़रीद सकते हैं--" बीवी ने चाय की प्याली उसके आगे खिसकाते हुए कहा. "हां अब्बू--ये घर तो बहुत अच्छा है--" बेटी ने हुंकारी भरी.

"लेकिन!"

"--लेकिन क्या, जिस जॉब में तुम हो वहां ऐसी बातों के लिए सिर्फ़ इशारे की ज़रूरत है."

"लेकिन मुझे ये इशारा करना ही तो नहीं आता--"

पीर हंसा--"मेरा तो ख़्याल है तुम अब ख़ासे ट्रेंड हो चुके हो; फ़िर डर किसका?"

वह कुछ क्षण सोचता रहा, फ़िर बोला-- "बाहर से तो कोई डर नहीं, बस ये कमबख़्त अंदर कोई गड़बड़ है, जब भी इशारा करता हूं तो अंदर कोई चीज़ तड़ख़ जाती है--"

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पीर सोच में पड़ गया--"इसका मतलब है, अभी तुम्हारे घबराने का अमल पूरा नहीं हुआ--तुम्हारी बीवी ने कोशिश तो बहुत की है--"

"हां" उसने सर हिलाया--"लेकिन इसकी कोशिश से कुछ नहीं हुआ-- मगर ये बच्चे इन्हें देखता हूं तो सोचता हूं, मेरे सच की सज़ा ये क्यों भुगतें--" पीर ने कुछ देर सोचा, फ़िर बोला- "नेकी का अमल लंबा होता है और सच नस्ल-दर-नस्ल चलता है-"

"शायद इसीलिए मिठास कड़वाहट में बदल जाती है-"

पीर ने उसे घूरा-- "तुम एक ऐसे सरकश घोड़े पर सवार हो, जिसकी बागें तुम्हारे हाथ में नहीं है."

उसने हां में सर हिलाया-- "जहां रुकना चाहता हूं वहां रुक नहीं सकता और जहां नहीं रुकना चाहता वहां रुकना पड़ता है-"

"बस यही तुहारी ट्रेजडी है. तुम वक़्त से भागने की कोशिश करते हो--"

उसने आंखें बंद कर लीं-- वह समय की दहलीज़ पर नमूदार हुई-- "मैं अब तुम्हारा इंतज़ार कर रही हूं--" वह दोनों बाजू फैलाकर उसकी ओर बढ़ा. लेकिन ठीक उसी लम्हे पीर ने उसका कंधा थपथपाया--"लो भई मैं तो चला--"

उसने पीर का हाथ पकड़ लिया-- "मैं इस मुसीबत से कब निकलूंगा, मेरी वापसी का हुक्म कब होगा--?"

पीर मुस्कराया-- "वापसी एक नशा है, एक आराम देने वाला नशा, तुम जब चाहो इसका मज़ा चख सकते हो" --उसने होटों पर ज़बान फेरी और बोला-- "मेरे मुंह में एक लिसलिसा-सा पानी है--" फ़िर उसने चाय का लंबा घूंट भरा-- "ये कड़वाहट जाए नहीं जाती."

बीबी ने शकरदान आगे बढ़ाया-- "चीनी तो डाली ही नहीं कड़वाहट कैसे जाएगी--"

उसने बेदिली से शकरदान पकड़ लिया और चीनी घोलते हुए बोला--

"बच्चे कहां हैं?"

"पड़ोस में गए हैं, गुड्डू का जन्म दिन है--"

"अच्छा--" वह चौंका, "तो बच्चों को कोई तोहफ़ा ले देना--ख़ाली हाथ गए हैं क्या--?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

"क्या लेकर जाते?"

"कमाल करती हो--" वह झुंझला गया-- "तुम्हें पता भी है गुड्डू के अब्बू स्टैबलिशमेंट में हैं, दस काम होते हैं उनसे और अभी तो मेरी सीनियरटी का मामला भी वहां फंसा हुआ है."

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पीर हंसते-हंसते दोहरा हो गया-- "तुम चलते तो ठीक रास्ते पर हो, लेकिन बीच में कहीं जो उछलने की कोशिश करते हो तो सारा मामला ख़राब हो जाता है--"

उसने बेबसी से कंधे हिलाए-- "मैं क्या करूं, ज़िंदा रहना चाहता हूं और वह मंज़र भी देखना चाहता हूं--"

पीर एकदम संजीदा हो गया-- "किसी एक तरफ़ हो जाओ, दो नावों में सवार होने से कहीं भी न पहुंच पाओगे--"

वह कुछ नहीं बोला. पीर ने पूछा--"क्या सोच रहे हो?"

"किसी चीज़ को पाना अलग बात है, लेकिन उसकी ख़्वाहिश तो की जा सकती है, है ना."

"लेकिन ख़्वाहिश करने का फ़ायदा क्या है?"

"जी तो जलेगा ना और इस आग में जलना कितना अच्छा लगता है--" और उसने देखा, दहकते अंगारों का एक फैला समुंदर है, जिस पर वह नंगे पैर चल रहा है-- एक जलन है, एक अजीब सी हालत है. जिसमें मिठास भी है और कड़वाहट भी और इस जलते सफ़र में कहीं बच्चों की किलकारी, कहीं बीवी की मुसकराहट, कहीं दोस्त की मोहब्बत भरी हरकत, छोटी-छोटी ठंडकें हैं-- लगातार जलते जाना और बीच में कभी-कभी एक नन्हीं-सी ठंडी गुदगुदाहट-- उसने आंखें बंद करके हाथ उठाए-- "मेरी रिहाई का हुक्म हो--" पीर ने दोनों हाथ फैलाए, कबूतर फड़फड़ा कर उड़े और एक लंबा चक्कर लगाकर सामने गुंबद पर बैठ गए.

उसने आंखें खोलीं और बोला-- "समुंदर में उतर कर भी देख लिया ये मिठास, ये कड़वाहटें वहां भी इसी तरह हैं, बस मंज़र ही बदलते हैं--" और उसे यूं लगा जैसे उससे दो क़दम के फ़ासले पर ठाटें मारता समुंदर उसकी बात सुनकर खिलखिला कर हंस पड़ा है.

अनुवाद : अली अहमद फ़ातमी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जुलूस

खान मोहम्मद लोहार के इब्न लोहार से सेंडो बनने में उसकी सोच और कोशिश से कहीं ज़्यादा उसके बाप शेर मोहम्मद जांबाज़ की लातों और घूसों का दख़ल था. दिन में कम-अज़-कम एक बार उसकी लातों-घूसों से ज़रूर ख़ातिर होती और यही ख़ातिर उसके बदन को मज़बूती और ताक़त देती. इधर शेर मोहम्मद जांबाज़ खुरीयों, हथौड़ियों, नाख़ूनतराश और कीलों से लदा-फंदा चर्मी थैला लेकर गाड़ी मुहल्ले में बैलों को खुरियां लगाने जाता. उधर नेक सीरत और मेहनती बेटा मुहल्ले के लड़कों को आवाज़ देकर कंचे खेलने लग जाता, ऐसे में जो उससे जीतने की कोशिश करता, वह उस लड़कों की पिटाई कर देता. कभी-कभार वह दो-दो, तीन-तीन लड़कों की पिटाई करके वर्जिश का शौक़ पूर कर लेता. उसके बाद उसका बाप आकर लातों-घूसों से उसी तरह उसकी ख़ातिर करता.

जब इस मार-पीट और जिस्म को बनाने का कोर्स पूरा हुआ तो शेर मोहम्मद जांबाज़ इस दुनिया से रुख़सत हो गया. ख़ान मोहम्मद सेंडो उसका जां नशीन हुआ. गाड़ी मुहल्ला उसके हिस्से में आया. जिससे बिल्कुल लगी हुई टकियाइयों की गली थी.

ख़ान मोहम्मद को बाप की ज़िंदगी में उस गली का रुख़ करने की जुर्रत न हुई. लेकिन अब वह आज़ाद था. उसने इस आज़ादी से फ़ायदा उठाते हुए एक दिन गली का रुख़ कर ही लिया. खुशबूदार-बदबूदार बदन, लिपे-पुते चेहरे, घुन लगी जवानियां और कटी हुई पतंगें नज़र के सामने आईं. उसका लिबास ख़ासा पुरकशिश था, धोती यों बांधे हुए था कि मोटी-मोटी गठीली पिंडलियां नज़र आ रही थीं. उस पर खद्दर का सलूका आस्तीनों से बेनियाज़ था. उसके बाजुओं की मछलियां, जो हथौड़े की तरह सख़्त थीं, साफ दिखाई दे रही थीं. ऐसा गबरू नौजवान तो पहली ही बार गली में आया था. जिस औरत

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

से आंखें चार कीं. उसी ने मुस्कराकर, नखरा दिखाकर हाथ के इशारे
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
से अपनी तरफ़ बुलाया. जब बिल्लोरी बुलबुल के पास से गुज़रा तो उसने खान मोहम्मद सेंडो के बाजू पर इस ज़ोर से पंखा मारा कि डंडी टूट गई.

"रे! तुझे क्या हुआ है, अपने में तो है?" वह नीम तुर्श होकर बोला.

"बड़ा ज़ोर है तुझमें," बिल्लोरी बुलबुल बोली.

"संभाल के जो रखा है."

"किसी मां के लिए संभाल के रखा है?"

वह औरत थी. औरत न होती तो ज़रूर बाएं हाथ का थप्पड़ रसीद करता, जिसे खाकर शायद ही कोई माई का लाल अपने पांवों पर खड़ा रह पाता. वह आगे बढ़ गया. बिल्लोरी बुलबुल मुस्कराई और बोली-

"अरे! ख़फ़ा हो गया, सुन तो!"

जब उसकी फूल बरसाने वाली मुस्कराहट बेकार गई तो वह लपकी और उसके बाजू से लटक गई. उसने बाजू झटक दिया. वह गिर पड़ी. वह आधी गली तय करने के बाद ठंडी खोई पर आकर खड़ा हो गया, जहां मांझा माश्की (भिश्ती) दूसरों के गुनाह धोने और गली की नालियों को गुनाहों की गंदगी से पाक करने के लिए पानी भर रहा था. खान मोहम्मद सेंडो को देखकर उसे ताज्जुब हुआ. लेकिन फ़िर उसने सोचा; 'एक दिन तो आदमी को यहां आना ही पड़ता है.'

"बैठ यार हमारे पास भी चार घड़ी." मांझे माश्की ने कहा.

वह बैठ गया. दोनों ओर बनी कोठरियों और चौबारों वाली यह गली जो अपने ही अंदर दबी-भिंची पड़ी थी, पूरे शहर के लिए ख़तरे की वजह थी. मांझा माश्की और खान मोहम्मद सेंडो एक थड़े पर बैठ गए. मोटी ताज सिगरेट के लिए परेशान थीं. कर्ज़ की रक़में इतनी बढ़ गई थीं कि अब कोई उसे सिगरेट देने के लिए तैयार न था. फ़ीरोंजा को कुछ ज़्यादा ही गर्मी लग रही थी. गरेबान खोले तेज़-तेज़ पंखा झल रही थी. फ़ीरोंजा की सामने वाली कोठरी में साज-सिंगार करके बैठी उसके ग्राहक तोड़ने की कोशिश में लगी रहती. तालेंआ का घर वाला उसके लाए हुए नए लांचे (तहमद) को बांध रहा था. ज़ेबू अपनी उखड़ी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हुई जवानी पर उदास सी बैठी थी. कभी उसके बदन में भी शोले नाचते थे, लेकिन अब तो बुझी हुई राख के सिवा कुछ भी न था.

ख़ान मोहम्मद सेंडो नज़रें फाड़ कर उसे देख रहा था और गली की बिखरी हुई टूटी-फूटी कहानियों को समेटने की कोशिश कर रहा था. तमन्ना जान घबराकर कोठरी से बाहर निकली. एक हरामज़ादा जाते-जाते उसके तकिए के नीचे से दस का नोट लेकर चंपत हो गया. उसने इतनी गालियां सुनाईं कि इन मरदूद की सात पुश्तों के लिए काफ़ी थीं. दारां और बुद्धा सिगरेट का धुंआ खान मोहम्मद सेंडों पर फेंकती हुई आगे निकल गईं.

'गश्तियां कहीं की!' बिल्लोरी बुलबुल ने दूर से कहा.

ख़ान मोहम्मद ने बिल्लोरी बुलबुल पर तवज्जोह दी. हल्की-हल्की, दबी-दबी मुस्कराहट उसके होंटों पर निकल आई थी. मांझे माश्की ने उस पर जज़्बो मस्ती की सी कैफियत तारी होते देखी तो बोला- "यह नागिन है नागिन, मेरे यार!" लेकिन मेरा यार तो किसी और ही दुनिया में पहुंच गया था. फ़िर जब उसने अपना आख़िरी हथियार आज़माने की गरज से खड़े होकर लंबी अंगड़ाई ली तो, वह होशो-हवास खो बैठा. उस अंगड़ाई की लंबाई-चौड़ाई में कायनात सिमट आई थी. वह गीत बनकर फिज़ा में तैरने लगी. अभी अंगड़ाई का नशा हिरन न हुआ था कि शहर लाहौर की एक नामवर शख़्सियत शराब के नशे में धुत्त गली में आन टपकी. उन साहब के लिए ये औरतें टपके के आम थीं. बिल्लोरी बुलबुल ने अंगड़ाइयां लेने के बाद आराम महसूस किया और सुलगाने के लिए सिगरेट होंटों में रखा ही था कि जीजे जांगली ने दो अंगुलियों से खींचकर अपने होंटों में रख लिया.

"अड़िया! मज़ाक के लिए मैं ही रह गई थी. उस चौबारे वाली छम्मक छल्लो को भी कभी पूछ लिया कर."

इस पर जीजे जांगली की वो रग जाग गई जो सिर्फ़ शराब पीने पर जाग जाती थी. छम्मक छल्लो छज्जे में तख़्त पोश पर बड़े अंदाज़ में नीम दराज़ थी. उसने कहा, "नीचे आ गश्ती!"

और गश्ती बिना हीलोहुज्जत नीचे आ गई. उसके आते ही उसने ऐसा कुलादा भरा कि वह दुहरी हो गई और उसकी चीख निकल गई. जीजे जांगली ने कहकहा दागा. उस पर दो आतिशे का असर था. एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
माल्टा मिट के अड्डे का और दूसरा अपने हौदे का. उसे छम्मक छल्लो को यों झंझोड़ा-भंभोड़ा जैसे चूहे-बिल्ली का खेल हो रहा हो. छम्मक छल्लो चीखती चिल्लाती रही, वह उसे तोड़ता-मरोड़ता रहा. तमाशाइयों की भीड़ लग गई. लेकिन किसी ने जीजे जांगली को न टोका. कुएं के क़रीब की कोठरी से एक टकयाई बोली- "तौबा! कितना ज़ालिम है. इतने लोग जमा हैं और कोई बेचारी को बचाता नहीं."

खान मोहम्मद सेंडो ने यह आवाज़ सुनी और झुरझुरी सी ली.

फ़िर बिल्लोरी बुलबुल बोली, "बस कर, जीजे, बस कर! मर जाएगी!"

"चुप कर गश्तिए!"

अब तो खान मोहम्मद सेंडो की रग़े हिम्मत फड़की. वह चिल्लाकर बोला- "ठहर जा कंजरा!"

एकदम नई और गुस्सा दिलाने वाली आवाज़ सुनकर जीजे जांगली आपे से बाहर हो गया. आज तक उसे किसी ने यों न ललकारा था. उसने छम्मक छल्लो को एक तरफ़ फेंका. हस्ब मामूल जेब में से कड़कड़-चाकू निकाला और संभल कर खड़े होने की कोशिश करने लगा. हुजूम छंट गया और तमाशाई दूर-दूर हो गए. खान मोहम्मद सेंडो चर्मी थैले में से लंबे दस्ते वाली हथौड़ी निकाल कर उसकी तरफ़ आया. जीजे जांगली ने चाकू हवा में लहरा कर बुड़क मारी तो वदन का संतुलन बिगड़ गया और वह चकरा कर दीवार से जा लगा. खान मोहम्मद सेंडो ने बालों से पकड़कर उसे झटके दिए और ज़मीन पर पटका, फ़िर बालों से पकड़कर उसे उठाया, फ़िर ज़मीन पर पटका. आधी दर्जन बार यह अमल दोहराया तो जीजे जांगली का भुरकस निकल गया. उसके हाथ से चाकू लिया और बंद करके उसके आगे फेंक दिया. उसकी दिलेरी देखकर बिल्लोरी बुलबुल उसके साथ लगकर यों खड़ी हो गई जैसे वह उसकी ही हो.

"मां का यार! भेड़ों में आकर भेड़िया बनता है." खान मोहम्मद सेंडो ने नफ़रत भरे अंदाज़ में कहा.

जीजे जांगली बमुश्किल उठा और अपने दुश्मन से नज़रें मिलाए बग़ैर वहां से चला गया. उसकी हुकूमत का दस साला सुनहरा दौर

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़त्म हो गया था. सारी औरतें कोठरी से निकल कर गली में आ गईं. मुफ़्तख़ोर फ़िर जमा हो गए.

बिल्लोरी बुलबुल बोली-

"अड़िया, तुझे चिढ़ने की क्या ज़रूरत थी."

ख़ान मोहम्मद सेंडो ने इस बेकार जुम्ले का कोई जवाब न दिया. वहां से चला आया. उसके अंदर सख़्त हलचल मची थी. बुरी तरह मीठी-मीठी सुईयां सी चुभ रही थीं. यह चुभन या लज़्ज़त, यह बेक़रारी उसे बेचैन किए दे रही थी. जी चाहा कि वहीं बिल्लोरी बुलबुल के पास चला जाए. लेकिन सेंडो होते हुए भी हिम्मत न हुई. वह आप ही अपने आगे दीवार बन कर खड़ा हो गया था. हैरान था कि यह दो-टके की छोकरी किस तरह उसकी नज़र में आ गई और ज़िंदगी के तार हिलाने लगी. लंबा क़द, तावदार मुखड़ा, चमकदार आंखें, उन पर लंबी पलकों की झालर, रसीले होंठ, इतनी प्यारी सूरत और कांटा बनकर डस रही हो- 'गंदी मोरी को ईंट!' उसने घबरा कर कहा. लेकिन इससे तो चुभन और भी तेज़ हो गई. वह चारपाई पर लेट गया. लेकिन चोट इतनी गहरी थी कि लेटने से सुकून न हुआ. उसने आंखें बंद कर लीं. लेकिन ज़माने भर में बदनाम गली की औरत सामने मौजूद थी. उसने उठकर भट्ठी सुलगाई और लोहे की पुर्जियां आग में डालीं, लाल अंगारा हुई तो एक पतरी निकाल कर संदान पर रखी- लाल अंगारा पतरी में से उसे बिल्लोरी बुलबुल का गुलाब सा चेहरा नज़र आया. लोहा ठंडा हो गया. उसने दूसरी पतरी निकाली, हथौड़ी से चोट लगाई, लेकिन बात न बनी. तंग होकर, वह दुकान के थड़े आकर बैठ गया. चमकते-दमकते पेशावरी तांगे पर मुश्तरी बाई को उसका यार यों फख्र से लेकर निकला जैसे लड़ाई में जीत कर लाया हो. उसके भी दिल में आया कि इसी आन-बान और जीत के अंदाज़ में बिल्लोरी बुलबुल को लेकर निकले.

आज तो दरबारे सलाम के लिए जाने वाली डेरा दारनियां उसे अख़बार की स्याह सुर्खियों की तरह बड़ी और साफ दिखाई दीं. उसने सारी रात बिल्लोरी बुलबुल के साथ गुज़ार दी और इधर बिल्लोरी बुलबुल ने एक पल के लिए दरवाज़ा न भेड़ा. दो-सोच एक हो गई लेकिन जिस्म की दीवार बीच में खड़ी थी. उसका सेंडो होना ही उसके

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिए दीवार था [illegible] मालूम था कि सेंडो [illegible] नहीं होता.

अगले दिन फीला कोचवान- लाला भगवान की कंटरी (देसी शराब का अड्डा) में से निकला और चिल्लाकर कहने लगा, "घड़ी अज़मिश की आती है... ज़िंदाबाद...मुर्दाबाद!. फिर उसी वक़्त एक लीडर भी पैदा हो गया, जो लीडर कम खिलाड़ी ज़्यादा नज़र आ रहा था. उसने धुंआधार तक़रीर झाड़ दी और लोगों में ऐसा जोश-ओ-खरोश पैदा कर दिया कि वे उसके एक-एक लफ़्ज़ पर जान निछावर करने के लिए तैयार हो गए. वह चल पड़ा. अब लोग जुलूस की शक्ल में उसके पीछे चल पड़े. नारों का ठाठें मारता हुआ समंदर उमड़ आया और लोग अपने ही बरपा किए समंदर में फंस गए. जब ये लोग नारे लगाते हुए, लीडर की क़द्र बढ़ाते हुए आगे बढ़े तो खान मोहम्मद सेंडो भी उनके साथ हो लिया.

ये लोग चौक में पहुंचे तो लठ बंद पुलिस नमूदार हुई और सख़्त बेरहमी से लाठियां बरसाने लगी. लोग बुरी तरह ज़ख़्मी हुए और सर पर पैर रखकर भाग गए. लेकिन वह अपनी जगह से न हिला क्योंकि वह सेंडो था. पुलिस उसे पकड़ कर थाने ले गई और सार्जेंट स्मिथ के सामने पेश करके हवलवार नबी बख़्श ने कहा- "इसे मार खाने का बड़ा शौक़ है."

"क्यों?"

"और लोग तो एक-एक लाठी खाकर भाग गए. लेकिन यह डटा रहा."

"क्या नाम है तुम्हारा?" सार्जेंट स्मिथ ने उससे पूछा.

उसने दोनों हाथ आर-पार करके बाजुओं की मछलियों को परख कर कहा, "खान मोहम्मद सेंडो!"

हवलदार नबीबख़्श का बस चलता तो वह उसे सैंडविच बना देता. लेकिन सार्जेंट स्मिथ के सामने बेबस था. 38-साल का सार्जेंट स्मिथ बिना रुके उर्दू, पंजाबी और पश्तो रवानी से बोल लेता था.

सार्जेंट स्मिथ बोला- "वेल, सेंडो! तुम नेक हो, जवान हो, तुममें बड़ी जान है. इसे संभाल कर रखो और लीडरों के बहकाने में आकर पुलिस की लाठियों में जाया न करो. तुम इन लीडरों को नहीं जानते.

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये जेल चले जाते हैं और लोगों को मशीनगन के मुंह पर छोड़ जाते हैं. फ़िर लोग मर जाते हैं तो ये मगरमच्छ के आंसू बहाते हैं. ये लीडर तुमसे और बात करते हैं, हमसे और बात करते हैं. ये मुर्ग़-बिरयानी खाने वाले लीडर हैं. फर्स्ट क्लास में रहते हैं, तुम्हें थर्ड क्लास आदमी समझते हैं. सियासत इनकी हॉबी है, हॉबी. तुम्हें खेल-खेल में मरवा देंगे''

इस पर खान मोहम्मद सेंडो बोला- ''हम लीडरों को नहीं जानते, हम सच को जानते हैं, सच पर जान देते हैं. अगर लीडर झूठ बोलें तो हम झूठ को सच बना देंगे.''

सार्जेंट स्मिथ मुस्कराया, बोला- ''ठीक है, ठीक है. शाबाश, शाबाश! तुम बहादुर हो कभी मेरी बात पर सोचना.''

सार्जेंट स्मिथ का रवैया यों ही नरम न था. लोगों ने फ़िरंगियों की सख़्तियां झेल-झेलकर उन्हें आजिज़ कर दिया था. अब वह सख़्ती के साथ-साथ नरमी का हथियार भी बरतते थे.

साथ ही टकयाईयों की गली थी. बिल्लोरी बुलबुल तक ख़बर पहुंच गई. वह दौड़ती-दौड़ती आई. माथे पर पसीने के मोती चमक रहे थे, चेहरा तमतमा रहा था. वह थाने के लिए अजनबी न थी, थाना उसके लिए अजनबी न था. गली की हर औरत को कभी-न-कभी यहां आना ही पड़ता और इसी तरह थाने के हर आदमी को ड्यूटी देने गली में जाना ही पड़ता.

वह बोली- ''जनाब जी! यह बहुत अच्छा है. इसने जीजे जांगली से गली साफ कर दी है. इसे छोड़ दें. यह बदमाशों का बैरी है.''

सार्जेंट स्मिथ बोला-

''वेल, लेडी! तुम इसे लीडरों से बचा सकती हो.''

''बचा सकती हूं! बचा सकती हूं!''

''अगर न बचाया तो कोई लीडर इसके ख़ून से अपनी दुकान चमका लेगा.''

''मैं नहीं चमकाने दूंगी!''

फ़िर सार्जेंट स्मिथ ने खान मोहम्मद सेंडो की तरफ़ देख कर कहा- ''वेल, मेन! तुम बहुत अच्छे हो!''

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और फ़िर हंसा, बोला- "तुम्हारी सिफ़ारिश करनेवाली भी बहुत अच्छी है."

बिल्लोरी बुलबुल उसे थाने से बाहर लाई और तांगे में बैठाकर डॉक्टर के पास ले गई. खान मोहम्मद सेंडो ज़ख़्मों से चूर था. जाते ही, चुपचाप बेंच पर लेट गया. और कोई होता तो चीख़-चीख़ कर आसमान सिर पर उठा लेता. डॉक्टर ने फ़ौरन उसे बेड पर लिटाया और मरहम-पट्टी करने लगा, इसके साथ-साथ बातें भी करने लगा. जैसे किसी राज़ पर से पर्दा हटा रहा हो, ऐसे बोला, "बिल्लोरी बुलबुल भी सियासी लीडरों की सरपरस्त है. उसने भी एक बार किसी बहुत बड़े लीडर को पनाह दी थी, जो पुलिस की गोली चलते ही भागकर गली में आया और उसके चौबारे पर चढ़ गया था. फ़िर बेचारी बिल्लोरी बुलबुल ने दौड़-धूप की और एक नेक दिल डेरादारनी से जाकर बुर्का मांग लाई. बुर्का डेरादारनी का, कपड़े अपने, जूती भी अपनी- यों पहनावा बदलकर लीडर को बाज़ार की तरफ़ रफ़ूचक्कर कर दिया. उसने तवर्रुक़ के तौर पर लीडर की उतरन सैंत कर रख ली. लेकिन उसका साज़ ओ सामान छः माह के बाद वापस मिला. फ़िर महीने में चार दिन के हिसाब से वह लीडर उसका शुक्रिया अदा करने, उसके एहसान का बदला चुकाने की गरज से उसके यहां आने लगा तो उसने न चाहते हुए भी उसके कपड़े वापस कर दिए. उसके बाद जब वह और ऊंचा लीडर बन गया और ख़ूब पैसा आ गया तो बड़े-बड़े कोठों पर जाने लगा." बिल्लोरी बुलबुल सिर हिलाती और डॉक्टर की ताईद करती रही. डॉक्टर जो अपने मरीज़ों के भीतरी और बाहरी हालात से पूरी तरह आगाह था, समझाने के अंदाज़ में बोला, "लीडर दो क़िस्म के होते हैं-असली और मिलावटी. लेकिन उसकी पहचान किसी-किसी को ही होती है. असली लीडर कोई-कोई होता है. मिलावटी लीडर हर कोई है, और यह जो हर कोई लीडर है, उसकी पसंद की दो जगह है- बाई जी का कोठा, जेल की कोठरी!"

"बिल्लोरी!" आख़िरी पट्टी को बल देते हुए उसने हंस कर कहा- "यह दोनों आराम की जगह हैं."

पट्टी बंध चुकी, बिल्लोरी बुलबुल खान मोहम्मद सेंडो को लेकर जाने लगी तो डॉक्टर ने आख़िरी मिसरा कहा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

“लीडर आसमान से नहीं आते.”

“सच्ची बात है,” बिल्लोरी ने ताईद में कहा. फ़िर बाहर खड़े हुए तांगे पर खान मोहम्मद ज़ख़्मी को बैठा कर ले गई.

खान मोहम्मद सेंडो की ज़िंदगी का यह पहला तर्जुबा था, जिसमें अक़्ल का दख़ल न था. यह जज़्बात का करिश्मा था, जिससे वह मुतमईन था. इस तजुर्बे से उसके जिस्म की टूट-फूट हो गई, लेकिन उसने परवाह न की. बदन में टीसें चल रही थीं और इसके साथ-साथ ज़ेहन में सार्जेंट स्मिथ और डॉक्टर की बातें.

बिल्लोरी बुलबुल ने तीन दिन सख़्त बेकली में गुज़ारे. खान मोहम्मद सेंडो को आराम आ गया. उस अल्लाह की बंदी ने आज तक दिल लगाकर, इतना परेशान रहकर किसी की ख़िदमत न की थी. जब वह तंदुरुस्त हुआ तो उसके भीतर का सेंडो जाग उठा. वह गरम-गरम, नरम-नरम गुदाज़ लम्हों को छोड़कर भाग गया. इस बीच गाड़ी मुहल्ले वाले उसके पुराने ग्राहक भी भाग गए थे. अलबत्ता प्यारे लाल की कंटरी वाले कोचवान अपने-अपने घोड़े से उसकी दुकान पर हाज़िर थे.

सरेशाम जब बिल्लोरी बुलबुल उसकी दुकान पर आई तो किसी क़त्ताला से कम न थी. चिट्टी-छलनी कमीज़ में उसके नरम और इत्र लगे बदन की चांदनी छन-छनकर बाहर आ रही थी. उसके बदन की लकीरों और गोलाईयों का कसाव ग़ैर मामूली था. पुर्जा-पुर्जा, बहुत एहतियात और सफ़ाई के साथ एसंबल किया गया था. दोनों एक दूसरे को देखते रहे, मुस्कराते रहे. उन्होंने कुल्फियां खाईं. हमीदे खीठे वाले की दुकान का पालूदा पिया. फ़िर जब उसने भट्ठी सुलगाई तो बिल्लोरी बुलबुल ने धौंकनी संभाल ली. वह चुप रहा. बिल्लोरी बोलती रही. डॉक्टर और सार्जेंट के ख़्यालात तफ़सील से बयान करती रही. सियासी लीडरों और सियासी मुहिम के ख़तरनाक पहलू और उससे होने वाले नुकसान को बयान किया. अपनी तान इस पर तोड़ी-

“मुझे अपने घर में डाल ले सेंडो. बड़ा आराम दूंगी.”

वह बेसाख़्ता हंसा.

“घर!” उसने कहकहा लगाया. “तू इसे घर कहती है? जिसमें लोहे और काठ कबाड़े के साथ एक चारपाई, दरी, तकिया, कंबल, चादर, कपड़े, घड़ा, कटोरा और अंगड़-खंगड़ के सिवा कुछ नहीं है.” अलबत्ता

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दीवार पर मदीना शरीफ़ और खाना काबा के दो-कते ज़रूर रौनक अफ़रोज़ थे, जिन पर चमेली के हार पड़े थे और जिन्हें वह हर रोज़ साफ किया करता था. सर्दियों में दुकाननुमा वर्कशॉप में अंदर सो जाता. गर्मियां बाहर थड़े पर सोकर गुज़ारता. बिल्लोरी बुलबुल इस वक़्त बड़े क़ातिलाना मूड में थी. ऐसी औरत का मुक़ाबला आसान न था. उसने संभल कर कहा-- "मौलवी जी से पूछकर बताऊंगा."

"वाह रे, वाह! मैं तुझसे पूछती हूं, तू मौलवी जी से पूछेगा. रोटी भी मौलवी जी से पूछकर खाता होगा."

वह जैसे कहीं और चला गया था. बिल्लोरी बुलबुल जल-भुनकर चली गई.

दो दिन यों ही गुज़र गए. बिल्लोरी बुलबुल उसके पास न आई. वह मौलवी जी के पास गया और छूटते ही बोला-

"गश्ती से निकाह हो सकता है मौलवी जी?"

"ज़रूर हो सकता है बरखुरदार! सवाब का काम है, अगर तुम किसी बुरी औरत को गुनाह के गढ़े से निकाल कर नेकी की राह पर ले जाओ तो तुम्हें सवाब मिलेगा."

सवाब की बात सुनते ही उसकी रगों में सनसनी दौड़ गई. सवाब के लिए उसने लाठियां खाई थीं और दर्द महसूस न किया था.

वह देर तक मौलवी साहब की बातें सुनता रहा. उन्होंने मियां बीवी के ताल्लुक़ात और एक दूसरे के हक़ के बारे में उसे बताया.

जब अहले मुहल्ला को पता चला कि मौलवी साहब ने गश्ती से निकाह को जायज़ क़रार दे दिया है तो उनमें ग़म ओ गुस्से की लहर दौड़ गई. दीना तनूरिया और लहूरिया मजमा लगाकर बकने लगे-"ऐसा ही सवाब होता है तो मौलवी जी आप ही क्यों सवाब नहीं लूटते?"

जब खान मोहम्मद सेंडो ने लोगों को इकट्ठे होकर टर्राते देखा तो वह लंबे दस्ते वाली हथौड़ी लेकर निकला और दूर से चीखकर बोला- "ठहरो! तुम्हारी मां का सिर. एक-एक का खोपड़ा खोल दूंगा- कुत्ती दे पुत्तरों! जिसने भी मौलवीजी के ख़िलाफ़ बात की, उसे फद्दर कर दूंगा."

उसकी आवाज़ थी कि बिजली की कड़क- सारा मेला तितर-बितर हो गया. बाज़ार सूना हो गया. लेकिन एक जुलूस-'ज़िंदाबाद', 'मुर्दाबाद' के नारे बुलंद करता आया. आज़ादी की मुहिम का एक बहुत बड़ा

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

लीडर शहर में आया है. लोग स्टेशन पर उसका इस्तक़बाल करने के लिए जा रहे थे. आज़ादी के नारों में कुछ ऐसी कशिश थी कि खान मोहम्मद सेंडो सब कुछ भूल गया. वह जुलूस के रेले में शामिल हो गया. दीना, लहूरिया और कितने दूसरे लोग भी आ मिले. वह जुलूस पूरे जोश ओ खरोश से मंज़िल की तरफ़ रंवा था.

खान मोहम्मद सेंडो ने अपनी दुकान भी बंद न की. वह जुलूस के साथ ऐसा गया कि फ़िर कभी लौटकर न आया.

अनुवाद : प्रमोद पांडे

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

रशीद अमजद

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपरान्ह का पतझड़

उसने लंबी सांस ली और कहने लगा- "मैं ज़िंदा रहना चाहता हूं."

ब के होंटों पर एक अजीब रहस्यमयी मुस्कान ने आंख खोली- "ज़िंदगी एक सतरंगा कबूतर, इसके सारे रंग किसने देखे."

उसने चुटकियों से चांदनी को पकड़ने की कोशिश की, बहती चांदनी उसकी उंगलियों से फिसल कर इधर-उधर निकल गई.

"एक ख़्वाब- मात्र एक ख़्वाब."

ब ने हुंकार भरी- "ख़्वाब मगर अकेले का नहीं."

वह तेज़ी से मुड़ा- "दूसरा कौन?"

ब मुस्कराया- "वही जिसे दिखाने के लिए हम सब कुछ करते हैं."

वह मुस्कराई- "तुम बाहर क्यों नहीं निकलते?"

"बाहर नहीं तो कहां हूं?"

वह खिलखिलाकर हंसी-"बाहर आने के इंतज़ार में."

"और इंतज़ार एक कड़वा फल है." ब ने उसके कंधे पर खड़े होते हुए घोषणा की और दीवार के दूसरी तरफ़ कूद गया.

चांद गहरी-गहरी सांस ले रहा था और अंधेरे में पांव के नीचे चरमरा रहा था. वह थोड़ी देर पहले तोड़े गए फूल को पत्ती-पत्ती करने लगा.

वह पत्तियों पर पांव रखती हुई आई- "हाय"

"एक घंटा तीन मिनट लेट."

उसने लापरवाही से कंधे झटके और बोली- "शॉपिंग के लिए निकल गई थी."

उसके चेहरे पर बहुत से रंग आंख-मिचौली खेलने लगे- "मैं."

"मुझे मालूम था, तुम इंतज़ार कर रहे होगे." वह हंसी- "तुम और कर ही क्या सकते हो."

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

"तुम मेरी तौहीन कर रही हो."

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मैं सिर्फ़ देर से आने की वजह बता रही हूं."

"वजह-खुद को सुरक्षित रखने की एक ढाल- हुंह."

उसके क़रीब बैठ गई और नर्मी से बोली- "तुम शब्दों से खेलते हो."

"शब्द तो टूटी हुई कमानें है"- ब ने धीरे से उसका कंधा दबाया- "और हम तो सिर्फ़ तामील करते हैं."

अंधेरे में उसके बाप की आंखें घात लगाकर हमला करती हैं-"जो मैं कहता हूं वह करो."

वह सहम कर मां की ओर देखता है.

मां की आंखों में भय ने घोंसले बनाए हुए हैं, वह सर झुका लेती हैं.

वह अपने आप में सिमटने लगता है- सिमटता ही चला जाता है.

उसके सामने खड़ी आंखों में आंखें डाले देखती रही, शब्दों को चबा-चबा कर बोली- "बिना मांगे कभी कुछ नहीं मिलता."

उसकी आंखों में एक लहर सी उछली, लेकिन दूसरे ही क्षण डूब गई- "मेरे पास मांगें हैं, शब्द नहीं."

ब ने उसके सर पर स्नेहपूर्वक हाथ फेरा और बोला- "कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बिना मांगे ही मिल जाता है, मगर सामान्यतः ऐसा नहीं होता. तलब एक तेज़ रफ़्तार गाड़ी है, जो दौड़ती ही रहती है, कभी नहीं ठहरती."

उसने कंधे झटके- "लेकिन मैं दूसरों की तरह इस गाड़ी के पीछे नहीं दौड़ सकता."

ब मुस्कराया- "दौड़ तो तुम अब भी रहे हो."

"नहीं मैं बिल्कुल अलग हूं."

"हम अलग होते हुए भी दूसरों के अंदर ही होते हैं."

वह उछल कर खड़ा हो गया- "मैं किसी के अंदर नहीं. मैं अपना चेहरा खुद बनाना चाहता हूं."

ब देर तक हंसता रहा, फ़िर बोला "अपना चेहरा हम खुद तो बना सकते हैं, लेकिन उसकी पहचान दूसरे ही करते हैं. अपनी पहचान के लिए हमें दूसरों के पास जाना पड़ता है."

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"नंबर?" बूढ़े एकाउंटेंट ने ऐनक के धुंधले शीशों में से उसे घूरा.

"ई.टी.ई. 23704."

एकाउंटेंट ने पे रोल पर निशान लगाया और वेतन का टोकन उसकी ओर बढ़ा दिया. नोट गिनते हुए उसने आंखों ही आंखों में लेन-देन का जोड़-घटाव पूरे पृष्ठ पर कर लिया और दस-दस के दो नोट निकाल कर पैंट की पिछली जेब में रख लिए.

"तो आज तुम्हें तंख़्वाह मिली है."

"हां. और मैं बड़ी मुश्किल से बीस रुपए बचा सका हूं."

"तुम बेवकूफ़ी की हद तक स्पष्टवादी हो." वह आहिस्ता से बोली- "और यह अच्छी बात नहीं."

बैरा चाय ले आया. इस दौरान वह चुपचाप उसे देखता रहा. बैयरा चाय और कबाब रख कर चला गया तो वह बोला- "मुझमें बहुत सी बातें अच्छी नहीं."

"हां," उसने मुंह दूसरी ओर कर लिया- "तुम डैडी से न मिलना, उन्हें ऐसे लोग ज़रा भी अच्छे नहीं लगते."

केबिन की छत में बड़ा-सा सूराख़ हो गया और तेज़ जलता सूरज ठीक उसके सर पर नाचने लगा.

"अपनी पहचान कराओ," ब ने सिसकारी ली और क़रीब से गुज़रती हुई एक औरत को देखकर होंठों पर ज़बान फेरने लगा.

औरत कुछ दूर जाकर बस स्टॉप पर खड़ी हों गई और मुड़-मुड़ कर उनकी ओर देखने लगी.

ब ने चटखारा भरा और बोला- "बस औरत ने अपनी पहचान दो मिनटों में करा दी है और तुम दो साल से उससे मिल रहे हो मगर अभी तक यह भी नहीं जान सके कि वह तुम्हें समझती क्या है?"

"तुम मुझे क्या समझती हो?"

"मैं- मैं तुम्हें- बस अच्छा आदमी."

"सिर्फ़ अच्छा आदमी-" उसके चेहरे पर घने काले बादल छा गए.

"यहां मेरा मतलब है."

"क्या?"

"यही कि तुम अच्छे आदमी हो मगर-"

"मगर क्या?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

वह हंसी- “यह कि तुम ज़रूरत से ज़्यादा अच्छे हो और-”

“और ऐसे लोग तुम्हारे डैडी को पसंद नहीं.”

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

“हां,” उसने सर हिलाया.

“और तुम्हें?”

वह कुछ देर नाख़ून से नाख़ून खुरचती रही. फ़िर आहिस्ता, बहुत ही आहिस्ता से बोली- “मैं भी तो इसी दुनिया में रहती हूं.”

घनी स्याह रात सारे जंगल में फैल गई. गहरे घुप अंधेरे में वह सर से पांव तक भीग गया. बहुत देर बार वह जंगल से बाहर निकला- “वाक़ई तुम इसी दुनिया में रहती हो?”

ब चुपचाप उसे चाय पीते देखता रहा. उसने प्याली मेज़ पर रख दी और डूबी हुई आवाज़ में बोला-“उसके बाद हम चुपचाप उठे, ख़ामोशी से बाहर आए और कुछ कहे बिना अपने-अपने रास्तों पर हो लिए.”

ब अब भी चुप रहा.

“मैं क्या करूं?”

ब के होंठ उसके चेहरे में दफ़न हो गए.

“मैं क्या करूं?”

गहरी अलिफ़ ख़ामोशी.

उसने ब को कंधों से पकड़ कर झिंझोड़ डाला.

ब मिट्टी के खिलौने की तरह गिर कर ज़मीन पर बिखर गया.

सुनसान, वीरान सड़क पर धुंध चुपचाप क़दम-क़दम चल रही है. सलाखों वाली खिड़की के पीछे, पथराई हुई आंखों से दूर से किसी के आने की तमन्ना में वह देर से यूं ही खड़ा है.

नौकर आता है और कहता है- “बेगम साहिबा खाने की मेज़ पर आपका इंतज़ार कर रही हैं.”

“आ रहा हूं.” वह जाने ने पहले फ़िर वीरान सुनसान सड़क को देखता है- यह सड़क कितनी वीरान और उदास है.

उसे ख़्याल आता है कि दस साल पहले होटल वाली घटना के दूसरे दिन जब वह उसके डैडी से मिलने आया था तो यह सड़क-!

वह सलाखों में से बाहर झांकता है.

सुनसान वीरान सड़क पर धुंध अकेली ही क़दम-क़दम चल रही है.

अनुवाद : जावेद इक़बाल

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अज़ान

वह छोटा-सा कमरा क़ब्र की तरह था!

और अगर ईमानदारी से कहा जाए तो यक़ीनन क़ब्र इससे ज़्यादा आरामदेह और पुरसुकून होगी. क़ब्र में कम-से-कम कफ़न पहने हुए मुर्दे को दहशत, घुटन और हब्स का एहसास तो नहीं होता है. वह इत्मीनान से हमेशा-हमेशा की नींद का मज़ा लूटता है. मगर इस कमरे के आसेवी और ज़हरीले माहौल में अगर कोई अजनबी सांस लेने की कोशिश करता तो भी वह अपनी इस कोशिश में कामयाब न हो सकता और दम घुटकर मर जाता. वहां की ज़हरीली हवा और विष भरे माहौल में वही ज़िंदा रह सकता था, जो कार्बन डाई आक्साईड लेने का आदी होता. और इस वक़्त भी कुछ ऐसे लोग वहां मौजूद थे. गर्मी, हब्स और पसीने की ज़्यादती से उनकी हालत ख़राब हो रही थी, मगर इसके बावजूद उन्हें इसका एहसास न था.

गुलाम के मैले कपड़े पसीने की वजह से उसके आबनूस की लकड़ी जैसे काले जिस्म से जोंक की तरह लिपट गए थे. मैलाहट और गंदगी की वजह से हल्की बदबू की लहरें माहौल में बिखर रही थीं. मगर वहां किसको इतनी फुर्सत थी कि इस बदबू को महसूस करके नाक पर कुछ रख लेता. कसमसा कर पहलू बदलकर बुरा-सा मुंह बनाता. इसके बराबर बैठा हुआ अल्लारखा अपने बदबूदार रूमाल से यूं तो बार-बार चेहरे से पसीना पोंछ रहा था, मगर इसके बावजूद वह बेचैन और जंगली मालूम नहीं हो रहा था. सिर्फ़ एक बार उसने आहिस्ता से कहा था, "बड़ी काली गर्मी है रे."

और हमदू और अल्लादाद के चेहरे जज़्बात से ख़ाली थे. बेक़रारी के आसार से उनकी आंखें ख़ाली थीं. वह यों पुरसुकून दिखाई दे रहे थे जैसे इस समय वह एयर कंडीशंड कमरे में बैठे हुए हों.

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
खेल ज़ोरों पर था. सब उसमें डूबे हुए थे, न किसी को तन का होश था न दुनिया का. पत्ते फेंटे जा रहे थे. पत्ते बांटे जा रहे थे. चाल लग रही थीं. रक़म इधर से उधर जा रही थी और उधर से इधर आ रही थी. एक कोने में बैठा हुआ शर्फ़ू हास्य और चुभते हुए जुमलों के साथ आराम से नाल वसूल किए जा रहा था... खेल जारी था. कोई हार रहा था. कोई जीत रहा था.

और फ़िर एकाएक हमदू गर्जा.

"अबे ओ लौंडे! साले अभी तक नहीं बनी."

दूसरे कमरे से एक आवाज़ आई.

"हमदू चचा! अभी बनाकर लाया."

"जरा धाकड़ हो" इतना कहकर वह फ़िर खेल में डूब गया. कुछ लम्हों बाद एक दस साला लौंडा कोयटा की शुद्ध कच्ची चरस से भरी हुई सुल्फ़ी ले आया और झुककर बोला.

"बड़ी ज़ोरदार है."

"तू भी तो मेरी जान बड़ा ज़ोरदार है." शर्फ़ू नाल वसूल करते हुए उसको देखकर बोला और हल्के से घटिया अंदाज़ में दाईं आंख को कुछ इस तरह दबाया कि लौंडा शर्माकर रह गया.

सुल्फ़ी को देखकर बहुत-सी आंखें चमक उठीं. बहुत-से चेहरों पर ख़ून की लहरें रेंगने लगीं. हमदू ने अपने पत्ते उलटे कर दिए और सुलफ़ी को हाथ में लेकर बाएं हाथ की दो उंगलियों से उसके निचले भाग को कुछ पल तक सहलाता रहा. फ़िर सुलफ़ी मुंह में दबाकर दोनों हाथों की उंगलियां एक-दूसरे में फंसा दीं और इतना ज़ोरदार कश लगाया कि सुलफ़ी में अच्छी-ख़ासी आग की लहरें उठने लगीं और खुद उसकी आंखें हलकों से बाहर निकलती दिखाई देने लगीं. गर्दन की रगें तन गईं और चेहरा पीला हो गया--बहुत सारा धुंआ हौले-हौले किसी कुंवारी की अंगड़ाई बनता हुआ इधर-उधर बिखरने लगा. उसने सुलफ़ी बराबर वाले के हाथ में थमा दी और पत्ते उठा लिए. एक ही कश ने उसके दिमाग़ की बहुत-सी गिरहें खोल दी थीं. उसकी आंखों की रोशनी तेज़ हो गई थी और उसका दिमाग़ बिजली-सी तेज़ी से काम करने लगा था.

"अल्ला हो अंकबर. अल्ला हो अकबर."

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क़रीब की मस्जिद के अज़ान देने वाले की लुभावनी आवाज़ माहौल में गूंज उठी. मग़रिब हो चुकी थी, मगर धूप के ढलने के बावजूद अभी तक गर्मी की लहरें माहौल के सीने को जहन्नुम बनाए हुए थीं. कमरे में अंधेरा फैलने लगा था. हालांकि बाहर अभी तक स्याही की चादर नहीं फैली थी. शायद इसलिए कि कमरे में कोई खिड़की नहीं थी.

अज़ान की आवाज़ सुनते ही सबने पत्ते एक तरफ़ रख दिए. ख़ामोश हो गए-सुम्मुन बुकमुन... चुपचाप अल्लारखा ने क़रीब से गर्द से अटी हुई टोपी उठाकर इ़ज़्ज़त से सर पर रख ली और फ़िर उसके दोनों हाथ खुद-बखुद उठ गए. शायद वह जीतने की दुआएं कर रहा था. अल्लादाद ने हौले से एक ठंठी-सी सांस भरी और आहिस्ता से कहा,

"मालिक तेरा ही आसरा है."

अज़ान ख़त्म हुई तो गुलाम ने अपने मैले कपड़ों पर एक हाथ फेरा और नाखुश गवारी से अल्लादाद को देखते हुए बाला--

"ऐ बापू अपुन ने क्या कहा?"

"कुछ नहीं कहा?"

"अपुन तो दुआ मांगता पड़ा था. तू क्यों नाराज़ होता है बाई."

"चल-चल! अब चुप हो जा. बात नाईं बना. शर्फू ने उसके कंधे झिंझोर दिए--नाल वसूल होने में देर हो रही थी. इसलिए उससे ख़ाली न बैठा गया."

खेल फ़िर शुरू हो गया. बाज़ी लगने लगी. किसी ने मुस्कराकर अपनी जीती हुई रक़म को अपने सामने समेट लिया और किसी ने आरज़ू भरी नज़रों से जाने वाली रक़म को देखा. कोई जीत के एहसास से खुश होकर मामूली पत्तों पर बड़ी-बड़ी रकम लगाने लगा और कोई लगातार हारने से घबरा कर अच्छे पत्तों को पाकर भी संभल-संभल कर देखने लगा.

खेल के साथ-साथ सुलफ़ी भी गर्दिश कर रही थी. जैसे उसके बग़ैर खेल का मज़ा वैसे ही हो जैसे सालन के बग़ैर खाने का. भीनी-भीनी खुशबुओं की मौजें उठती गईं. दिमाग़ मस्त होते गए. एहसासात मदहोश होते गए.

"अल्ला हो अकबर. अल्ला हो अकबर!"

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

अज़ान की आवाज़ माहौल में फिर गूंजने लगी. सबने पत्ते एक तरफ़ रख दिए और एक-दूसरे का मुंह देखने लगे. जैसे फ़ैसला कर रहे हों कि अब उन्हें क्या करना चाहिए? किसी ने दोनों हाथ बांध लिए. किसी ने आदर से सर झुका लिया.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"खेलो-खेलो रे." हमदू ने तेज़ी से कहा.

"हूं?" गुलाम ने माथे पर बल डाल दिए.

"कोई बात नहीं! खेलो!" हमदू ने उसी अंदाज़ से कहा! "ये अपने मुहल्ले की मस्जिद की अज़ान नहीं है. खेलो-खेलो! गुनाह नहीं होगा. ये दूसरे मुहल्ले की मस्जिद की अज़ान है."

और खेल फिर शुरू हो गया!!

अनुवाद : फैज़ुल हसन

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ए. ख़य्याम

चीस्तान

छोटा-सा था मगर उसे उस घर में कभी तंगी का एहसास नहीं हुआ. वह जिधर भी देखता उसे बड़ा फैलाव महसूस होता, उसे इस घर से बड़ा टूट के प्यार था? वह अकसर दीवारों को टटोलता, फ़र्श की मिट्टी पर हाथ फेरता और घर के दरवाज़े पर खड़ा दूर-दूर तक आसमान में नज़रें गाड़े रखता. कहते हैं कि जिस इमारत की बुनियाद में ख़ून का बलिदान कर दिया जाए, वह इमारत बड़ी मज़बूत होती है. वह पुरखों के कंधे पर खड़ी दीवारों को थपथपाता और उनके मज़बूत होने का अंदाज़ा करता. इस छोटे-से घर के निर्माण में इसके पुरखों की कई नस्लों के ख़ून का बलिदान शामिल था. वह सोचता तो जज़्बात में डूबकर दीवारों को, फ़र्श को, दरवाज़ों को चूम-चूम कर रोने लगता.

अपने इस छोटे-से घर से इतने प्यार और अपने पुरखों से बेहद अक़ीदत के बावजूद एक बात उसकी समझ में कभी नहीं आई, कि इतने मज़बूत घर की कोई चारदीवारी न थी. वह अकसर इस गुत्थी को सुलझाने की कोशिश करता--कभी सोचता, मुमकिन है उसके पुरखों को घर में क़ैद होकर रहना पसंद न हो--या ये कि हाते मैं उन्हें घुटन का एहसास होता हो--या ये कि इस छोटे-से घर के फैलाव का राज़ हाते के न होने में छिपा हो--मगर ऐसे तमाम ख़्यालात के बावजूद इसके दिमाग़ में चारदीवारी न होने की चुभन उठती रहती--वह अपने जवाब से कभी संतुष्ट न हो सका.

यूं भी हुआ था कि उसकी बिरादरी के कुछ लोगों ने अपने घरों के इर्द-गिर्द चारदीवारियां खड़ी कर ली थीं और जब उसने आसमान में नज़रें गाड़ी थी और फ़िर अपने घरों की दीवारों को टटोला था तो उसे अपना घर सूखा टापू-सा मालूम होने लगा था. बग़ैर हाते वाला अपना घर भी उस फैलाव का एहसास न दिला सका, बल्कि एक अजीब-सी असुरक्षा का एहसास था, जिससे घर और ख़ानदान के सारे सदस्यों में

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

डर-सा बैठ गया था. ये इस [illegible] जो नहीं था, कोई-न-कोई Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu डरावनी और दिल हिला देने वाली ख़बर रोज़ का हिस्सा बन गई थी. उसके पास हर दिन कोई रोता-दहाड़ता अवश्य पहुंचता, कभी किसी के खो जाने की ख़बर, कभी किसी के क़त्ल होने की और इसी तरह की दिल हिला देने वाली ख़बरें. लगता था जंगल में आग लग गई है और दरिंदों ने बस्ती का रुख कर लिया है.

उसकी आदत थी कि बड़ी मुश्किलों पर ग़ौर करने के लिए वह परिवार के सारे सदस्यों से मशवरा करता. उसने यही किया लेकिन ख़्यालात इतने अलग-अलग थे कि किसी नतीजे पर वह पहुंच न सका.

उसके नज़दीक एक ही हल था कि घर के इर्द-गिर्द तक ऊंची चारदीवारी बना ली जाए ताकि कोई परिंदा उसमें घुस न सके और इंतज़ार किया जाए कि जंगल की आग ठंडी पड़ जाए और दरिंदे अपने-अपने बसेरों में वापस चले जाएं.

दूसरों का ख़्याल था कि इस तरह फैलाव का एहसास आता रहेगा और हम अनजाने में अपने पुर्खों की रूह को तक़लीफ़ पहुंचाने के ज़िम्मेदार हो जाएंगे. नए ख़ून की मांग कुछ और थी, दरिंदों से लड़-भिड़ कर इन्हें ख़त्म करने या खुद ख़त्म हो जाने को तैयार. उसने अपने बेटे की तरफ़ देखा--गुस्से से जिसका चेहरा लाल हो रहा था.

उस रोज़ बस इतना हुआ कि कुछ लोग फ़िक्र में डूबे रहे, कुछ अपने घरों में क़ैद रहे और कुछ जो दरिंदों से लड़-भिड़ कर इन्हें ख़त्म करने निकले थे, उनके घरों के दरवाज़े उनके इंतज़ार में खुले ही रहे.

दूसरे रोज़ उसने दरवाज़े पर पड़े अख़बार को उठाया और चाट डाला. नज़रें उठीं तो उसका बेटा गुस्से और सदमे में खड़ा हांप-सा रहा था. उसने बेटे को क़रीब बिठाया और समझाने के अंदाज़ में बोला--

"बेटे जंगल में आग लग गई है--"

उसका बेटा ख़ामोश रहा--

"बेटे, जंगल की आग ज़रूर बुझेगी--ऐसा ही होता आया है--"

उसका बेटा फ़िर चुप रहा--

"बेटे, दरिंदे अपने बसेरों में वापस चले जाएंगे--"

उसका बेटा ख़ामोशी से उठकर चला गया.

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उसने उठकर बाहर खुले में देखा--बड़ी धुंध थी. उसे चक्कर-सा आने लगा. अपना घर, सूखा टापू उसे हिलता हुआ महसूस हुआ.

शाम को उसका बेटा घर आया तो बहुत ख़ुश था--उसके हाथ में एक ज़ंजीर थी, जिससे किसी अच्छी नस्ल का एक कुत्ता ज़बान बाहर निकाले, बंधा, हांफ रहा था--

उसके बेटे के पास यही एक हल था कि घर की रखवाली के लिए एक कुत्ता पाल दिया जाए--

उसने बेटे की ओर सवालिया नज़रों से देखा--वह मुस्करा रहा था--"

"तुम्हें कुछ मालूम है, उसे सुधारने में कितना वक़्त लगेगा--?"

वह विजय मुस्कान में डूबा रहा-- "आपको मालूम नहीं, यह सधा हुआ है और इसे सुधारने की कोई आवश्यकता नहीं और आप देखेंगे, अब किसी घर में सेंध नहीं लगेगी, किसी घर में चोर नहीं घुसेगा, कोई दरिंदा हमला नहीं करेगा, किसी के खोने की ख़बर नहीं आएगी, कोई दरवाज़ा रात-रात भर नहीं खुला रहेगा-किसी चारदीवारी--किसी हाते की ज़रूरत नहीं, किसी को डरने की आवश्यकता नहीं--कोई ग़ैर महफ़ूज़ नहीं--"

वह अपने बेटे की जज़्बात से भरी बातें सुनता रहा और दिल ही दिल में दहलता रहा. इसके बेटे ने अपने इर्द-गिर्द जज़्बात की ऐसी दीवार खड़ी कर ली थी, जिसकी हर आवाज़ टकरा कर वापस आ जाती- अब इसे कोई नहीं समझा सकता-- अब वह कुछ भी नहीं समझ सकता. वह अपने बेटे को इस पले पलाए कुत्ते से घंटों राज़दारी की बातें करते देखता रहता. उसने देखा कि उसके बेटे के दोस्त-यार सब उस कुत्ते के पीछे थे-- कुत्ता दिन-रात दनदनाता फ़िरता-- ऐसा लगता कि दरिंदों को भी सांप सूंघ गया है. बहुत दिनों से किसी के खोने की कोई ख़बर नहीं आइ थी, कोई घर रात-रात भर किसी के इंतज़ार में खुला न रहा था, मगर एक बात थी, कुत्ते के भौंकने से दीवारोदर कांप जाते थे. रातों की नींद उसके भौंकने ने उड़ा दी थी.

कुत्ता जब आया था तो बच्चे भी उसकी गर्दन में हाथ डाल देते तो वह अपनी दुम हिलाने लग जाता था, हर एक से हिला-मिला, हर आवाज़ पर दुम हिलाने वाला कुत्ता--धीरे-धीरे ऐसा होने लगा कि वह

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ख़ानदान के किसी फ़र्द पर ही दांत दिखाने लगता और उसके बेटे को उस फ़र्द की मदद के लिए पहुंचना पड़ता.

वह रोज़ की तरह सुबह उठता, अख़बार पढ़ता और अपने रोज़मर्रा के कामों में मसरूफ़ हो जाता.

एक दिन सुबह उठकर दरवाज़ा खोला और अख़बार उठाने के लिए झुका तो कुत्ता बड़े ज़ोर से भौंका--वह चौंक कर पीछे हटा--उसे चुमकारता रहा, लेकिन वह लगातार भौंकता रहा--उसने बेटे को आवाज़ दी--

उसका बेटा हंसता हुआ दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा. कुत्ते को आवाज़ें देता रहा, लेकिन उसका भौंकना फ़िर भी कम न हुआ--अख़बार वैसे का वैसा ही पड़ा रहा.

उसके बेटे ने कुत्ते के आगे उबला हुआ मांस डाल दिया और जल्दी से अख़बार खींचकर दरवाज़ा बंद कर दिया. वह अख़बार में डूब जाने की कोशिश करने लगा और जल्दी-जल्दी चाय पीने लगा.

कोई भी कुत्ते के क़रीब जाने की हिम्मत न करता. वह बड़ी दरिंदगी से सब पर दांत निकोस देता. लोग उससे बच-बच कर दूर-दूर ही रास्ता बदलकर निकल जाते. वह अपना दरवाज़ा बंद रखता. इंतज़ार करता कि जब उसका बेटा आएगा तब ही दरवाज़ा खोलेगा क्योंकि कुत्ता उसके अलावा किसी के बस का न रहा था--एक दिन उसे बड़ी हैरत हुई कि जब उसका बेटा घर के पिछले दरवाज़े से दाख़िल होता नज़र आया. ऐसा कभी भी न हुआ था--उसने बेटे को अपने पास बुलाया जो बहुत ही शर्मिंदा और नज़रें झुकाए उसके पास आकर खड़ा हो गया.

"बेटा, आज तुम पिछले दरवाज़े से घर में क्यों आए?"

वह ख़ामोश रहा.

कई बार उसके यही सवाल दोहराने पर उसके बेटे ने नज़रें उठाई तो उसमें आंसू तैर रहे थे. बाप से आंखें चार हुई तो वह फूट-फूट कर रोने लगा-- फ़िर लड़खड़ाती हुई ज़बान में बोला--"वह--कुत्ता--मुझ पर भी"--वह अपनी बात पूरी न कर सका और सिसकता रहा.

"क्या-क्या कुत्ता तुम पर भी?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

“[illegible] पर भी,” [illegible] बैठा सिसकता रहा.

वह रात उसकी बड़ी बेचैनी में गुज़री, भयानक-भयानक सपने आते रहे.

सुबह उठा तो दरवाज़ा खोलकर अख़बार उठाने की भी हिम्मत अपने अंदर न पाई. बड़ी मुश्किलों से उसने दरवाज़ा खोला. अख़बार के लिए नज़रें दौड़ाई तो कुत्ता अख़बार पर बैठा ज़बान निकाले हांफ रहा था.

उसको बाहर की तरफ़ निकलता देखकर कुत्ता खड़ा हो गया और दांत निकोस कर भयानक आवाज़ें निकालने लगा. उसने दरवाज़ा बंद कर लिया. कई बार दरवाज़ा खोला और बंद किया, फ़िर एक बार मौक़ा देखकर अख़बार झपट लिया और जल्दी से दरवाज़ा बंद कर लिया.

उसने अख़बार अपने सामने फैला लिया और हैरत से उसकी आंखें फैलती ही चली गईं. उसके सामने जैसे कोरा क़ाग़ज फैला हुआ था--कुत्ता सारा अख़बार चाट गया था.

अनुवाद : डॉ. शाहिदा बानो

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे खाल खिंच जाने का डर है

एक जगह काफ़ी भीड़ थी. मैं रुक गया. भीड़ में खड़े रहना मेरी आदत है. मेरा ज़्यादातर वक़्त भीड़ के बीच रहने में बीतता है. इस आदत से मुझे फ़ायदा भी हुआ. मैं सोचता नहीं बल्कि यूं समझ लीजिए कि मुझे सोचने की फ़ुर्सत ही नहीं मिलती. वैसे भी सोचना बहुत बुरी आदत है. सोचने से नींद उड़ जाती है और फ़िर दिन में तारे दिखाई देने लगते हैं. कहा जाता है कि सोचना कुछ लोगों को बड़ा बुरा लगता है. इसलिए मैं सोचने की तक़लीफ़ नहीं करता. सोचने के बजाए भीड़ के बीच में रहने को अच्छा समझता हूं.

मैं आपको बता रहा था, एक जगह पर भीड़ देखकर मैं रुक गया. लोग बड़े चाव से मदारी के किसी करतब के बारे में तक़रीर सुन रहे थे. मैं क़द में मार खा गया हूं. ज़रा ठिगना हूं. मैंने फुदक-फुदककर कर भीड़ के बीच खड़े हुए मदारी को देखने की कोशिश की लेकिन मैं उसे न देख सका. उस दिन ज़िंदगी में पहली बार मुझे अपने ठिगने होने का दुःख हुआ. मेरे सामने एक लंबा आदमी खड़ा हुआ था. वह लंबा होने के बावजूद तगड़ा न था. मैंने लंबे आदमी की पीठ ठोंकी, उसने पलट कर कहा--"मुझे डिस्टर्ब न करो."

मैंने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "तुम लंबे हो, अल्लाह के नेक बंदे हो, खुदा के लिए मुझ ठिगने की मदद करो."

"माफ़ करो बाबा," उस आदमी ने बेज़ारी से कहा.

"मैं कोई भिखारी नहीं हूं"-- मैंने कहा--"तुम मेरी बात तो सुनो."

लंबे आदमी ने दोबारा पलट कर गुस्से से कहा, "मुझे पता है तुम्हारे बाल-बच्चे स्टेशन पर बैठे हैं. तुम्हारी जेब कट चुकी है और तुम्हें चीचा वतनी जाना है."

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"नहीं, नहीं यह बात नहीं." मैंने कहा--"मेरे बाल तो हैं, लेकिन बच्चे नहीं और मुझे चीचावतनी भी नहीं जाना."

"अबे तो चतीखाना के लिए चंदा चाहिए." लंबे आदमी ने गुस्से से कहा--"चले जाओ, डिस्टर्ब न करो."

"मैं तुम्हें डिस्टर्ब नहीं करना चाहता," मैंने कहा--"तुम मुझे बताओ कि वह आदमी तावीज़-गंडे बेच रहा है या चुनावी मंशूर बता रहा है."

लंबे आदमी ने बेज़ारी से कहा, "वह आदमी खालें बेच रहा है."

"कैसी खालें?" मैंने चौंककर पूछा.

"वह तरह-तरह के जानवरों की खालें बेच रहा है." उस आदमी ने मेरी तरफ़ पीठ करते हुए कहा.

"क्या?" मैं खुशी से उछल पड़ा. मैंने कहा, "मुझे इसी तरह के आदमियों की तलाश थी. लंबे आदमी ने पलट कर मेरी तरफ़ देखा और कहा,

"अबे, क्या वह तेरा मामा लगता है?"

"नहीं," मैंने कहा. "मैं इस आदमी से अपने लिए एक खाल ख़रीदना चाहता हूं."

"तो जाओ, भीड़ में घुसकर आगे निकल जाओ." लंबे आदमी ने कहा--"अपने लिए चूहे की खाल ख़रीद लो, अच्छे लगोगे."

"देख बे लंबे!" मैंने अकड़ कर कहा--"तेरा-मेरा कोई मज़ाक का रिश्ता नहीं."

"मज़ाक और तुझसे," लंबे ने हंसते हुए कहा--"तू तो बज़ाते-खुद बहुत बड़ा मज़ाक है."

"कान खोलकर सुन ले नादान लंबे." मैंने कहा, "मैं ऊंट या शुतुर्मुर्ग़ की खाल पहनकर लंबा बन जाऊंगा और फ़िर तुझसे अपनी बेइज़्ज़ती का बदला लूंगा."

और फ़िर मैं झट से झुककर लोगों के पैरों से निकलकर भीड़ के बीच में मदारी के ठीक सामने जाकर खड़ा हो गया. उस समय वह एक ख़रगोश की खाल दिखा रहा था. वह कह रहा था, "ख़रगोश की खाल आमतौर पर लूमड़ लोग पसंद करते हैं. वह काम तो मक्कारी का करते हैं, लेकिन हमेशा ख़रगोश की तरह सीधे-सादे दिखाई देने की कोशिश

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

करते हैं. सब लोगों ने हैरत से ख़रगोश की खाल की तरफ़ देखा. खालें बेचने वाले आदमी ने कहा, ''इससे पहले कि मैं आपको कुछ और जानदरों की खालें दिखाऊं, मैं आपको बताना चाहता हूं कि आप किसी जानवर की खाल आख़िर क्यों ख़रीदें.''

''मैं जानता हूं, मैं जानता हूं.'' मैंने कहा--''मैं जानता हूं कि हम तरह-तरह के जानवरों की खालें क्यों ख़रीदते हैं और ख़रीद कर पहन लेते हैं.''

खालें बेचने वाले ने बड़े ध्यान से मेरी तरफ़ देखते हुए पूछा--''अबे तू भी खालें बेचता है क्या.''

''नहीं.'' मैंने इंकार में सर हिलाते हुए कहा.

उसने पूछा-- ''फ़िर तू किस तरह खालों के बारे में कुछ बता सकता है.''

''इसलिए कि मुझे अपनी खाल खिंच जाने का डर है--'' मैंने कहा. ''इससे पहले कि मेरी खाल खिंच जाए मैं किसी जानवर की खाल ख़रीद कर पहनना चाहता हूं. ताकि मेरी अपनी खाल बच जाए.''

''इस आदमी ने मेरे मुंह की बात छीन ली है--'' खालें बेचने वाले आदमी ने भीड़ को मुख़ातिब करते हुए कहा. ''कुछ लोगों के बदन पर खाल नहीं होती और वह बिना किसी डर के ज़िंदगी गुज़ार देते हैं लेकिन जिनके बदन पर खाल होती है, उन्हें हर वक़्त खाल खिंच जाने का डर बना रहता है.''

भीड़ में खड़े हुए एक आदमी ने कहा, ''मैं अपनी खाल बेचकर अपने ख़ानदान का पेट पालना चाहता हूं. क्या आप मेरी खाल ख़रीदेंगे.''

खालें बेचने वाले ने कहा, ''मेरे दोस्त दुनिया के हर जानवर की खाल बिक सकती है किंतु इंसान की खाल नहीं बिक सकती. उसकी खाल सिर्फ़ खिंच सकती है.''

वह आदमी नाउम्मीद होकर चुप हो गया.

खालें बेचने वाले आदमी ने एक खाल दिखाते हुए कहा, ''यह खाल एक कुत्ते की है.''

एक मुल्ला ने कहा, ''अमां कुत्ते की खाल भला कौन पहनेगा.''

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"कुत्ते की खाल वह आदमी पहनता है जो इस जहान में लोगों का वफ़ादार बनने की कोशिश करता है." खालें बेचने वाले ने कहा--"कुत्ते की वफ़ादारी पर कोई शक़ नहीं करता. फ़िर यह खाल तो एक बहुत ही नायाब कुत्ते की है."

"वह किस तरह से?" मैंने पूछा.

"वह इस तरह." उसने कुत्ते की खाल दिखाते हुए कहा--"इस खाल में एक ऐसी पूंछ लगी होती है जो बिना वजह से हिलती रहती है."

एक अधेड़ उम्र के आदमी ने कहा--"मेरी बीबी मुझे बेवफ़ा समझती है. कुत्ते की खाल पहनकर मैं उसके सामने दुम हिलाता रहूंगा और वह खुश होती रहेगी. इसलिए मैं कुत्ते की खाल ही ख़रीदूंगा."

खालें बेचने वाले ने एक और खाल दिखाते हुए कहा, "यह एक बकरे की खाल है. यह खाल आमतौर पर भेड़िए पसंद करते हैं."

"वह क्यों." मैंने पूछा. उसने कहा, "बकरे की खाल पहनकर भेड़िए बकरों के झुंड में घुस जाते है और फ़िर बकरे की मां ख़ैर नहीं मनाती."

मैंने उससे कहा, "भाई! लोग मुझे गीदड़ कहते हैं. मुझे एक ऐसी खाल की ज़रूरत है, जिसे पहनकर मैं निडर और बहादुर दिखाई देने लगूं."

"क्या तुम गैंडे की खाल पहनना पसंद करोगे," उसने पूछा.

"नहीं यार," मैंने कहा-"मैं गैंडे की खाल नहीं पहनूंगा. वह औरत जो मुझसे मुहब्बत करती है, मुझे गैंडे की खाल में देखकर मुझसे दूर भाग जाएगी."

"अच्छा तो तुम एक शेर की खाल ख़रीद लो--" खालें बेचने वाले ने कहा--"लोग तुम्हें गीदड़ नहीं कहेंगे."

मैं सोच में पड़ गया.

"क्या सोच रहे हो?" खाल बेचने वाले आदमी ने पूछा.

"मैंने कहा," सोच रहा हूं कि यह खाल किसी ऐसे शेर की तो नहीं जो सारी उम्र सर्कस में रिंग मास्टर के हंटर से डर कर करतब दिखाता रहा हो." खाल बेचने वाले आदमी ने ध्यान से मेरी तरफ़ देखते हुए कहा, "तुम एक बंदर की खाल ख़रीदकर पहन लो."

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

"यह क्यों ?" मैंने पूछा.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसने कहा, "पहले तो बंदर सोचता नहीं, और न सोचने वाले आदमी सबको अच्छे लगते हैं और दूसरे यह कि बंदर डुगडुगी पर नाच सकता है."

वह खाल मैंने ख़रीद ली.

अनुवाद : डॉ. फ़ख़रूल करीम सिद्धीकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फ़रीदा हफ़ीज़

रब न करे

मैं जब नंगे सर और नंगे पांव भागी तो एक ही धुन थी कि जल्दी से मां के लिए दवा ले आऊं ताकि उसे आराम आ जाए. दवा पीते ही उसकी खांसी बंद हो जाती थी. मगर इस बार खांसी इस शिद्दत से उठी थी कि मुझे सर-पैर का होश ही न रहा. मां की हालत देखकर मेरे बहन-भाई ख़ौफ़ज़दा होकर मां के गिर्द घेरा डाले बैठे थे. कोई भी न था, जिसे मैं मदद के लिए पुकारती. डाक्टर को बुलाने की हिम्मत नहीं थी कि यहां रोटी के लाले पड़े थे.

मैं जब डिस्पेंसरी पहुंची तो खिड़की में खड़े कंपाउंडर ने मेरी तरफ़ ध्यान ही न दिया. जब मैंने बार-बार उससे दवा का तक़ाज़ा किया तो उसने पहले मुझे घूर कर देखा, फिर डांट कर सर ढंकने को और लाइन में खड़े होने को कहा. लाइन बहुत लंबी थी और वह दवा देने के बजाय दूसरों के मामलात में ज़्यादा दख़लंदाज़ी कर रहा था. मैं घबराहट में बार-बार दुपट्टा सर पर डालती. वह बार-बार सर से ढुलक जाता और सब लोग मेरी तरफ़ ताकने लगते. मेरे पांव नंगे थे और पथरीली ज़मीन पर भागने की वजह से ज़ख़्मी हो गए थे. मगर मुझे इसकी परवाह नहीं थी. एक ही फ़िक्र थी, मां की. लंबी क़तार कम होने को ही न आती थी. लोग लाइन तोड़ कर आगे निकल जाते. मैं बार-बार ढुलकते दुपट्टे को संभालती रही और डिस्पेंसरी बंद हो गई. मैं नाकाम व नामुराद घर पहुंची तो मेरी मां मर चुकी थी और मेरे बहन-भाई उससे लिपट कर रो रहे थे.

जब ये लोग मेरे घर में दाख़िल हुए तो मैंने उनसे अपने बहन-भाइयों के लिए कुछ खाने को मांगा. वे रात से भूखे थे. मगर उन्होंने मेरी मदद करने के बजाय मुझे गिरफ़्तार कर लिया और यह कहकर यहां ले आए कि मैं अपनी मां की क़ातिल हूं. अब आप ही इंसाफ़ कीजिए, इसमें मेरा क्या क़सूर था. अगर मेरा सर नंगा था तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

क्या हुआ और अगर मेरा पेट ढंका हुआ था तो क्या अंदर से तो खाली था. मेरे बहन-भाई भी भूखे हैं, मेरी बहनों ने ख़ौफ़ से सर ढक लिए हैं. लेकिन उनके जिस्म और उनकी रूहें नंगी, भूखी और प्यासी हैं. मेरे साथ इंसाफ़ किया जाए, इन लोगों को ग़लत फ़हमी है. मुझे जाने दिया जाए. मेरी मां की लाश कब्र व कफ़न के बिना पड़ी है औ.. . वह कुछ और भी कहना चाहती थी मगर रुक गई. उसने एक बार फ़िर इंसाफ़ की अपील की और ख़ामोशी से एक तरफ़ खड़ी हो गई.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"लड़की, इंसाफ़ की बात मत कर. यह इंतहाई ख़ौफ़नाक लफ़्ज़ है. हमें इसके ख़्याल से ही ख़ौफ़ आता है. तुम्हें तो सज़ा मिलेगी, तुम नहीं जानतीं, हमारी हुकूमत में रहम की भीख मांगने वालों को सज़ा मिलती है."

वह लड़की ख़ौफ़-ज़दा हो गई और अपने सर से ढुलकता दुपट्टा दोनों हाथों से पकड़ लिया.

"अब दूसरे मुज़रिम को लाया जाए."

कारिंदे एक बूढ़े को कोड़े मारते हुए ले आए. वह बूढ़ा ज़ख़्मों से चूर था और दोनों हाथ जोड़कर रहम के लिए पुकारता था.

"इसका क्या क़सूर है?" मुंसिफ़ ने पूछा.

"यह बूढ़ा बीमार है और अस्पताल में नर्स से दवा मांग रहा था और नर्स ने तरस खाकर दवा दे दी."

"कहां है वह नर्स?" मुंसिफ़ की गरज़दार आवाज़ से सब सहम गए.

"यह रही."

"मुलज़िम को सामने लाया जाए."

"बोलो, तुमने तरस खाकर दवा दी?"

"नहीं जनाब मैंने बिल्कुल तरस नहीं खाया, इसने मेरे हाथ से दवा छीन ली. मैं जानती हूं, तरस खाना जुर्म है और बीमार होना बहुत बड़ा गुनाह. अस्पताल तो तफ़रीह और छुट्टी काटने के लिए बनाए गए हैं."

"क्या कहा तुमने बुड्ढे ने दवा छीन ली?" मुंसिफ़ ने बुलंद आवाज़ में कहकहा लगाया. इस कारनामे से बुड्ढे की सज़ा में कमी की जा सकती है. मगर ऐ बुड्ढे, यह तो बताओ तुम बीमार क्यों पड़े?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

"हुज़ूर मैं यह कैसे बता सकता हूं, मेरे अख़्तियार की बात नहीं. मैं बूढ़ा हूं, अब बीमारियां ही मुझे घेरे रहेंगी. यही तो जुर्म है."

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसने सर को फिर ढका और हैरत से इस अजीबोग़रीब अदालत को देखा. उसने तो सुना था कि अदालतों में मज़लूम के साथ इंसाफ़ किया जाता है. ज़ालिम अपने अंजाम को पहुंचता है, मगर यहां तो इंसाफ़ तलब करना ही जुर्म है. उसने रहम भरी नज़रों से बुड्ढे को देखा जो सज़ा के ख़ौफ़ से थर-थर कांप रहा था और ठीक से खड़ा भी नहीं हो सकता था. वह सहारा लेने के लिए दाएं-बाएं खड़े कारिंदों की तरफ़ झुक जाता, वह उसे एक झटके से फिर सीधा कर देते. वह बुड्ढा बुलंद आवाज़ में मुंसिफ़ से रहम की भीख मांग रहा था. अचानक उसकी आवाज़ एक और शोर में दब गई, कारिंदे एक नौजवान को घसीट कर ला रहे थे. वह नौजवान हाथ उठा-उठाकर कह रहा था, "मैं बेक़सूर हूं, मुझे अपनी बीबी से बिलकुल मोहब्बत नहीं थी. मुझे छोड़ दो, मुझे यहां क्यों ले आए हो." वह ग़म से निढाल मालूम होता था. वह बमुश्किल तमाम अपने आंसू ज़ब्त कर रहा था.

"ख़ामोश," मुंसिफ़ की गरज़दार आवाज़ के साथ ख़ामोशी छा गई.

"बताओ, उसका जुर्म क्या है?"

"हुज़ूर, यह शख़्स न सिर्फ़ अपनी बीबी से मोहब्बत करता था बल्कि इसका एतराफ़ भी खुले आम करता था. इसकी बीबी कल अचानक मर गई तो यह उसके सिरहाने बैठा आंसू बहा रहा था."

"नहीं हुज़ूर, देखिए मेरी आंखें एकदम ख़ुश्क हैं. मुझे अपनी बीबी से बिल्कुल मोहब्बत नहीं, मैं उससे नफ़रत करता था."

"जनाबे वाला आप मुलज़िम के गालों पर आंसुओं की लकीरों के निशान देख सकते हैं."

मुलज़िम ने घबरा कर अपने गालों पर हाथ रखे और मुस्कराने की नाकाम कोशिश करते हुए कहा, "जनाब यह तो ख़ुशी के आंसू थे."

"तुम्हें मालूम नहीं, हमारी राजधानी में मोहब्बत जुर्म है, मोहब्बत और वह भी बीबी और अपनों के साथ, इसकी सज़ा मौत है."

"हुज़ूर रहम कीजिए, आपके कारिंदों को ग़लतफ़हमी हुई. मैं तो बहुत ख़ुश हूं." उसने फिर मुस्कराने की नाकाम कोशिश की तो उसके आंसू निकल आए. नौजवान की हालत देखकर वह लड़की भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बेअख़्तियार रोने लगी. वह रोते-रोते बोली, "हुज़ूर इसकी जान बख़्श दें."

"मोहब्बत करना जुर्म तो नहीं," नौज़वान के दुख में वह अपना दुपट्टा भूल गई. दुपट्टा उसके क़दमों में गिर गया और उसने भागकर मुंसिफ़ के पांव पकड़ लिए. वह रो-रोकर कहने लगी, "हुज़ूर हम सब बेक़सूर हैं, वह बूढ़ा भी, मैं भी और यह नौजवान भी. हमने आज तक किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया, चोरी नहीं की, झूठ नहीं बोला. फ़िर हमें क्यों सज़ाएं दी जा रही हैं. हुज़ूर हम भूखे हैं, हमारे पेट खाली हैं."

"हट जाओ, इतने सारे जुर्मों का इक़रार तुम खुद कर रही हो."

"हुज़ूर इसके सर पर दुपट्टा भी नहीं है."

"हां, यह भी संगीन जुर्म है."

वह दौड़कर पीछे हट गई. ख़ौफ़ के मारे उससे दुपट्टा भी न उठाया गया. वह पीछे हटती गई.

"पकड़ लो इसको और फांसी दे दो. उसके टुकड़े कर दो, नंगा सर हमारे लिए वाअसे शर्म है."

ख़ौफ़नाक और वहशी चेहरों वाले कारिंदे उसकी तरफ़ बढ़े. वह खौफ़ से चीखी, "नहीं, नहीं मुझे कुछ न कहो. मैं सर नंगा नहीं करूंगी. कभी भी नहीं."

वे फ़िर भी न रुके, उसकी तरफ़ बढ़ते रहे.

"देखो-देखो, मेरा सर नंगा है तो क्या हुआ, मेरा पेट खाली है. देखो, ठहरो वहीं, मैं सर को ढक लेती हूं. मुझे कुछ न कहो; मेरे बहन भाई..." उसकी आवाज़ हलक़ में अटक गई. क़दम-क़दम क़रीब आते ख़ौफ़नाक चेहरे उसकी हर राह रोके खड़े थे. बचने की कोई सूरत न थी, उसने चारों तरफ़ देखा. फ़िर उसने जल्दी से अपना पांव तक छूता हुआ जिस्म का लिबास उलट कर सर पर डाल लिया.

अनुवाद : शकील सिद्दीकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गाय

एक रोज़ उन्होंने मिल कर फ़ैसला किया था कि अब गाय को बूचड़ खाने में दे ही दिया जाए.

''अब इसका धेला नहीं मिलता.''

उनमें से एक ने कहा था.

''इन मुट्ठी भर हड्डियों को कौन ख़रीदेगा.''

''लेकिन बाबा मुझे अब भी यक़ीन है. अगर इसका इलाज बाकाएदगी से...''

'तुम चुप रहो जी. बड़े आए अक़्ल वाले.'

निक्का चुप कर के एक तरफ़ हो गया और बाबा अपनी दाढ़ी में अक़्ल को कुरेदता हुआ उसके बड़ों के साथ सर जोड़कर बैठ गया था.

मैं जब ज़बान हिलाता हूं तो यह बूचड़ बन जाते हैं. जिस रोज़ से मैंने अपने को पहचाना है, उसी रोज़ से चितकबरी को भी जाना है और जिस रोज़ से यह लोग इसे बूचड़ खाने ले जाने की सोच रहे हैं, उसी दिन से मैं हर लम्हा यतीम होता जा रहा हूं. मैं क्या करूं? यह सब मुझ पर हंसते हैं कि मैं इसकी इतनी ख़िदमत क्यों करता हूं.

''आप इसे बूचड़ खाने के बजाए अस्पताल क्यों नहीं भेज देते.'' निक्के से नहीं रह जाता.

''तुम नहीं समझते, यह ठीक नहीं हो सकती. इसके इलाज पर पैसा ख़ामख़्वाह क्यों ख़र्च किया जाए. मैं नासमझ हूं... अभी कल ही तो मां ने धागे में पंद्रहवीं गिरह लगाई थी.''

''आप इलाज करा के देखें तो सही!''

''बड़ों की बातों में दख़ल न दिया करो.''

''मेरा जी चाहता है कि मैं आप सब को बूचड़ खाने दे आऊं.''

फ़िर सब ने मिलकर गाय की ज़ंजीर पकड़ी थी. लेकिन जैसे गाय को भी सब कुछ मालूम था. वह अपनी जगह से एक इंच नहीं हिली

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
थी. उन्होंने मार-मार के उसका भुरकस निकाल दिया. निक्का एक तरफ़ खड़ा पथराई हुई आंखों से सब कुछ देख रहा था. समझने की कोशिश कर रहा था.

"शाबाश मेरी चितकबरी, मेरी गाय, मेरी गऊ माता, हिलना नहीं, तुम नहीं जानती यह लोग तुम्हारे साथ क्या सलूक़ करने वाले हैं, जाना नहीं, हिलना नहीं वरना, वरना, नहीं तो..."

गाय अपनी जगह पर अड़ी, मुड़-मुड़ कर उसकी तरफ़ देखती रही थी. ज़रा हट कर गाय का बछड़ा खूंटे के साथ रस्सी से बंधा बेतआल्लुक़ बैठा था. हड्डियों पर लाठियों की बौछार उसे सुनाई नहीं देती थी. निक्के के कान भी बंद हो रहे थे, रफ़्ता, रफ़्ता.

सारे बुजुर्ग हांफते हुए फ़िर सर जोड़ कर बैठ गए थे. फ़िर फ़ैसला हुआ था कि अगर यह अब चल भी पड़ी तो मुमकिन है, रास्ते में खंभा हो जाए. इसलिए बेहतर यही है कि इसे ट्रक में डालकर ले जाया जाए. ट्रक में तो इसे उठा कर भी लादा जा सकता है.

अगले रोज़ ट्रक भी आ गया.

ट्रक की आवाज़ पर गाय ने मुड़ कर देखा था. आंखें झपकी थीं और फ़िर खोली में मुंह डाल दिया था. जहां निक्का चारा डालकर अभी-अभी ट्रक को देखने गया था.

"आप लोग इसे वाक़ई..."

उसे यक़ीन नहीं आया था.

"नहीं तो हम मजाक़ कर रहे हैं क्या?." एक ने कहा था.

"बाबा, यह गाय मुझे दे दो. मैं इसे..."

"हकीम की औलाद." दूसरे ने कहा था.

"बाबा इसके बग़ैर मैं..."

"मजनू का बच्चा." तीसरे ने कहा था.

चौथा-पांचवां, सारे बुजुर्ग साले एक से एक हैं और बाबा जो अपनी दाढ़ी को, अक़्ल का गढ़ समझता है, जाने इसे क्या हो गया है.

"बेटे ट्रक वाले को दस रुपए दे कर भी हम फ़ायदे में रहेंगे."

"ओ, कमबख़्त सौदागर मुझसे लो रुपए, मुझसे. यह लो लेकिन मेरी मुट्ठी में इस वक़्त तो हवा है. जब, जब मैं बड़ा हो जाऊंगा..."

हा, हा, हा, हा,

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"जब मैं कमाने लगूंगा."

हा, हा, हा, हा,

"तब तक तो चितकबरी की हड्डियों का सुरमा बन गया होगा. मैं-मैं क्या करूं."

इनमें से एक गाय को लाने के लिए खोली की तरफ़ गया था. निक्का भी उसके पीछे-पीछे हो लिया. यूं ही देखने के लिए. बड़े ने इसकी ज़ंजीर खोली थी. गाय ने खोली में मुंह मार के दांतों में पट्ठे दबाए थे, मुड़ के निक्के को देखा था और जाने के लिए खुर उठाया था.

"न, न, न." निक्का चीखा था.

"बको मत." गाय खड़ी हो गई थी.

"हे, हे, हे." बड़े ने ज़ोर लगाया था.

"न, चितकबरिए. न, न."

"चुप भी रहोगे या खींचूं ज़बान."

निक्के ने ज़बान को क़ैद कर दिया था. बड़े ने फ़िर ज़ंजीर को झटका दिया था.

"चलो मेमसाहब. ट्रक वाला तुम्हारे बाप का नौकर नहीं जो सारा दिन खड़ा रहे."

गाय की आंखें बाहर को निकल आई थीं. ज़बान क़ैद में फड़फड़ा कर रह गई थी. लेकिन वह हड्डियों का ढांचा मात्र वहीं का वहीं था. निक्का मुस्कराया. फ़िर फ़ौरन ही उदास हो गया था.

"यह तो बिक भी चुकी है. इसे जाना ही होगा. मुझे अब भी यक़ीन है कि अगर थोड़ी सी रक़म लगाकर इसका इलाज बाक़ाएदगी से किया जाए तो, तो... लेकिन मैं इन बुजुर्गों का क्या करूं. काश! मैं हकीम ही होता. इस बछड़े को शर्म नहीं आती, मां के जिस्म पर नील पड़ रहे हैं और यह बाहर खड़ा उल्लू के पट्ठों की तरह देखे जा रहा है."

ज़बान फड़फड़ा कर रह गई थी.

फ़िर इनमें से एक को बड़ी अच्छी सूझी थी. उसने गाय की दुम पकड़ कर इसे तीन-चार बल दिए थे. वह पीठ के दर्द से दूर भागी थी. इसने निक्के की तरफ़ देखकर क़हक़हा लगाया था. पीठ का दर्द

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

गाय को हांकता हुआ बिल्कुल ट्रक के पास ले आया था. निक्के का दिल बहुत ज़ोर से धड़का था.
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"डरफ़टे मूं, लानत लिख लानत."

ट्रक वाले ने गाय के चढ़ने के लिए ट्रक से ज़मीन पर तख़्ता लगा दिया था. गाय ने तख़्ते पर खुर रखा.

"न चढ़ना."

"इसकी ज़बान काट लो- यह गाय को बरग़लाता है, डराता है."

निक्का फ़िर मुंह बंद करके पीछे हट गया था. गाय ने पहले तख़्ते को देखा. फ़िर निक्के की तरफ़.

"डरफ़टे मूं, लानत लिख लानत."

निक्के का सर शर्म से झुक गया था.

"इसके अलावा मैं और क्या कर सकता हूं."

वह अभी तक नहीं डरी थी. फ़िर उसने मशकूक निगाहों से इधर-उधर देख कर बड़े ज़ोर से फुनकार मारी थी.

मेरी चितकबरी जानती है, जानती है कि वह तख़्ते पर क़दम रख कर ट्रक में चली जाएगी, लेकिन वह यह नहीं जानती कि क्यों-क्यों वह चढ़ना नहीं चाहती.

उन सबने मिलकर उसकी पीठ पर लाठियां बरसाई थीं, गाय की टांगे थिरकी थीं. लेकिन वह अपनी जगह से क़तई नहीं हिली थी. जब उन्होंने मिलकर दूसरा वार किया तो वह तक़लीफ़ से दूर भागने को थी कि बाबा की दाढ़ी में अक़्ल ने जोश मारा था और उसने जमा कर उसके मुंह पर लाठी मारी थी. गाय फ़िर तख़्ते की तरफ़ मुंह करके सीधी हो गई थी. बाबा ने हांफते हुए कहा था,

"आआ बेटू."

और सबने मिलकर फ़िर लाठियों का मेंह बरसा दिया था.

निक्का दूर खड़ा था. बिल्कुल बेतआल्लुक़ बेहिस.

"यूं बात नहीं बनेगी."

एक ने अपनी सांस पर क़ाबू पाते हुए कहा था.

"तो फ़िर?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह ट्रक के साथ [illegible] गाय को क्या सूझी थी. पलट कर एकदम भाग उठी थी और धूल उड़ाती हुई निक्के के क़रीब से बिल्कुल अजनबियों की तरह गुज़र गई थी.

निक्का, "ज़िस्म का मफ़लूज हिस्सा."

"देखो, देखो, वह तो बाईं तरफ़." एक चौंका था.

"कुदरती बात है."

बाबा ने अपनी दाढ़ी में उंगलियां फेरते हुए कहा था.

गाय अपने बछड़े को चाट रही थी. बाबा की आंखें मक्कार सी मुस्कराहट से चमक उठीं.

"इस बछड़े को यहां ले आओ- यह चाल तो हमें कल ही चल जानी चाहिए थी. ट्रक के पैसे भी बच जाते."

निक्का, "मफ़लूज वजूद."

उनमें से एक ने बछड़े की रस्सी पकड़ी थी. निक्के की ज़बान लरज़ी थी. गाय कुछ सोचती, क़दम उठाती, रुकती, चलती बछड़े के पीछे-पीछे इसके क़रीब से गुज़री थी तो आहिस्ता से निक्के की ज़बान से गाली फिसली थी. बछड़ा, तख़्ते पर चढ़ के पटौसियां मारता हुआ ट्रक में चला गया था. गाय तख़्ते के पास जाकर फ़िर रुकी थी. बड़ी हैरानी से बछड़े को देख कर आहिस्ता-आहिस्ता गर्दन मोड़ के निक्के को देखा था. एक ने फ़ौरन बग़ल से पट्ठों का गट्ठा निकाल के गाय के आगे कर दिया था. उसने चंद डंठल दांतों में ले लिए और फ़िर कुछ सोचकर ज़मीन पर गिरा दिए थे और अगला खुर तख़्ते पर रख दिया था, फ़िर दूसरा खुर.

ख़ुदा मालूम निक्के को क्या हो गया था. एकदम इसके सारे जिस्म में ताज़े गर्म-गर्म लहू का सैलाब आ गया था. उसके कान सुर्ख़ हो गए और दिमाग़ बेतरह बजने लगा था. वह भागा-भागा घर में गया और बाबा की दो नाली बंदूक उतार के उसमें कारतूस भरे थे. इस जुनून में भागता हुआ बाहर आ गया था और कांधे पर बंदूक रखकर निशाना बांधा था.

उसने खुली आंखों से देखा. बछड़ा ट्रक से बाहर गाय के गिराए हुए पट्ठों में मुंह मार रहा था. ट्रक में बंधी गाय बाहर मुंह निकाल कर बछड़े को देख रही थी. उनमें से एक गाय को ले जाने के लिए ट्रक में

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बैठा था और बाबा एक हाथ से अपनी दाढ़ी में अक़्ल को सहलाता हुआ बाहर खड़े ड्राइवर से हाथ मिला रहा था.

फ़िर मुझे पता नहीं क्या हुआ. निक्के ने किसे निशाना बनाया. गाय को, बछड़े को, ड्राइवर को, बाबा को, या वह अभी तक निशाना बांधे खड़ा है.

कोई वहां जा के देखे और आके मुझे बताए कि फ़िर क्या हुआ. मुझे तो सिर्फ़ इतना पता है कि एक रोज़ उन्होंने मिलकर फ़ैसला किया था कि--

अनुवाद : ज़ेबा अलवी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संवाद प्रकाशन

एक अभियान, एक आंदोलन

जैसाकि नाम से ही ज़ाहिर है हमारी मंशा संवाद की है- हिंदी भाषा-भाषी उस संवेदनशील वर्ग से जो अपने देश के इतिहास और भविष्य से सरोकार रखता है- ख़ासकर युवा पीढ़ी से. हमारा कोई बड़ा दावा नहीं, सिर्फ़ यह कि भारत का वर्तमान आज धूसर दिख रहा है, पर गहरे उतर कर पड़ताल की जाए तो पता चलेगा कि यह वृहत् नवजागरण की पूर्व-संध्या की धूमाभ बेला है, हमारा कार्य इसी आगत नवजागरण के सांस्कृतिक पहलू से जुड़ा है. हमारा उद्देश्य है विश्व भर के वैचारिक साहित्य तथा सृजनात्मक उपलब्धियों का हिंदी अनुवाद, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का इतिहास, संस्कृति, सिनेमा, राजनीति आदि पर विचारोत्तेजक एवं परिवर्तनकामी साहित्य का प्रकाशन.

संवाद हिंदी में एक नयी तरह की पुस्तक-संस्कृति के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध प्रकाशन है. पाठन-पाठन की एक ऐसी संस्कृति जो नवजागरण की पीठिका बने, एक ऐसी संस्कृति जो ज्ञान, संवदेना और परिर्वतन की वाहक हो. आप संवाद की किताबें खरीद कर हमारे इस कार्यभार को एक पुख्ता बुनियाद देंगे, उसे एक क़दम बढाएंगे.

पुस्तकें मंगाने के लिए कृपया *संवाद प्रकाशन* के पते पर अपना आदेश भेजें. किताबें मज़बूत पैकिंग में रजिस्टर्ड डाक या कूरियर से हम अपने खर्चे पर आप तक पहुंचाएंगे. किताबें मंगाने के लिए भुगतान बैंक ड्रॉफ्ट के जरिए करें. ड्रॉफ्ट 'संवाद प्रकाशन' के नाम इस पते पर भेजें :

संवाद प्रकाशन, आई- 499, शास्त्रीनगर, मेरठ- 250 004

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बीसवीं सदी की रचनायात्रा

विश्व साहित्य एवं दर्शन की श्रेष्ठतम पुस्तकें

विचार, दर्शन, आत्मकथा, जीवनी एवं उपन्यास

सिमोन द बोवुआर : स्वतंत्रता और प्रेम की राह (जीवनी)

द सेकेंड सेक्स की विश्वविख्यात लेखिका और नारी-मुक्ति से जुड़े अपने विचारों और सार्त्र के साथ अपने अनूठे और विवादास्पद संबंधों के लिए चर्चित, सिमोन द बोवुआर की अंतरंग जीवन-गाथा; और बीसवीं सदी के विश्वव्यापी साहित्यिक आंदोलनों के बीच उसके और सार्त्र के दोहरे संघर्ष का जीवंत और रोमांचक विवरण. फ्रेंच लेखिकाओं क्लोद फ्रांसिस और फेर्नांद गोंतिए की क़लम से. अनुवाद : युगांक धीर, रमेंद्रनाथ, पुनरीक्षण–संपादन : आलोक श्रीवास्तव पृष्ठ : 432, मूल्य : हार्डबाउंड : 410/ पेपरबैक : 150/

इज़ाडोरा की प्रेमकथा (आत्मकथा)

बीसवीं सदी की भोर की महान नर्तकी और एक अत्यंत विवादास्पद और उन्मुक्त स्त्री -इज़ाडोरा डंकन- की आत्मकथा 'माय लाइफ' का सर्वप्रथम हिंदी अनुवाद. एक ऐसी अनूठी स्त्री की शब्दयात्रा जिसने अपने समय से सौ साल आगे जीते हुए प्रेम व जीवन के अद्भुत प्रयोग किए. विश्व की श्रेष्ठतम आत्मकथाओं में एक, विश्व की सुंदरतम आत्मकथाओं में सर्वोपरि! अनुवाद : युगांक धीर पृष्ठ : 288 मूल्य : हार्डबाउंड : 350/ पेपरबैक : 110/

स्त्री और पराधीनता : प्रकृति, शक्ति और भूमिका से जुड़े प्रश्न

(नारीवादी विमर्श *सब्जेक्शन ऑफ विमेन* का अनुवाद)

उन्नीसवीं सदी के महान चिंतक-विचारक जॉन स्टुअर्ट मिल की यह पुस्तक स्त्री-पराधीनता और स्वाधीनता से जुड़े गूढ़ रहस्यों पर से बड़ी बेबाकी से पर्दा हटाती है. स्त्री-पुरुष की तुलनात्मक प्रकृतियों और मानसिक-भावात्मक क्षमताओं को लेकर कई चौंकाने वाले और विचारों को झकझोरने वाले तथ्यों से भरपूर एक अत्यंत बौद्धिक और अद्वितीय पुस्तक. हर प्रबुद्ध पाठक और हर जागरूक स्त्री के लिए अनिवार्य अध्ययन! अनुवाद : युगांक धीर पृष्ठ : 112 मूल्य : हार्ड : 150/ पेपरबैक : 80/

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपना कमरा

(विख्यात नारीवादी विमर्श *ए रूम ऑफ़ वंस ओन* का अनुवाद)

वर्जीनिया वुल्फ बीसवीं सदी के अंग्रेजी साहित्य की महान प्रतिभाओं में थीं. अपने लेखन में वे आजीवन स्त्री-प्रश्नों पर सोचती-जूझती रहीं, जिसमें *ए रूम ऑफ वंस ओन* (अपना कमरा) का विशिष्ट महत्त्व है. यह पुस्तक स्त्री-आंदोलन के अत्यंत महत्त्वपूर्ण पाठ के बतौर पहचानी गई. अपनी प्रखर शैली, तर्कशीलता, जीवंतता और रचनात्मक दृष्टि के चलते इस पुस्तक का महत्त्व सिर्फ़ नारी-आंदोलन के अलावा साहित्य संबंधी मान्यताओं के लिए भी पहचाना गया. अनु. : गोपाल प्रधान पृष्ठ : 128 मूल्य : हार्ड : 150/ पेपरबैक : 80/

पिकासो (जीवनी)

माइकलेंजेलो ने पुनर्जागरण काल की कला को सौंदर्य और भव्यता दी थी, पिकासो ने उसे आधुनिक काल में विचार दिया, ज़िंदगी और यथार्थ दिया. पिकासो के चित्र बीसवीं सदी की सभ्यता का सार और उस पर टिप्पणी दोनों ही हैं. जितना बड़ा फलक उनके चित्रों का था, उतना ही उनकी ज़िंदगी का भी. पिकासो की इस जीवनी में उसके युग, उसकी कला, विचार, मूल्यों का अत्यंत रोचक वृतांत. लेखिका : माधुरी पुरंदरे, अनुवाद : यदुनाथ चौबे पृष्ठ : 400; मूल्य : हार्डबाउंड– 350/पेपरबैक– 150/

अमृता शेरगिल

(जीवनी) कन्हैयालाल नंदन

अमृता शेरगिल बेहद ख़ूबसूरत और संवेदनशील थी. उसका सौंदर्य, व्यक्तित्व, और कला बीसवीं सदी का मिथक बन चुके हैं. भारतीय ज़िंदगी और भारत की आत्मा उसके चित्रों में अभिव्यक्त हुई थी. वह भारत की एक महान प्रतिभा थी. इस किताब में है उसकी युग-प्रवर्तक कला और ख़ूबसूरत ज़िंदगी की अंतरंग झलक. पृष्ठ : 100 मूल्य : हार्डबाउंड : 150/ पेपरबैक : 80/

प्रेमी और बेटे

(विश्वविख्यात उपन्यास *संस एंड लवर्स* का हिंदी अनुवाद)

संस एंड लवर्स डी. एच. लारेंस का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास इस माने में है कि उन्होंने इसमें स्त्री के मनोभावों, उसकी स्वप्न-कल्पनाओं, अनुभूतियों को सुंदर ढंग से अभिव्यक्त किया है. यौन-मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में लिखी गई यह ऐसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रचना है, जिसमें सौंदर्य के साथ मनोभावों को अच्छी तरह गुंफित कर दिया गया है. अनुवाद : गोपाल शर्मा पृष्ठ : 482; मूल्य : हार्डबाउंड- 380/पेपरबैक- 130/

कहानियों से गुज़रती बीसवीं सदी

बीसवीं सदी के महान कथाशिल्पियों- अल्बर्ट कामू, ज्यां पाल सार्त्र, डी. एच. लारेंस, विलियम फॉकनर, ग्राहम ग्रीन, अंर्स्ट हेमिंग्वे, स्टिफन ज़्विग, काफ्का, नजीब महफूज आदि की श्रेष्ठतम कहानियां, जिनमें बीसवीं सदी की दुनिया और उसके इंसानों के सुख-दुख समाए हैं. अनुवाद : अनुराधा महेंद्र

पृष्ठ : 192; मूल्य : हार्डबाउंड- 200/पेपरबैक- 80/

टेम्स में बहती गंगा की धार

(लेख-संग्रह) सत्येंद्र श्रीवास्तव

ब्रिटेन में बसे भारतीयों के जन-जीवन का ब्योरा इस पुस्तक में है. इसके अधिकांश लेखों में प्रवासी भारतीयों का संघर्ष दर्ज़ है. इससे भी आगे ब्रिटेन को, बल्कि 'पश्चिम को' कह लें, तो भी ठीक रहेगा, एक संवेदनशील भारतीय की आंख से देखा गया है. पृष्ठ : 256; मूल्य : हार्डबाउंड- 200/ पेपरबैक- 50/

कुछ चुनिंदा कविता-संग्रह

टूटे पंखों वाला समय (रिल्के की चुनी हुई कविताएं)

मानवीय अस्तित्व के प्रश्नों और सौंदर्य की गहरी अनुभूति से जनमी रिल्के की कविताएं बीसवीं सदी के विश्व काव्य की अमूल्य धरोहर हैं. उनके सशक्त काव्य से चयनित श्रेष्ट कविताएं. अनु. : इला कुमार पृष्ठ : 128; मूल्य : हार्ड- 150/पेपरबैक- 80/

जहां जहां क्षितिज है (नरेश मेहता की श्रेष्ट कविताएं)

प्रेम, प्रकृति व कोमल मानवीय भावनाओं से लेकर काल और सृष्टि के विराट रहस्यों तक फैली नरेशजी की कविता, हिंदी के आधुनिक काव्य का एक विशिष्ट व समृद्ध कोना है. इस संग्रह में हैं उनके समग्र काव्य से चयनित प्रतिनिधि-श्रेष्ठ कविताएं. चयन व भूमिका : आलोक श्रीवास्तव पृष्ठ : 192; मूल्य : हार्ड.- 150/पेपरबैक- 80/

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह जनता अमर है (कविता-संग्रह) विंदा करंदीकर

विंदा करंदीकर मराठी भाषा के शीर्षस्थ कवि हैं. उनकी कविता क्रांति के स्वप्न की कविता है, उसके आह्वान की, उसके अभिनंदन की कविता है. प्रस्तुत है उनके समग्र काव्य से एक चयन. अनुवादः चंद्रकांत बांदिवडेकर, धर्मवीर भारती, सोमदत्त, प्रभाकर माचवे आदि पृष्ठ : 192 मूल्य : हार्डबाउंड : 150/ पेपरबैक : 60/

इतनी रात गए (कविता-संग्रह) चंद्रभूषण

कुछ गहरी पीड़ाएं, कुछ ख्वाब, कुछ रोशनी यहां है. निजी को वृहत्तर परिप्रेक्ष्य देते ये शब्द एक ऐसी दुनिया गढ़ते हैं, जिसमें इतिहास की निराशाओं के बीच एक युद्ध आकार ले रहा है. पृष्ठ : 100 मूल्य : हार्डबाउंड : 130/ पेपरबैक : 50/

वेरा उन सपनों की कथा कहो!

(कविता-संग्रह) आलोक श्रीवास्तव

प्रेम की गहरी भावना और नारी मुक्ति की बुनियाद पर ये कविताएं रची गईं. सामूहिक इतिहास की पीड़ाओं, संघर्षों और स्वप्नों की एक अंतर्धारा सामान्य-सी लगती इन प्रेम-कविताओं के हर शब्द में प्रवहमान है.
पृष्ठ : 128; मूल्य : हार्डबाउंड– 150/ पेपरबैक– 50/

ओ, मेरे वसंत के वर्ष! (कविता-संग्रह) अलेक्सांद्र पूश्किन,

महान रूसी कवि अलेक्सांद्र पूश्किन की प्रेम कविताओं का अनूठा संग्रह! मूल रूसी से सीधे अनूदित ये कविताएं रूसी साहित्य की एक अप्रतिम निधि की हिंदी को भेंट हैं. अनुवाद : कुमार कौस्तुभ पृष्ठ : 100; मूल्य हार्डबाउंड– 150/पेपरबैक– 50/

कुछ कहता है यह समय (कविता-संग्रह) सत्येंद्र श्रीवास्तव

नई कविता के आरंभिक दिनों, जब नए साहित्य के अन्वेषी नई काव्य-भाषा, नए मूल्य-बोध और नए सौंदर्य-बोध की रचना कर रहे थे, की स्मृति इस संग्रह की कविताओं में मिलेगी. पृष्ठ : 160; मूल्य : हाडबाउंड– 150/पेपरबैक– 50/

बीतती सदी में (कविता-संग्रह) विस्साव शिंबोर्स्का

1996 की नोबेल पुरस्कार विजेता विस्साव शिंबोर्स्का की श्रेष्ठ कविताओं का हिंदी अनुवाद. अनु : विजय अहलूवालिया पृष्ठ : 128; मूल्य : हार्ड 150/पेपरबैक– 50/

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संवाद जनरुचि माला

- स्त्री-पुरुष तुलना (वैचारिक) : ताराबाई शिंदे पृष्ठ : 64
- वे वहां कैद हैं (उपन्यास) : प्रियंवद पृष्ठ : 144
- समकालीन पाकिस्तानी कहानी (कहानी-संग्रह) पृष्ठ : 128
- नारी मुक्ति की कहानियां अनु : इंद्रमणि उपाध्याय पृष्ठ : 112
- ओ हेनरी की श्रेष्ठ कहानियां अनुवाद : मीनू मंजरी पृष्ठ : 160
- अमर कथा (कहानी-संग्रह): हृदयेश पृष्ठ : 112
- रामप्रसाद बिस्मिल (आत्मकथा) पृष्ठ : 112
- समांतर जीवन (जीवनी) : सुनीता देशपांडे पृष्ठ : 100
- कैफी आजमी (शायरी) पृष्ठ : 112
- पाश (कविता-संचयन) *चयन* : चमनलाल पृष्ठ : 144
- प्रोमीथियस (नाटक) अनुवाद: वल्लभ सिद्धार्थ पृष्ठ : 64
- नोरा (डाल्स हाउस, नाटक) : इब्सन, अनु : मनीषा पृष्ठ : 128
- अशोक कुमार (सिनेमा) : अजातशत्रु पृष्ठ : 144
- राजकपूर (सिनेमा) : जयप्रकाश चौकसे पृष्ठ : 128
- गुरुदत्त (सिनेमा) : अरुण खोपकर पृष्ठ : 128
- ढाई आखर प्रेम के (विश्वविख्यात प्रेमपत्र) पृष्ठ : 128

उम्दा किताबें, अधिकतम छूट, विशेष उपहार...

'बीसवीं सदी की रचनायात्रा' श्रृंखला की सभी 19 किताबें तथा संवाद जनरुचि माला की सभी 16 किताबें यानी कुल 35 किताबों के पेपरबैक संस्करण का व्यक्तिगत पाठकों के लिए विशेष मूल्य मात्र **1285/.** साथ चार बेहतरीन उपहार पुस्तकें और *कथादेश* की एक वर्ष की निःशुल्क ग्राहकी भी.

हमारा पता : संवाद प्रकाशन, आई- 499 , शास्त्रीनगर, मेरठ- 250 004, उ. प्र.
ई मेल : **samvadindia@vsnl.net**

सभी पुस्तकें बेहतरीन मैपलिथो पर मुद्रित, कवर आयातित आर्टपेपर पर छपा, मैट फिनिश उम्दा लेमिनेशन. ऑटोमैटिक मशीन बाइंडिंग विद मशीन स्टिचिंग.

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-0

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरहद के पार

पाकिस्तान सिर्फ़ हमारा हमसाया मुल्क नहीं है, बल्कि इस उपमहाद्वीप की सहस्राब्दियों पुरानी संस्कृति का हिस्सा है. वहां रचा जा रहा साहित्य हमारे साहित्य से कितना अलग है -- और दोनों के बीच समानताएं क्या हैं? सरहद के उस पार यानी पाकिस्तान से आईं ये कहानियां अपनी आबोहवा, अपना दुख-दर्द और अपने ख्वाब और अपनी खुशियां भी साथ लेती आई हैं. हिंदी पाठकों को सरहद के उस पार की मानसिकता और वहां की ज़िंदगी और जद्दोजहद से परिचित करवाती कुछ चुनिंदा पाकिस्तानी कहानियों का अनूठा संग्रह.

संवाद प्रकाशन
C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr
30/-
संवाद जनरुचि माला